क्या मनुष्य सचमुच सर्वश्रेष्ठ प्राणी है ?

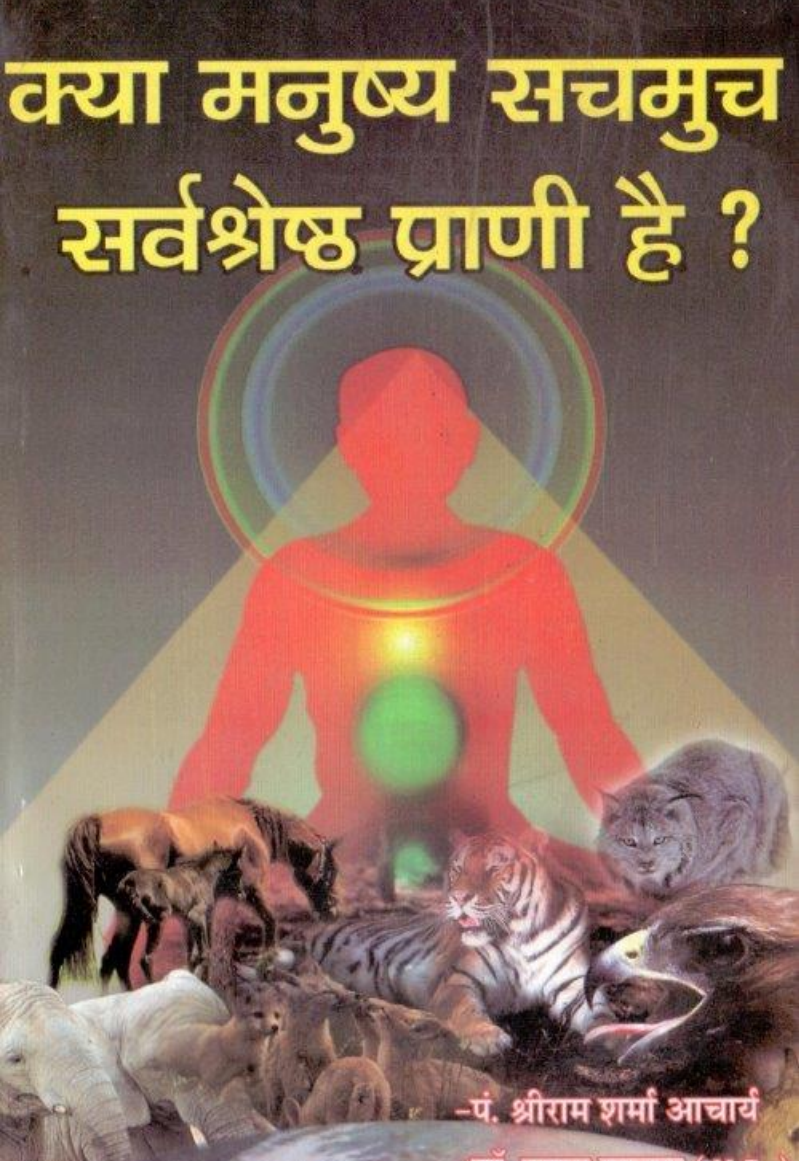

-पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

क्या मनुष्य सचमुच सर्वश्रेष्ठ प्राणी है ?

लेखक
श्रीराम शर्मा आचार्य
डॉ. प्रणव पंड्या (एम. डी.)

प्रकाशक :
युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट
गायत्री तपोभूमि, मथुरा
फोन : (०५६५) २५३०१२८, २५३०३९९
मो. ०९९२७०८६२८७, ०९९२७०८६२८९
फैक्स नं०- २५३०२००

पुनरावृत्ति सन् २०११ मूल्य : १८.०० रुपये

विषय-सूची

१. बुद्धिमत्ता मात्र मनुष्य की बपौती नहीं ३
२. प्रकृति के पाठशाला में कला-संकाय ३४
३. क्षुद्र प्राणियों का विशाल अंतःकरण ६५
४. मनुष्येतर प्राणियों में पाई जाने वाली अतींद्रिय क्षमताएँ ८३

मुद्रक

युग निर्माण योजना प्रेस,

गायत्री तपोभूमि, मथुरा

बुद्धिमत्ता मात्र मनुष्य की बपौती नहीं

वह क्षण निश्चित ही दुर्भाग्यपूर्ण रहा होगा, जब मनुष्य ने अपने आपको सर्वश्रेष्ठ होने का अहंकार पाल लिया। क्योंकि इस स्थिति में मनुष्य ने विश्व-वसुधा के, सृष्टि-परिवार के अन्यान्य प्राणियों को हीन और हेय मान लिया। सृष्टि का सर्वश्रेष्ठ प्राणी समझने की अहमन्यता मनुष्य में किसी भी कारण से विकसित हुई हो, लेकिन यह सत्य है कि उसने अपने इस पूर्वाग्रह से प्रेरित होकर निरीह प्राणियों का शोषण और मनचाहा उत्पीड़न किया। अपनी अहंमन्यता को उसने संसार के दूसरे प्राणियों पर जिस ढंग से थोपा उनकी प्रतिक्रिया-परिणति स्वयं उसके लिये ही उलटा सिद्ध हुआ है। जो दाँव उसने मनुष्येतर प्राणियों पर चलाया था, वह धीरे-धीरे उसके स्वभाव का अंग बन गया और अब वह यही प्रयोग अपनी जाति पर भी अपनाने लगा है। परिणाम यह हो रहा है कि मानवीय संवेदना धीरे-धीरे घटती जा रही है तथा वैयक्तिक सुख-स्वार्थ के लिए शोषण और अत्याचार बढ़ते जा रहे हैं। इस स्थिति को व्यक्ति-व्यक्ति के बीच परिवार-परिवार के बीच, जातियों, समुदायों और विभिन्न राष्ट्रों के बीच खींचतान के रुप में स्पष्ट देखा जा सकता है।

होना यह चाहिए था कि मनुष्य अपनी सर्वश्रेष्ठता की अहंमन्यता नहीं पालता और सभी प्राणियों को जिज्ञासा भरी दृष्टि से देखता। उनकी अनंत क्षमताओं से कुछ सीखने का प्रयत्न करता। कदाचित् ऐसा हुआ होता तो स्थिति कुछ और ही होती। वह अपने सहचर पशु पक्षियों को देखता, यह जानता कि प्रकृति ने उन्हें भी कितने लाड़-दुलार से सजाया संवारा है, तो उसका हृदय और भी विशाल बनता तथा चेतना का स्तर और ऊँचा उठता। इस स्थिति में प्रतीत होता कि अभागे कहे जाने वाले इन जीवों को भी प्रकृति से कम नहीं, मनुष्य की अपेक्षा कहीं अधिक ही उपहार मिले हैं। यही नहीं, अन्य कई क्षेत्रों में भी अन्य प्राणियों से पीछे है।

अंततः मनुष्य की सर्वश्रेष्ठता का आधार तो यही माना जा सकता है कि उसमें बुद्धि एवं विवेक का तत्त्व विशेष है। उसमें कर्तव्य परायणता, परोपकार, प्रेम, सहयोग, सहानुभूति, सहृदयता तथा संवेदनशीलता के गुण पाए जाते हैं। किंतु इस आधार पर वह सर्वश्रेष्ठ तभी माना जा सकता है जब सृष्टि के अन्य प्राणियों में इन गुणों का सर्वथा अभाव हो और मनुष्य इन गुणों को पूर्णरूप से क्रियात्मक रूप में प्रतिपादित करे। यदि इन गुणों का अस्तित्व अन्य प्राणियों में भी पाया जाता है और वे इसका प्रतिपादन भी करते हैं, तो फिर मनुष्य को सृष्टि के सर्वश्रेष्ठ प्राणी मानने के अहंकार का क्या अर्थ रह जाता है।

शेर, हाथी, गैंडा, चीता, बैल, भैंस, गिद्ध, शतुरमुर्ग, मगर, मत्स्य आदि न जाने ऐसे कितने थलचर, नभचर और जलचर जीव परमात्मा की इस सृष्टि में पाए जाते हैं, जो मनुष्य से सैकड़ों गुना अधिक शक्ति रखते हैं। मछली जल में जीवन भर तैर सकती है। पक्षी दिन-दिन भर आकाश में उड़ते रहते हैं। क्या मनुष्य इस विषय में उनकी तुलना कर सकता है ? परिश्रमशीलता के संदर्भ में हाथी, घोड़े, ऊँट, बैल, भैंसे आदि उपयोगी तथा घरेलू जानवर जितना परिश्रम करते और उपयोगी सिद्ध होते हैं, उतना शायद मनुष्य नहीं हो सकता। जबकि इन पशुओं तथा मनुष्य के जीवन में बड़ा अंतर होता है।

पशु-पक्षियों के समान स्वावलंबी तथा शिल्पी तो मनुष्य हो ही नहीं सकता। पशु-पक्षी अपने जीवन तथा जीवनोपयोगी सामग्री के लिए किसी पर निर्भर नहीं रहते। वे जंगलों, पर्वतों, गुफाओं तथा पानी में अपना आहार आप खोज लेते हैं। उन्हें न किसी पथ-प्रदर्शक की जरूरत रहती है और न किसी संकेतक की। पशु-पक्षी स्वयं एक दूसरे पर भी इस संबंध में निर्भर नहीं रहते। अपनी रक्षा तथा आरोग्यता के उपाय भी वे बिना किसी से पूछे ही कर लिया करते हैं। जीवन के किसी भी क्षेत्र में पशु-पक्षियों जैसा स्वावलंबन मनुष्यों में कहाँ पाया जाता है? यहाँ तो मनुष्य एक

दूसरे पर इतना निर्भर है कि यदि वे एक दूसरे की सहायता न करते रहें तो जीना ही कठिन हो जाए।

जन्म के समय मनुष्य पशु से अधिक बेहतर स्थिति में नहीं होता। पोषण एवं संरक्षण की तुरंत व्यवस्था न बने तो अधिक समय तक जीवित रहना मानव शिशु के लिए कठिन हो जाएगा। नौ मास के पूर्व तो वह अपने पैरों न तो चल सकता है और न ही अपने हाथों आहार ग्रहण कर पाता है। वह माता-पिता पर पूर्णतः आश्रित होता तथा उनकी ही कृपा पर जीवित रहता है। शरीर की दृष्टि से पशु अधिक समर्थ होते हैं। जन्म के कुछ ही घंटे बाद अपने आप आहार ढूँढ़ने लगते हैं। समर्थ, बुद्धिमान्, विचारवान् तो मनुष्य प्रशिक्षण-शिक्षण के आधार पर बनता है। उसका अवसर न मिले, ज्ञानार्जन के लिए समाज का संपर्क न प्राप्त हो, तो मनुष्य की स्थिति पशुओं से अधिक न होगी।

कार्य कुशलता तथा अद्‌भुत मेधा शक्ति का आधार वह शिक्षा है जो उसे विभिन्न रूपों में प्रत्यक्ष एवं परोक्ष माध्यमों से मिलती रहती है। मनुष्येतर विकसित जीवों को भी प्रशिक्षित किया जा सके तो वे अनेकों काम ऐसे कर सकते हैं, जिनके लिए आधुनिक टेक्नोलॉजी का प्रयोग अथवा मनुष्यों का उपयोग किया जाता है। प्रकृति ने मनुष्य जितनी तो नहीं, पर उन्हें भी काम चलाऊ बुद्धि दी है। जिसका प्रयोग वे अपने दैनंदिन कार्यों के लिए करते हैं। पर उनके सामान्य ढर्रे से अलग हटकर ऊँचे स्तर का काम भी लिया जा सकता है। श्रम के लिए परंपरागत रूप में कुछ पशुओं का उपयोग सदियों पूर्व से होता रहा है। उसमें कुछ नई कड़ियाँ दूसरे जीवों की भी जोड़ी जा सकती हैं। आवश्यकता इतनी भर है कि जीव-जंतुओं की सामर्थ्य को परखा तथा उनकी सांकेतिक भाषा को समझा जा सके तथा उसके आधार पर उनके शिक्षण की कुछ व्यवस्था बनाई जा सके।

बातचीत की कला में मनुष्य विशेष रूप से दक्ष है। यह उस भाषा का चमत्कार है जो मनुष्य को विरासत के रूप में अपने पूर्वजों से मिली है। बच्चे को भाषा का ज्ञान विशेष रूप से नहीं

कराना पड़ता। परिवार के लोगों के संपर्क से ही वह सीख लेता है। हिंदी भाषी परिवारों के बालक हिंदी, अंग्रेजी भाषी परिवारों के बालक अंग्रेजी तथा अन्य भाषी परिवारों के बालक पैतृक भाषा सहज ही सीख लेते हैं। बच्चे के माँ-बाप गूँगे तथा बहरे हों तथा उसे समाज का संपर्क न मिले, तो वह भी बोलना नहीं सीख सकेगा। देखा जाता है कि जो बच्चे सुन नहीं पाते, वे बोल भी नहीं सकते और अंततः वह गूँगे हो जाते हैं। भाषा की जानकारी उन तक नहीं पहुँच पाती। संकेतों के आधार पर ऐसे बालक किसी तरह अपना काम चलाते हैं।

मनुष्येतर जीवों के पास भी भाषा की कोई विरासत नहीं है, पर वे वार्तालाप गूँगे व्यक्तियों की तरह सांकेतिक आधारों पर करते हैं। विभिन्न प्रकार की सूचनाएँ देने के लिए अन्य जीव विभिन्न तरह की आवाजें करते हैं। चिड़ियाँ खतरे की सूचना देने के लिए एक तरह की तथा प्रसन्नता अभिव्यक्ति में दूसरी तरह की आवाज करती हैं। कुत्ते के भौंकने में वार्तालाप छिपा होता है, जिसका प्रत्युत्तर दूसरे कुत्ते उसी भाषा में देते हैं। बंदर अपनी इच्छा को ध्वनियों में एवं अभिव्यक्तियों में दर्शाते हैं।

वर्षों पूर्व नोमचौम्सकी नामक एक विद्वान् ने कहा था कि, बोलना अन्य जीवों के लिए प्रकृति ने संभव नहीं बनाया है, अब वह कथन गलत सिद्ध हो चुका है। मनोवैज्ञानिकों को अब दूसरे जीवों के संपर्क-प्रशिक्षण में आशातीत सफलता मिली है। पक्षियों, कबूतरों, चिंपांजी, बंदरों, तोता, मैना तथा कुत्ते को सांकेतिक भाषा सिखाने में विशेष रूप से सफलता मिली है। शिक्षण की बात प्रारंभ करने से पूर्व यह देखा जाए कि स्वयमेव उनमें वार्तालाप करने की क्षमता क्या है ? जिसकी हममें से बहुसंख्यक को जानकारी नहीं है।

वार्तालाप के अलग-अलग स्तर

यह सोचना गलत है कि मात्र मनुष्य ही वार्तालाप द्वारा संदेश संप्रेषण की क्षमता रखता है। पशु-पक्षी उससे भी आगे बढ़कर हैं। चिड़ियाँ तितलियों से बातें करती हैं, बाघ धारा प्रवाह बोलता है,

चिंपांजी मुस्कुराकर, टिड्डा अपने संगीत द्वारा तथा कीट पतंग अपने रंग के माध्यम से अभिव्यक्ति करते हैं।

मकड़ियों का जाला एक प्रकार से ब्लैक बोर्ड पर लिखा गया संपूर्ण प्रतिवेदन है, जिसे अन्य जीव-जंतु अपने हिसाब से डिकोड कर लेते हैं। अपनी रेशमी लिपि के माध्यम से मकड़ी अपना शिकार चुनती है एवं प्रणय हेतु साथी भी। इसके लिए वे अधिक समय नहीं लेतीं, मात्र ३० मिनट ही लेती है, वह भी ब्रह्म मुहूर्त में। वे चिंतन के द्वारा यह करती हैं। यह उन प्रयोगों से ज्ञात होता है जिनमें उन्हें नशीली दवाएं दी गईं व वे विचित्र प्रकार के बेढंगे जाले बुनती चली गईं।

टिड्डों की शब्द संपदा बारह शब्दों तक सीमित है। इसे वे बहुधा उपयोग न कर अवसर आने पर ही प्रयोग में लाते हैं। प्रणय काल के दौरान उनके संगीत में अलग-अलग नस्लों की सूक्ष्म पहचान देखी जा सकती है। ऐसा इसलिए कि एक नस्ल विशेष के नर टिड्डे के प्रणय संगीत पर कोई दूसरी मादा टिड्डा न आकर्षित हो सके। ये संगीत अपनी पिछली टांगों को पंखों पर रगड़ कर पैदा करते हैं। पंखों पर रगड़ से एक विशिष्ट स्वर लहरी जन्म लेती है, जो अन्य किसी कीट की या टिड्डे की नस्ल विशेष की नहीं होती।

संगीत में ऐंपलीट्यूड मॉड्यूलेटेड नाम से एक व्यवस्था होती है, जिसमें निश्चित आवृत्ति में निश्चित तरंगें निःसृत होती हैं। टिड्डे जिन्हें ग्रासहापर कहते हैं, अपना संगीत विभिन्न लय-ताल में इसी व्यवस्था से पैदा करते हैं। संगीत के क्षेत्र में कीटों में टिड्डों का कोई मुकाबला नहीं।

इसी प्रकार पक्षियों में चिड़ियों को यह सर्वोच्च पद प्राप्त है। कोयल की कूक, झींगुर की झन-झन, चिड़ियों की तान, एक ऐसा सशक्त संप्रेषण माध्यम है, जो पक्षी की नस्ल, प्रजनन योग्यता व काम विशृंखलता का द्योतक है। नर कोयल की कूक जहाँ मादा कोयल को बुलावा देती है, वहीं एक विशेष आवाज में चेतावनी भी।

भुनगे अपने काम की बात अपनी खास ध्वनि उत्पन्न कर लेते हैं। केंचुए हमें लगता है सदैव मौन रहते हैं, किंतु वे भी पतली फुसफुसाहट भरी आवाज से संपर्क बनाए रखते हैं। चींटियों के वार्तालाप का माध्यम है-गंधमय शब्द।

इसी प्रकार लगभग १०,००० कीट-पतंगों की जातियाँ संगीत के माध्यम से संवाद संप्रेषण क्षमता रखती हैं। मधुमक्खियों की बुदबुदाहट बताती है कि छत्ते से पराग का स्रोत कितना दूर है ? मछलियाँ छुरछुरा कर अपना संदेश एक दूसरे को देती हैं। वैज्ञानिक ए० मायर बर्ग ने हास मैकरील, डोरा, विद्युत् कैट फिश आदि पर अनुसंधान कर इनकी भाषा को ढूँढ़ निकाला है। बाकायदा इनके रिकॉर्ड बनाकर वे मछली विशेष के समूह को बुलाकर, समूह में एकत्र कर नृत्य हेतु विवश कर देते थे। वे शार्कों को बहला फुसला कर मनुष्य से दूर हटाने की भाषा भी खोज चुके हैं, ताकि उन विशाल मछलियों से जहाजों व मनुष्यों को बचाया जा सके।

पशु-पक्षी की भाषा की जानकारी के क्षेत्र में कार्ल हैंडबर्ग ने भी महारत हासिल की है। वे कहते हैं कि घोड़े अपनी भावाभिव्यक्ति हेतु विभिन्न ध्वनियाँ निकालते हैं। शेर घुरघुराने, कराहने से लेकर दहाड़ने तक अपनी भाषा का प्रयोग कर बच्चों व सजातियों तक अपना संदेश पहुँचा देता है। वैसे बाघों की शब्द सीमा सर्वाधिक है। बुलंद आवाज, घुड़की, प्रणय के दौरान आत्मीयता भरी पुकार, आत्मिक विश्वास से भरी दहाड़, गुस्से की प्रतीक गर्जना, सांभर की नकल 'बुलाकी', 'उसे शिकार हेतु पास बुलाना' ये सब आवाजें बाघ निकाल सकता है। पशु-पक्षियों को अधिक भाषा ज्ञान की जरूरत नहीं है। मनुष्य को प्राप्त इस विधा के विकास का एक प्रमुख कारण है।

आधुनिक संचार युग के कृत्रिम उपग्रहों, उच्च रेडियो तरंगों तथा दूसरे अतिविकसित यंत्रों के जरिये सारा विश्व एक संपर्क सूत्र में बंध गया है। आदमी ने संपर्क के कितने विविध तरीके खोज लिए हैं। उसकी अपनी अतिविकसित भाषा है, जो भूत,

वर्तमान, भविष्य, सभी का वर्णन कर सकती है। यही नहीं, मानव अमूर्त अवधारणाओं को भी शब्द देता है। जाहिर है भाषा ज्ञान का स्तर जानवरों में नहीं मिलता। लेकिन वे जीवन-मृत्यु से जुड़े अहम् मसलों की जानकारी दिलचस्प तरीकों से बनाए रखते हैं नृशास्त्रियों का कहना है कि आदमी ने तब भाषा का क, ख, ग सीखना शुरू किया, जब उसे अपने शिकारी जीवन में जानवरों की धरपकड़ और घेराबंदी के लिए तेज दौड़-धूप करनी पड़ती थी। अपने दल के हर सदस्य को भागते शिकार संबंधी जानकारियाँ देने के लिए की जाने वाली हुंकार और चिल्ल पों बाद में सशक्त संपर्क भाषा का स्वरूप लेती गई। एक दिशा मिल जाने पर मानव की भावनाएँ नित नए शब्दों का रूप ले व्यक्त होती गई। पशु-पक्षी संपर्क भाषा के उसी निचले स्तर पर ही कायम हैं, क्योंकि इससे अधिक उनके लिए आवश्यक भी नहीं है। फिर भी यह सुनिश्चित तथ्य है कि पशु-पक्षी जो मूक समझे जाते हैं, वे विलक्षण विभूति से संपन्न हैं। भले ही वह मनुष्य की तरह प्रत्यक्ष वार्तालाप न कर पाएँ।

जर्मनी के म्युनिख विश्वविद्यालय के प्राणिशास्त्र के प्रोफेसर डॉ० लारेंस ने हंसों पर गहन अध्ययन किया और पाया है कि उनमें विवाह आदि का सामाजिक स्वरूप होता है तथा स्नेह भरा दांपत्य जीवन होता है और साथी के मर जाने या बिछुड़ जाने पर वे मानवीय-विरह-व्यथा, संवेदनाएँ व्यक्त करते हैं।

हंस एवं अधिकांश अन्य प्राणी विभिन्न प्रकार की ध्वनियों के द्वारा अपने भावों की अभिव्यक्ति करते हैं। इतना ही नहीं, अपनी विभिन्न शारीरिक मुद्राओं के माध्यम से भी वे भावाभिव्यक्ति करते हैं। इसको वैज्ञानिक लोग रिलीजर मेकनिज्म कहते हैं। हंसों में लंबी गर्दन के कारण गर्दन को विभिन्न प्रकार से मरोड़ने की सैकड़ों मुद्राएँ पायी जाती हैं। जो कि उनकी भाषा के संकेत हैं। डॉ० लारेंस के इन नए अध्ययनों से विज्ञान की शाखा (ईथॉलॉजी) मानव व्यवहार विज्ञान को नए आयाम मिले हैं।

वे कहते हैं कि टूटी-फूटी जैसी भी उनकी भाषा है, इसके आधार पर वे अपनी जाति वालों के साथ तो विचार विनिमय कर

ही सकते हैं एवं इस भाषा को और अधिक विकसित किया जा सकता है। इस विकास के आधार पर मनुष्य के साथ अन्य प्राणियों के विचार विनिमय का द्वार भी खुल सकता है।

सर्वप्रथम वैटजेल नामक एक प्राणीप्रेमी ने सन् १८०१ में कुत्ते, बिल्ली तथा कई पक्षियों की भाषा का एक शब्द कोष बनाया था। फ्रांस निवासी दूयूपो नेमर्स ने कौओं की आवाज पर एक पुस्तक प्रकाशित की थी। योरोप के कई विश्वविद्यालय इस संबंध में अपना अनुसंधान कार्य कर रहे हैं, इनमें कैंब्रिज विश्वविद्यालय का एक शब्दकोष तो लगभग तैयार भी हो चला है।

'चिंपेंजी इंटेलीजेंस एंड इट्स वोकल एक्सप्रेशन' नामक पुस्तक में लेखक द्वय श्री ईयर्कस और श्रीमती लर्नेड ने चिंपेंजी बंदरों की लगभग ३० ध्वनियों का संग्रह और विश्लेषण करके एक प्रकार से उनका भाषा विज्ञान ही रच दिया है।

हरमन फ्रेबर्ग ने अपनी पुस्तक 'एडवेंचर्स ऑफ अफ्रीका' में ऐसे अनेकों संस्मरण लिखे हैं, जिनमें गोरिल्ला और मनुष्य के बीच बात-चीत, भावों का आदान-प्रदान और सहयोग-संघर्ष का विस्तृत परिचय मिलता है। साधारणतया जानवर अपनी ही जाति के लोगों से विचार विनिमय कर पाते हैं, पर यदि सिखाया जाए तो न केवल मनुष्य के साथ हिल-मिल सकते हैं, वरन् एक जाति का दूसरी जाति वाले अन्य जीवों के साथ भी व्यवहार-संपर्क और बढ़ाया जा सकता है।

जानवरों का भाषा कोष तैयार करने में कई संस्थाओं ने बहुत काम किया है, और कितने ही अन्वेषक निरत हैं। कैंब्रिज की 'दी एशियाटिक प्राइवेट एक्सपेडीशन' नामक संस्था ने इस संबंध में बहुत खोज की है। इस संस्था के शोधकर्ता विश्व भर में घूमे और विभिन्न पशुओं की आवाज रिकॉर्ड की हैं। मोटे तौर पर यह आवाज कम होती हैं, पर बारीकी से उनके भेद-प्रभेद करने पर वे इतनी अधिकाधिक जाती है कि उनके सहारे उन जीवों के दैनिक जीवन की पारस्परिक सहयोग के लिए आवश्यक बहुत-सी जरूरतें

पूरी हो सकें। पेरिस के प्रोफेसर चेरोंड और अमेरिका के डॉ० गार्नर ने अपनी जिंदगी का अधिकांश भाग इसी शोध कार्य में लगाया है।

बंदरों की भाव-भंगिमा उनकी मनःस्थिति को अच्छी तरह प्रकट करती है। जरा गंभीरता से उसके चेहरे पर दृष्टि जमाई जाए तो सहज ही पता चल जाएगा कि वह इस समय किस मूड में है। उसके डरने, प्रसन्न होने, क्रोध करने, थक जाने, दुःख व्यक्त करने, साथियों को बुलाने आदि के स्वर ही नहीं भाव भी होते हैं, जिन्हें आसानी से पहचाना जा सकता है।

चिंपेंजी बंदर तो हँस भी सकता है। बच्चों के वियोग में चिंपेंजी मादा रोती देखी गई है। नीचे वाला होठ आगे निकला हुआ देखकर-आँखों को ढके बैठी हुई मादा चिपेंजी को शोकग्रस्त समझा जा सकता है। इस स्थिति में उससे सहानुभूति प्रकट करने दूसरे साथी भी इकट्ठे हो जाते हैं और संवेदना प्रकट करते हैं।

गोरिल्ला अपने क्रोध की अच्छी अभिव्यक्ति कर सकता है। गिब्बन बंदर सबेरे ही उठकर शोर करते हैं, जिसका मतलब है कि यह क्षेत्र हमारा है। कोई दूसरे इस क्षेत्र में प्रवेश करने का प्रयत्न न करें।

अन्य प्राणियों को उपेक्षा के गर्त में पड़ा रहने देने या उनके शोषण करते रहने में मनुष्यता का गौरव बढ़ता नहीं। अपनी प्रगति से ही संतुष्ट न रहकर हमारा यह भी प्रयत्न होना चाहिए कि अन्य प्राणियों के बौद्धिक उत्कर्ष में समुचित ध्यान दें और सहयोग प्रदान करें।

तोते की स्मरण शक्ति अन्य पक्षियों की तुलना में तीव्र होती है। फ्रांसिसी भाषाविदों का निष्कर्ष है कि तोता १०० शब्द आसानी से सीख सकता है। जे० एम० रिचार्डसन नामक एक विद्वान् ने तोते को बाइबिल का एक अध्याय पूरा कंठस्थ कराने में सफलता पाई थी। ऐसा उल्लेख मिलता है कि "विस्टन चर्चिल" की पुत्री "सारा चर्चिल" ने एक मैना पाली थी, जो ब्रिटिश राष्ट्रगान के कुछ अंश

मधुर स्वर में गा लेती थी। द्वितीय महायुद्ध के दौरान वह मित्र राष्ट्र के घायल सैनिकों का मनोरंजन अपने गायन से करती थी।

प्रख्यात उपन्यासकार थामसन की पुत्री एलिजाबेथ-मान ने एक "पेगी" नामक कुतिया को प्रशिक्षित किया। भौंकने के माध्यम से ही उसे भाषा ज्ञान कराने में एलिजाबेथ ने सफलता पाई। पेगी कोई भी बात सुनकर उसका अर्थ समझ लेती थी। उसके उत्तर की अभिव्यक्ति प्लास्टिक के अक्षरों के माध्यम से होती थी। अक्षर उसके आगे रख दिए जाते, थे तो वह उन्हें जोड़कर अपना उत्तर प्रस्तुत करती थी।

उड़ने या तेज गति से यात्रा करने में कबूतर के अलावा भी कई पक्षी हैं, जो उससे तीव्र गति से उड़ सकते हैं, परंतु कबूतर में विलक्षण परीक्षण बुद्धि और स्मरण शक्ति भी पाई जाती है, जो अन्य प्राणियों में दुर्लभ है। मास्को के इंजीनियरिंग कारखाने के कुछ विशेषज्ञों ने उनकी इस अद्‌भुत क्षमता का उपयोग करने का निश्चय किया। बाल-बियरिंग बनाने वाले उस कारखाने में कुछ खरोंच लगे चोट खाए बियरिंगों को अलग करने की समस्या थी। कुशल से कुशल कारीगर भी उन्हें छाँटने में चूक जाते थे, किंतु कुछ कबूतरों को कुल तीन दिन की ट्रेनिंग देकर इस काम में लगाया गया, तो उन्होंने कुशल कारीगरों को भी मात कर दिया। अब इनमें से प्रत्येक कबूतर एक घंटे में ३५०० बाल-बियरिंग की जाँच कर लेता था। आश्चर्य की बात तो यह कि उनने जरा भी चूक नहीं की। मनुष्य के मस्तिष्क में न्यूरोंस कणों की संख्या अरबों-खरबों होती है, जिनमें स्मृति के बीज होते हैं। कबूतरों की तुलना में इस मस्तिष्क का यदि पूर्ण विकास किया जा सके तो संसार में जितने पुस्तकालय हैं, उन सबकी पुस्तकों को एक ही मनुष्य कंठस्थ कर सकता है।

मधुमक्खियाँ, बर्रे तथा चींटियाँ भी स्मरण शक्ति की दृष्टि से अद्वितीय सामर्थ्यवान् जीव हैं। इन पर कई प्रयोग करके देखा गया है कि उन्हें चाहे जितना भटका दिया जाए परंतु घर पहुँचने में उन्हें जरा भी दिक्कत नहीं होगी। ध्वनि और गंध को पहचानने की

क्षमता तो उनमें अद्‌भुत ही कही जा सकती है। जर्मनी में एक विचित्र प्रयोग द्वारा इस तथ्य को प्रमाणित किया गया। इस प्रयोग में टेलीफोन के एक रिसीवर से एक फीट दूर एक मादा झींगुर और एक मादा टिड्डे को रखा गया। वहाँ से बहुत दूर पहले एक नर झींगुर को ट्रांसमीटर के पास रखा गया। जैसे ही उसने ट्रांसमीटर के पास ध्वनि की और वह ध्वनि रिसीवर तक पहुँची, मादा झींगुर अपने स्थान से भागकर रिसीवर में जा घुसी, यद्यपि रिसीवर में उसे अपना प्रेमी नहीं मिला, तो भी उसने अपने प्रेमी की आवाज को पहचानने में भूल नहीं की थी। इस सारे उपक्रम में मादा टिड्डा अपने ही स्थान पर जमा हुआ था। दुबारा ट्रांसमीटर के पास टिड्डे की ध्वनि कराई गई, तो इस बार मादा टिड्डा भागकर आई और उसने यह सिद्ध कर दिया कि वह भी अपने वंश को पहचानने की सूक्ष्म बुद्धि से पूरी तरह ओत-प्रोत है।

बुद्धिमत्ता का एक पहलू यह भी.....

जीवों की बुद्धिमत्ता अपने विकसित रूप में तब अभिव्यक्त होती है, जब उनके सामने कोई संकट आ जाता और आत्म रक्षा की आवश्यकता आ पड़ती है। हिरन, खरगोश, चीते और कंगारू बहुत तेज दौड़ते हैं, किंतु तब, जब इन्हें अपने सामने कोई संकट आता दिखाई देता है। वे जानते हैं कि उस स्थिति में सामान्य गति से बचाव नहीं किया जा सकता, अतएव वे अपनी गति को अत्यधिक तीव्र कर देते हैं। चीता उस स्थिति में १०० किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से दौड़ जाता है। कंगारू उस स्थिति में हवा में जोरदार कुलाचें लगाता है, जिससे उसकी मध्यम गति अपनी प्रखरता तक पहुँच जाती है। यदि भागने में भी जान न बचे तो वह खड़े होकर अपना शक्ति प्रदर्शन करते हैं। बिल्ली अपने बाल फुलाकर तथा गुर्राकर यह प्रदर्शित करती है कि उसकी शक्ति कम नहीं, कुछ जानवर दाँत दिखाकर शत्रु को डराते हैं, तो कुछ घुड़ककर, कुछ पंजों से मिट्टी खोदकर इस बात के लिए भी तैयार हो जाते हैं कि आओ, जब नहीं मानते तो दो-दो हाथ कर ही लिए

जाएँ। साही तो मुँह विपरीत दिशा में करके अपने नुकीले तेज काँटे इस तरह फर्राकर फैला देती है कि शत्रु को लौटते ही बनता है। अमेरिका में पाई जाने वाली स्कंक नामक गिलहरी अपने शरीर से एक विलक्षण दुर्गंध निकाल कर शत्रु को भगा देती है। आस्ट्रेलिया के कंगारू रैट तो सचमुच ही आँखों में धूल झोंकना, जो कि बुद्धिमत्ता का मुहावरा है, जानता है। कई बार साँप का उससे मुकाबला हो जाता है तो यह अपनी पिछली टाँगों से इतनी तेज धूल झाड़ता है कि कई बार तो सर्प अंधा तक हो जाता है। उसे अपनी जान बचाकर भागते ही बनता है।

कछुआ, कर्कट तथा अमेरिका में पाए जाने वाले पैंगोलिन व आर्मडिलो शत्रु-आक्रमण के समय अपने सुरक्षा कवच में दुबक कर अपनी रक्षा करते हैं, तो बारहसिंगा युद्ध में दो-दो हाथ की नीति अपना कर अपने सींगों से प्रत्याक्रमण कर शत्रु को पराजित कर देता है।

कहते हैं कि भालू मृत व्यक्ति को आक्रमण नहीं करते। इसकी पहचान के लिए वे नथूनों के पास मुँह ले जाकर यह देखते हैं कि अभी साँस चल रही है या नहीं। चतुर लोग अपनी साँस रोककर उसे चकमा दे जाते हैं, यह बात कहाँ तक सच है, कहा नहीं जा सकता ? किंतु ओपोसम सचमुच ही विलक्षण बुद्धि और धैर्य का प्राणी है, वह संकट के समय अपनी आँखें पलट कर, जीभ लटका कर मृत होने का ऐसा कुशल अभिनय करता है, जैसा सिनेमा के नायक। इस तरह अपनी सूझ-बूझ से वह अपने को मृत्यु के मुख में जाने से बचा लेता है।

मोर आक्रमण की स्थिति से नृत्य मुद्रा में निबटता है। अपने पंखों को छत्र की तरह बनाकर एवं आक्रमणकारी रोष प्रकट कर शत्रु को धमका देता है। कुछ छोटे पक्षी तो और भी चतुराई दिखाते हैं, आक्रामक को देखकर ये लंगड़ा कर चलने का नाटक करते हैं। इससे इस बत का भ्रम होता है कि पहले ही किसी ने घायल कर दिया है। इस स्थिति में आगंतुक सीधे आक्रमण करने की अपेक्षा पीछा करने की नीति अपनाता है। काफी दूर तक तो

वह इसी तरह पीछे-पीछे भागता है, इसी बीच वह एकदम फुर्र से उड़ जाता है ओर शिकारी टापता ही रह जाता है।

'वर्ल्ड वाइल्ड लाइफ' नामक त्रैमासिक पत्रिका के एक संस्करण में मलेशिया में पाई जाने वाली मछली एब्रोबेट का वर्णन छपा है। जिसमें बताया गया है कि मछली भोजन की तलाश में अपने बड़े-बड़े पंखों के सहारे वृक्षों पर भी चढ़ जाती है। यही नहीं, वह अपने थुथने में पानी भर कर इस तरह की क्रिया करती है कि वह थुथना बंदूक का सा काम करता है और पानी गोली का। अपनी इस प्राकृतिक गन से वह अपने भोजन के उपयुक्त जीवों का स्वयं शिकार कर लेती है। उसमें यह भी समझ होती है कि किस जीव को मारने के लिए कितनी बड़ी गोली प्रयुक्त की जाए। दागते समय वह उतने ही जल का प्रयोग करती है।

डेव हेड होव नामक कीड़ा विलक्षण ध्वनियाँ निकाल लेने में बड़ा चतुर होता है। उसे यदि कहीं मधुमक्खी का छत्ता दीख जाए, तो वह रानी मक्खी की सी आवाज निकालता है, अन्य मक्खियाँ भुलावे में आ जाती हैं और यह महोदय चुपचाप छत्ते में घुसकर शहद चोरी कर लाते हैं।

हमारे लिए चुनौती-

विलक्षण बौद्धिक क्षमताएँ आदि काल से ही वैज्ञानिकों और जीवशास्त्रियों के लिए एक प्रकार की चुनौती रही है। बुद्धि, ज्ञान, चिंतन की क्षमता-यही वह तत्त्व हैं, जो मृत और जीवित का अंतर स्पष्ट करते हैं। अतएव जीवन को बौद्धिक क्षमता में केंद्रित कर वैज्ञानिक प्रयोगों की प्रणाली अपनाई गई। इस दिशा में मस्तिष्क की जटिल संरचना एक बहुत बड़ी बाधा है। इस कारण रहस्य अभी तक रहस्य ही बने हुए हैं, तथापि अब तक जितना जाना जा सका है, उससे वैज्ञानिक यह अनुभव करने लगे हैं कि बुद्धि एक सापेक्ष तत्त्व है अर्थात् सृष्टि के किसी भी कोने से समष्टि मस्तिष्क काम कर रहा हो, तो आश्चर्य नहीं, जीवन-जगत् उसी के जितना

अंश पा लेता है, उतना ही बुद्धिमान् होने का गौरव अनुभव करता है।

वैज्ञानिक अब इस बात को अत्यधिक गंभीरता से विचारने लगे हैं कि मानव मस्तिष्क और उसकी मूलभूत चेतना का समग्र इतिहास अपने अन्य कम विकसित भाइयों के मस्तिष्क की प्रक्रियाओं से ही जाना जा सकता है। इसके लिए अब तरह-तरह के प्रयोग प्रारंभ किए गए हैं।

मनुष्य की तरह देखा गया है कि कई बार एक कुत्ता अत्यधिक बुद्धिमान् पाया गया। जब कि उसी जाति के अन्य कुत्ते निरे बुद्धू पाए गए। चूजे अपने बाप मुर्गे की अपेक्षा अधिक बुद्धिचातुर्य का परिचय देते हैं। डाल्फिन मछलियों की बुद्धिमत्ता की तो कहानियाँ भी गढ़ी गई हैं। बुद्धि परीक्षा के लिए कोई बहुत संवेदनशील यंत्र तो अभी तक नहीं गढ़े जा सके, किंतु स्वादिष्ट भोजन की पहचान, जटिल परिस्थितियों के हल आदि के लिए जो विभिन्न प्रयोग किए गए उनसे पहली दृष्टि में यह स्पष्ट हो गया कि बंदर डाल्फिन, (काली की अपेक्षा लाल लोमड़ी) अधिक चतुर होते हैं। नीलकंठ, संघकाक और कौवों की बुद्धि स्वार्थ प्रेरित जैसी होती है—विवेकजनक नहीं। रूस के प्रसिद्ध वैज्ञानिक प्रो० लियोनिद क्रुशिन्स्की ने अपने विचित्र प्रयोगों से यह सिद्ध किया है कि जिस तरह चिंतन से मानवीय शक्ति का ह्रास होता है, पशु-पक्षियों में भी यह प्रक्रिया यथावत् होती है। इनमें कुछ तो डर जाते हैं, कुछ बीमार पड़ जाते हैं, संभवतः इन्हीं कारणों से वे जीवन की गहराइयों में नहीं जाकर प्राकृतिक प्रेरणा से सामान्य जीवनयापन और आमोद-प्रमोद के क्रिया-कलापों तक ही सीमित रह जाते हैं।

प्रो० लियोनिद क्रुशिन्स्की के अनुसार तर्क, विवेक और प्राकृतिक हलचलों के अनुरूप अपने को समायोजित करने की बुद्धि अन्य प्राणियों में भी यथावत् होती है, इसी कारण वे पर्यावरण की समस्याओं को झेलते हुए भी अपना अस्तित्व बनाए हुए हैं, जबकि मनुष्य उनमें बुरी तरह जकड़ता जा रहा है। उसके अपने ही

कारनामे चाहे वह विशाल औद्योगिक प्रगति हो अथवा अणु-आयुधों का निर्माण, उसके अपने ही विनाश का साधन बनते जा रहे हैं।

इंजीनियरिंग दक्षता विज्ञान युग की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। भारी-भारी बाँधों के निर्माण से लेकर नहर निकालकर जन सुविधाएँ बढ़ाने के अनेक बुद्धिमत्तापूर्ण कार्य हो रहे हैं, किंतु इस तरह का बुद्धि कौशल अन्य जीवों में भी कम नहीं। ऊदबिलाव को तो जीव शास्त्रियों ने कुशल इंजीनियरों की पदवी दे डाली है। यह सुरंगी नहरें बनाने तथा मिट्टी के पुल निर्माण करने में बड़ा पटु होता है। हैंपटन नगर में समुद्री किनारे पर रहने वाले इस ऊदबिलाव के कारनामों से बहुत ही तंग रहते हैं। नगर झील व समुद्र के बीच स्थित है। ऊदबिलाव ने नगर के भीड़ वाले इलाकों तक में भीतर-भीतर सुरंगें बना रखी हैं। बहुत प्रयत्न करने के बाद भी आज तक न तो ऊदबिलाव ही पकड़े जा सके हैं और न ही नहरें बंद की जा सकीं, जो इन्होंने अंदर-अंदर बना रखी हैं।

मनुष्य शिल्प, शिक्षा अनुकरण तथा उपकरणों पर निर्भर रहता है। वह कोई भी वस्तु अथवा स्थान का निर्माण बिना किसी से सीखे, देखे अथवा औजारों के अभाव में नहीं कर सकता। जबकि पशु-पक्षी अपना निवास स्वयं अपनी अंतप्रेरणा से बना लिया करते हैं। न तो वे उसके लिए किसी के पास शिक्षा लेने जाते हैं और न उन्हें किन्हीं उपकरणों की आवश्यकता होती है। लोमड़ी, बिलाव तथा शृगालों आदि के निवास कक्ष देखते ही बनते हैं। वे अपनी माँदों तथा विवरों में सब प्रकार की सुविधा का समावेश कर लेते हैं। पक्षियों के घोंसले तथा कोटर तो उनकी निर्माण कला के जीते जागते नमूने ही होते हैं। बया का घोंसला, मधुमक्खी का छत्ता, मकड़ी का जाला तथा चींटी का विवर देख कर तो यही कहना पड़ता है कि परमात्मा ने इन क्षुद्र समझे जाने वाले जीवों को गजब की निर्माण बुद्धि दी है। वह सूक्ष्म शिल्प देखकर मनुष्य का मन ईर्ष्या से भर उठता है।

सामान्य बुद्धि से देखें तो चींटियों का ही क्या, मनुष्य जीवन भी खा-पीकर वासना, तृष्णा, अहंता में बिताया जाने वाला बेकार सा

जीवन है, पर उपयोगिता और उपादेयता तब स्पष्ट होती है जब जीवन प्रक्रिया के सूक्ष्म तत्त्वों का भी बारीकी से अध्ययन, चिंतन और मनन किया जाए। चींटियाँ यों ढेर में बिलबिलाती दीखती हैं, पर उनका हर कार्य व्यवस्थित-नियंत्रित और अपनी प्रभुसत्तासंपन्न रानी के इंगित पर चलना है। कोई भी चींटी न तो कभी निष्क्रिय होगी, न व्यर्थ के कार्य करेगी। जो कार्य जिसे सुपुर्द है वह वही करेगी। नर का काम है परिश्रमपूर्वक खाद्यान्न व्यवस्था, सैनिक पहरेदारी करते, मजदूर बोझा ढोते, शव बाहर निकालते और शिल्पी भवन निर्माण में जुटे रहते हैं। यही व्यवस्था मधुमक्खियों में भी समान रूप से पाई जाती हैं। मनुष्य की तरह पेट और प्रजनन में व्यस्त रहने पर भी उनमें अव्यवस्था और उच्छृंखलता के लिए कोई स्थान नहीं।

हाथी की खोपड़ी ही बड़ी नहीं होती अपितु उसमें उसी अनुपात की बुद्धिमत्ता भी होती है। वे सूक्ष्म संकेतों को भी थोड़े प्रशिक्षण के बाद ही समझने लगते हैं। यही कारण है कि उसे भूतकाल में युद्ध भूमि में प्रयुक्त किया गया था। आज भी सवारी के काम में सागौन के जंगलों में स्लीपर ढोने तथा सरकसों में विविध करतब दिखाने में प्रयुक्त होते हैं। जंगपति चतुर्वेदी ने अपनी पुस्तक 'जीव जंतुओं की बुद्धि' में लिखा है कि एक हाथी ने एक बच्चे की जेब में सूँड़ डाली, पता चला कि उसकी जेब में चीनी है, हाथी उसे ही लेना चाहता था। हाथी को मिष्ठान अधिक प्रिय है, संभवतः इसी से उसकी तुलना मोदक प्रिय गणेश जी से की जाती है।

केन्या के नैरोबी शहर की एक प्रख्यात सफारी कंपनी केर एंड डाउनी के मैनेजर ओनाल्डेफेर ने ६० वर्ष के अनुभव के आधार पर हाथियों के संबंध में अपनी पर्यवेक्षण रिपोर्ट में लिखा है कि वे मनुष्यों की तरह काम करते और कई बार तो मनुष्य से अधिक चतुरतापूर्वक कार्य करते हैं। शिकारियों ने एक स्थाई कैंप बनाया था, उसमें एक बगीचा लगाया था। हाथियों का झुंड अकसर उनके बगीचे को ध्वस्त कर देता था। बगीचे के चारों ओर एक बाड़ लगाई गई। इतना ही नहीं, उसमें विद्युत् के तार भी लगाए

गए। हाथियों को यह पता लगाने में कुछ ही रातें लगीं कि जब बत्ती बुझ जाती है तो कोई खतरा नहीं रहता और फिर से बगीचा ध्वस्त कर दिया। इसके बाद सारी रात जनरेटर चालू रखा गया। फिर से हाथियों के झुंड ने पता नहीं कैसे यह पता लगा लिया कि उनके बाहर वाले दाँतों को बाड़ से कोई खतरा नहीं है और बाहर वाले दाँतों से ही बाड़ को तहस-नहस कर दिया, तब बाद में सुरक्षा के लिए बंदूक वाले चौकीदार रखने पड़े।

अफ्रीका में मर्शियन नेशनल पार्क में कुछ मकान बन रहे थे, तब एक हाथी जिसका नाम रखा गया था लार्ड मेयर, वह मकान बनाने वाले बढ़ाइयों को पीछा करके भगा देता था, मानो वह यह कहना चाहता था कि वह प्रदेश उसी का अधिकार क्षेत्र है। मकान पूरा बन जाने के बाद उसने अपना गश्त लगाना जारी रखा। अपना फोटो लेने वालों के प्रति वह उदार रहता था तथा अन्य हाथी को नहीं आने देता था, केवल अपना फोटो खिंचवाने के लिए खड़ा हो जाता था। एक रात को उसको केलों से बनने वाली पोंबे नामक शराब की गंध आ रही थी, उसने छत अपनी सूँड़ से उठाकर फेंक दी और जितने केले थे, उन सबका सफाया कर दिया। अब वह प्रत्येक कार की केले के लिए तलाशी लेने लगा था। अगर पीछे की ओर सामान के साथ केले रखे होते, उसे तोड़कर केले ले लेता था।

एक रात ऐसा हुआ कि यात्रियों ने अपने केलों की टोकरी कार के नीचे रख दी। रात्रि नींद में वे यात्री लोग अपनी कार को उठाए जाने एवं पलटे जाने से घबरा गए। टार्च जलाकर उन्होंने देखा तो कार के नीचे रखी हुई केलों की टोकरी के केलों को लार्ड मेयर बड़े मजे से खा रहा था।

केनिया में अंबोसेली गाँव के पास पशुओं के लिए एक अभयारण्य है, जिसमें एक हाथी रहता था। वह विनोदी स्वभाव का था, सँकरे रास्ते के मोड़ पर वह खड़ा करता, जैसे ही कोई कार आती दिखाई देती, दौड़ने का दिखावा करता तथा जोर से चिंघाड़ने लगता था। कार में बैठे हुए लोगों को घबराया देखकर उसे संतोष हो जाता, वह वापस लौट जाता और एक किनारे पर

खड़ा होकर लोगों को देखता रहता और अपनी छोटी शरारत भरी आँखें चमकाता।

विश्व के सबसे अधिक विकसित केंद्र बंदरों के अध्ययन के लिए बने हुए हैं, इनमें तीन प्रमुख केंद्र विशेष प्रसिद्ध हैं—(१) क्योटो यूनिवर्सिटी का 'प्राइवेट रिसर्च इंस्टीट्यूट' (२) इन्यूयामा का जापान मंकी सेंटर (३) ओसाका सिटी यूनिवर्सिटी। इन केंद्रों से संपर्क बनाने के लिए अंतराष्ट्रीय वैज्ञानिकों का आना-जाना लगा रहता है।

वहाँ के इन प्रमुख केंद्रों में २५०० बंदरों के २५ से ३० वर्षों तक के रिकॉर्ड रखे गए हैं, जिनमें उनके व्यावहारिक ढंग, पारिवारिक एवं सामाजिक संबंध, स्वास्थ्य आदि का विस्तृत विवरण संकलित किया गया है।

जापान के 'ऐंथ्रोपोलॉजिस्ट' जूनीकीरो इटैनी का कहना है कि बंदर क्रमशः प्रगति की ओर अग्रसर हो रहे हैं। वे नई चीजें सीखते रहते हैं ओर उनके बच्चे नवीन आदतों को ग्रहण करते रहते हैं। बंदरों में ६० प्रतिशत व्यवहार शिक्षण द्वारा प्राप्त किए जाते हैं।

प्रारंभ में बंदर अधिक समय पेड़ों पर ही रहा करते थे। अनुसंधानकर्ता टोली आने के बाद अपना ७० प्रतिशत तक समय जमीन पर ही बिताते हैं तथा दो पैरों पर खड़े होकर काफी दूर तक चल लेते हैं।

इसी प्रकार उन्होंने अपने खाने के तरीकों में नए-नए ढंग सीख लिए हैं। पहले अनाज के मिट्टी या बालू में मिले होने पर एक-एक दाना बीनकर खाते थे और अब गेहूँ और बालू को मुट्ठी पर भरकर नदी के किनारे दौड़ जाते हैं तथा पानी में डाल देते हैं, जिससे बालू तो नीचे बैठ जाती है और वे गेहूँ खा लेते हैं। ऐसे ही वे पहले पानी में कभी नहीं जाते थे। प्रारंभ में तो पानी में मूँगफली आदि के दाने डालने पर उन्हें लेने जाने लगे, फिर तो स्वयं ही तैरने, उछलने, खेलने आदि में खूब आनंद लेने लगे हैं।

अपने विचारों के आदान-प्रदान के लिए ३७ विभिन्न प्रकार की ध्वनियों का आविष्कार भी बंदरों ने किया है, जिनके द्वारा वे अपनी भावनाओं, आदेशों एवं निर्णयों आदि को व्यक्त करते हैं, जैसे 'क्वान' ध्वनि का अर्थ खतरा होता है।

प्रशिक्षण के चमत्कारी परिणाम

यदि पशु-पक्षियों को प्रशिक्षित करने पर ध्यान दिया जाए तो वे भी मनुष्यों की तरह बुद्धिमान् हो सकते हैं। मनुष्य भी आदिम-काल में अन्य प्राणियों की तरह ही अनपढ़ था। सहयोग की वृत्ति अधिक रहने से एक ने दूसरे की सहायता की और संचित अनुभव का लाभ अपने साथियों को मिल सके इसका प्रयत्न किया। एक का अनुदान दूसरे को मिलने की पुण्य प्रक्रिया ने मनुष्य को पीढ़ी-दर-पीढ़ी अधिक बुद्धिमान् और अधिक क्रियाकुशल बनाया है। यदि यही आधार अन्य प्राणियों को मिल सके तो वे भी अब की अपेक्षा कहीं अधिक बुद्धिमान् हो सकते हैं। उनमें भी वे सब तत्त्व मौजूद हैं, जो मनुष्य की तरह बुद्धिमान् बन सकने का द्वार खोल सकते हैं। मनुष्य चाहे तो इस दिशा में अन्य प्राणियों की बहुत सहायता कर सकता है। अविकसित मस्तिष्क के बालकों को कुशल अध्यापक लिखा-पढ़ाकर बुद्धिमान् बना देता है, तो कोई कारण नहीं कि अन्य प्राणियों को प्रशिक्षित बनाने के लिए किए गए प्रयत्नों को सफलता न मिले।

इस संदर्भ में अमेरिका में मिसिसिपी राज्य के अंतर्गत अर्कसास के पोपरबिले नामक कस्बे के निवासी केलर ब्रेलैंड नामक एक दंपत्ति की चर्चा उल्लेखनीय है। यों वे दोनों ही मनोविज्ञान शास्त्र के स्नातक हैं, पर उन्होंने अपना प्रमुख कार्य तरह-तरह के प्राणियों को उनके वर्तमान स्तर से आगे की शिक्षा देकर अधिक बुद्धिमत्ता का परिचय दे सकने योग्य बनाने का अपनाया है। पशु मनोविज्ञान शास्त्र में उनके प्रयत्नों ने कई कड़ियाँ सम्मिलित की हैं। उनकी इस दिशा में रुचि कैसे बढ़ी, इसकी भी एक लंबी कहानी है।

सन् १९४० की बात है। अमेरिका की मिनीसोटा यूनिवर्सिटी में दो छात्र अध्ययन के लिए प्रविष्ट हुए। छात्र थे श्री केलर ब्रेलैंड और छात्रा का नाम था कुमारी मेरिसन। मनोविज्ञान संभवतः सृष्टि का सर्वोपरि जटिल विषय है। फ्रायड की तरह पूर्वाग्रह ग्रस्त हो तब तो प्रतिभासंपन्न विद्वान् भी लोगों को दिक्भ्रांत करके छोड़ेगा, पर तथ्यान्वेषण का गुण किसी में सच्चाई से जागृत हुआ हो, तो भारतीय संस्कृति के प्रत्येक पक्ष-पहलू को प्रत्येक कसौटी पर सत्य-सिद्ध देखा जा सकता है।

विद्यार्थी जीवन में श्री केलर ब्रेलैंड और कुमारी मेरिसन में सिद्धांतनिष्ठ घनिष्ठता बढ़ने लगी। दोनों अनेक गूढ़ मनोवैज्ञानिक तथ्यों पर परामर्श किया करते, दोनों ने कोई बड़ा कार्य करने का निश्चय किया। इंद्रियजन्य दुर्बलता ने कई बार उन्हें भी घेरे में लेने का प्रयत्न किया, किंतु उन्होंने मनुष्य जाति को इस शाश्वत दर्शन-मनुष्य न तो भला है न बुरा, वह जैसा भी कुछ है वातावरण की प्रशिक्षण की-देन है, से परिचित कराने का संकल्प ले लिया था, अतएव उन्होंने उस पाश से अपने को मुक्त रखा।

संकल्पजयी और इंद्रिय निग्रही व्यक्ति ही कुछ असाधारण करने का श्रेय प्राप्त करते हैं, इस निश्चय के साथ उन्होंने अमेरिका के अर्कंसास में २६० एकड़ का विलक्षण पाठशाला बनाई। लोक-मर्यादा की दृष्टि से उन्होंने परस्पर विवाह भी कर लिया, संतान भी उत्पन्न की, किंतु इतनी नहीं कि एक बच्चे को माता-पिता के प्यार के लिए दूसरे के प्रति ईर्ष्या का शिकार होना पड़े। उसकी अपेक्षा उन्होंने इस फार्म को परीलोक जैसा स्वरूप प्रदान किया। विभिन्न श्रेणी के लगभग ५,००० जीव-जंतुओं की उन्होंने पाठशाला स्थापित की और प्रारंभ से ही उनके शिक्षण का कार्य प्रारंभ कर यह दिखाया कि मनुष्य और पशु-पक्षियों में जन्मजात अंतर कुछ भी नहीं है, दोनों में एक-सी चेतना विद्यमान है, उसे चाहे जिस वातावरण में गलाया और ढाला जा सकता है। अपने बच्चों पर ही नहीं, समूची मनुष्य जाति पर दुर्गुणी होने का दोष लगाने वाले से यह पूछा जाना चाहिए कि उसने संस्कारवान् जीवन की संरचना के

लिए कुछ प्रयत्न किया क्या ? यदि नहीं, तो उसे छिद्रान्वेषण का कतई अधिकार नहीं। प्रयत्न और प्रशिक्षणविहीन वातावरण में ढले व्यक्ति भी पशु-प्रवृत्ति में जकड़े रहें तो इसके लिए वही दोषी नहीं, अपराधी वह भी है जिन्होंने उन्हें जन्म दिया, वातावरण दिया।

ब्रेलैंड दंपत्ति ने इस फार्म में लोमड़ी, गिलहरी, बिल्ली, चूहे, चूजे, नेवले, सुअर, बंदर आदि विभिन्न स्वभाव, आहार-विहार और अभिरुचि वाले जीव-जंतुओं की भरती प्रारंभ की। उनकी नियिमित कक्षाएँ चलने लगीं। इन दिनों इसने विश्वविद्यालय का-सा रूप ले लिया है और उसमें रह रहे जीवों की संख्या दस हजार से ऊपर हो गई है। प्रशिक्षण के विषयों में जहाँ उनकी बौद्धिक प्रतिभा का विकास सम्मिलित है, वहीं उनके प्रकृतिजन्य स्वभाव के ठीक विपरीत उन गुणों का संवर्धन भी सम्मिलित है, जो जीव विशेष की प्रकृति से बिलकुल भिन्न और विलक्षण हो।

उनके कार्य में आप देखेंगे कि घरेलू नौकर के भी सभी कार्य उनके प्रशिक्षित पशु करते हैं, जिसकी आप को कल्पना तक न हो। उदाहरणार्थ प्रशिक्षित सुअरिया उनके गंदे कपड़े इकट्ठे करके लांड्री में धुलने के लिए डाल आती है। उनकी चौकीदारी का काम जो सामान्यतः कुत्ते करते हैं, वह काम एक भेड़ करती है, उसको ऐसा प्रशिक्षित किया गया मानो वह कुत्ता ही हो। जैसे कुत्ता मनुष्य के साथ खाता है, वैसे ही भेड़ ब्रेलैंड दंपत्ति के साथ खाती है। उन्होंने लोमड़ी को ट्रेंड किया, जो अंगूरों के लिए उछला करती है। (पीरपोयज) मछलियों को कैच करना सिखाया, नेवले को गेंद फेंकना सिखाया और खरगोश को बच्चों वाली बैंक में पैसे डालना सिखाया। रूस के प्रसिद्ध मनोविज्ञानी पैवलव के कंडीशंड रेफ्लेक्स सिद्धांत का उपयोग प्राणियों को प्रशिक्षित करने में किया जाता है।

ब्रेलैंड ने एक स्वसंचालित 'फीडर' बनाया। बटन दबाने से घंटी बजती है, उसके साथ-साथ कुछ खाने की चीज निकलती है। ताल बैठाना पहला काम है। चूजों को बोतल के पास जाकर टक-टक करना सिखाने के लिए उन्होंने पहले घंटी बजाई फिर खाना निकाला, चूजा भाग कर खाना खाने गया, उसे कुछ और चाहिए था, इसलिए

वह ठहर गया, जैसे ही वापस होने के लिए मुड़ा, बटन दबा दिया और वह दुबारा खाने के लिए दौड़ पड़ा। दूसरी चीज उसने यह सीखी कि जब तक पीछे नहीं मुड़ेगा, तब तक खाना नहीं मिलेगा। फिर उसने धीरे-धीरे चूजे को बोतल की ओर जाना सिखाया। पहले बोतल की दिशा में एक पग बढ़ाया, तभी बटन दबा दिया, दुबारा कुछ अधिक पग चला, तो बदन दबाया और क्रमशः इसी प्रकार बोतल की ओर चलने की बात उसके दिमाग में बैठाई गई। इस प्रयोग से चूजे के मस्तिष्क में यह बात जमाई गई कि खाना अचानक नहीं मिलता, विशेष प्रकार का काम करने से मिलता है। आखिर में बोतल तक पहुँचने के बाद, जैसा कि उसका स्वभाव होता है, बोतल पर एक बार टक करने पर खाना दिया गया, फिर दो बार टक करने पर खाना दिया गया। १५ मिनट तक प्रयास करने के बाद खाली बोतल को देखते ही उसको खाना मिलेगा, यह बात उसके दिमाग में बैठ गई और जब तक बोतल के पास जाकर इच्छित संख्या में टक-टक न कर लेता तब तक उसे चैन नहीं मिलता था।

प्राणियों को प्रशिक्षित करने में सफलता प्राप्त करने का यह मूल सिद्धांत है। फिर तो चिड़ियाघरों में, मेलों में प्रदर्शनियों में एवं टेलीविजन पर कार्यक्रम देने के लिए ब्रेलैंड दंपत्ति को बुलाया जाने लगा और अंततः उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की।

ब्रेलैंड दंपत्ति ने विभिन्न प्राणियों के साथ किए गए विभिन्न परीक्षणों से यह पता लगाया है कि मनुष्य की अपेक्षा अन्य प्राणी बुद्धि तत्त्व का विकास न होने पर भी चतुरता में पीछे नहीं है। अगर पशुओं के प्रशिक्षित करने से उनकी प्रसुप्त क्षमता उभर सकती है, तो मनुष्य की प्रसुप्त शक्तियों की जागरण की कितनी अकल्प्य संभावना हो सकती हैं।

इस विलक्षण पाठशाला के प्रत्यक्षदर्शी जर्मन विद्वान् इरावुलफर्ट ने अपनी साक्षी-प्रस्तुत करते हुए लिखा है कि धरती का हर व्यक्ति न्यूटन, आइंस्टीन, हंफ्रीडैवी, यूक्लिड, मैडम क्यूरी, नील्सबोहर और कूले जैसे वैज्ञानिक, नैपोलियन बोना पार्ट, नेल्सन, राणा प्रताप, शिवाजी और जोनऑफ आर्क की तरह का देशभक्त,

वीर योद्धा; सुकरात, संत फ्रांसिस, अरस्तू, जरथुस्त्र, कन्फ्युशस इमर्सन, स्वाइत्जर, बुद्ध, ईसा और महात्मा गांधी जैसा विचारक, कालिदास, शेक्सपियर और बैंजामिन फ्रैंकलिन जैसा साहित्यकार बन सकता है। तथ्य एक ही है कि उसे प्रशिक्षण मिले, वातावरण मिले, इस तथ्य को यह अजायबघर देखकर कोई भी स्वीकार करने से इनकार न करेगा। उन्होंने लिखा है कि—

मैंने एक सफेद, स्वस्थ एवं सुंदर चूजे से पूछा, २१ को ७ से भाग देने पर क्या मिलता है ?' उसने अपनी चोंच से तीन बार टक-टक करके उत्तर दिया '३'।

दूसरा प्रश्न पूछा गया कि १६ का वर्गमूल कितना होता है, टक-टक से जवाब मिला चार। आप सोचेंगे कि क्या यह बुद्धिमान् चूजा था ? नहीं, यह तो एक ट्रिक है। आश्चर्य की बात तो यह है कि चूजे को यह बात सिखाने के लिए मुझे केवल ५½ मिनट लगे, ऐसा केलर मेरिसन दंपत्ति ने बुलफर्ट से कहा। पिछले १० वर्षों से उन्होंने २८ विभिन्न जातियों के ५००० पशुओं को प्रशिक्षित किया है। ऐसा करते हुए उन्होंने पशु-मनोविज्ञान के अनेकों तथ्य खोजे हैं, जिनका उपयोग करके कोई भी अपने पालतू पशुओं को ही नहीं, मनुष्य को भी प्रशिक्षित कर सकता है।

अब तक उनके स्कूल से लगभग एक हजार प्राणी आश्चर्यजनक कार्य कर सकने और आकर्षण केंद्र बन सकने योग्य विशेषताएँ प्राप्त करके विदा हो चुके हैं। प्रशिक्षित जीवों को खरीदने वाले शौकीनों की कमी नहीं रहती, वे अपने मनपसंद के प्राणी अच्छा मूल्य देकर खरीद ले जाते हैं और मनोरंजन का आनंद लेते हैं। शिक्षकों को भी इस धंधे से अच्छी आजीविका प्राप्त होती रहती है।

इस विद्यालय की एक कक्षा की मुर्गियाँ आज्ञा देने पर जू बाक्स का स्विच दबाकर फिल्मी रिकॉर्ड चालू कर देती हैं और उनकी ध्वनि पर तालबद्ध नृत्य करती हैं।

मुर्गे टीम बनाकर खिलाड़ियों की तरह अपने-अपने मोर्चे पर आमने-सामने खड़े होते हैं और उस क्षेत्र में प्रचलित बैसबॉल खेल

सही कायदे, कानून के अनुसार खेलते हैं। उनमें से न कोई बेईमानी, चालाकी करता है और न लापरवाही। जो पार्टी हार जाती है—वह बिना अपमान अनुभव किए, पैर फैला कर रेत में बैठ जाता है।

रेनडियर प्रेस की मशीन चलाते हैं। कुत्ते बॉस्केट-बॉल खेलते है। बकरियाँ कुत्ते के बच्चों को पालतीं और अपना दूध पिलाती हैं।

खरगोश पियानो बजाते और दस फुट दूरी तक ठोकर मारकर गेंद फेंकते हैं। बकरियाँ कुत्ते के बच्चों को पालतीं और अपना दूध पिलाती हैं।

यह सारी शिक्षा ब्रेलैंड ने पुरस्कार का प्रलोभन देकर पूरी कराने की तरकीब निकाली है। वे इन प्राणियों को आरंभ में एक कार्य सिखाते हैं। पीछे जब वे मालिक की मर्जी समझने और निबाहने का संकेत समझ लेते हैं, तो प्रत्येक सफलता पर स्वादिष्ट भोजन देने का उपहार दिया जाने लगता है।

मनुष्यों की तरह ही कुछ जानवर स्वभावतः चतुर होते हैं और कुछ मंदबुद्धि। चतुर अपनी सीखी विधि को फुर्ती के साथ इशारा पाते ही पूरा कर देते हैं, पर कुछ या तो भूल जाते हैं या उपेक्षा करते हैं। उन्हें कठिन और बढ़िया काम से हटाकर सरलता से ही हो सकने वाले खेल सिखा दिये जाते हैं। एक रैकून को जब बचत के पैसे जमा करने वाले डिब्बे में गिनती के पैसे डालने में अभ्यस्त न बनाया जा सका, तो सीटी बजाने की सरल शिक्षा देकर छुट्टी दे दी गई।

संदेश वाहक कबूतर, नियमित रूप से नियत स्थानों पर पहरेदारी करने वाले कुत्ते, बिखरे सामान को इकट्ठा करने वाली बिल्लियाँ, रेडियो बजने के शौकीन रैकून अपने बताए हुए काम ठीक तरह करते हैं।

अधिक समझदार जानवरों में कुत्ते और बंदर आते हैं। वे किसी छोटी फैक्ट्री या दुकान के मालिक का पूरी तरह हाथ बटाते हैं। ढेर की वस्तुओं को छाँटकर अलग-अलग कर देना, उन्हें अलग-अलग स्थानों पर यथाक्रम लगा देना, उन्हें कुछ ही दिन में आ जाता है। घड़ी देखकर नियत समय का अनुमान कर लेना और

तदनुसार अपनी ड्यूटी में हेर-फेर कर देना, उनमें से अधिकांश को आ जाता है। प्रेशर कुकर में भोजन पकते छोड़कर मालिक चला जाता है और जब पक जाने की सीटी बजती है, तो बंदर द्वारा स्विच बंद करके उस काम को पूरा कर देना सहज ही आता है। तोता, मैना मनुष्य की नकल करने के लिए प्रसिद्ध थे और अन्य कई पशु-पक्षियों को भी थोड़ा बहुत मानवी भाषा और उसका तात्पर्य समझने का अभ्यास होने लगा है।

ब्रेलैंड केलर का २८० एकड़ भूमि पर बना प्राणि प्रशिक्षण गृह-"एनीमल विहेवियर एन्टरप्राइस" के नाम से प्रसिद्ध है। उनकी वार्षिक आमदनी सन् १९८० में २५ लाख रुपया थी। इस आय से वे नई प्रयोगशालाएँ और नये प्रशिक्षण गृह स्थापित करते जा रहे हैं। अब तक सरकस वालों को ही यह श्रेय प्राप्त था कि वे खतरनाक जानवरों को कुछ खेल दिखाने के लिए प्रशिक्षित करते हैं। इस दिशा में ब्रेलैंड के प्रयोग प्राणियों के बौद्धिक विकास की समस्या सुलझाने की दृष्टि से हो रहे हैं। उनकी प्रशिक्षण पद्धति को 'कंडिशनिंग थियरी' कहा जाता है। जिसका आधार है प्राणियों को यह समझा देना कि यदि वे ऐसा करेंगे तो ऐसा होगा।

प्रशिक्षित जीव-जंतु मनुष्य से अधिक बेहतर—

पशुओं को प्रशिक्षित करके उनसे अपेक्षाकृत अधिक लाभ उठाया जा सकता है। सर्कसों में जब घोड़े, हाथी सिखाए-सधाए गए, तो वे युद्धों से लेकर अन्यान्य कार्यों में उनसे असाधारण सहायता प्राप्त कर सकने में सफल रहे। कुत्तों ने अच्छे खासे पुलिस मैनों से बढ़कर अपराधियों का पता लगाने और अपराधों को रोकने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अब आवश्यकता इस बात की है कि जो पशु-पक्षी मनुष्य के संपर्क में आ चुके हैं, जिनमें बुद्धि की मात्रा कुछ बढ़-चढ़कर है उन्हें अधिक बुद्धिमान् बनाने के लिए प्रशिक्षण की व्यवस्था की जाए। जहाँ ऐसे प्रयत्न चल पड़े हैं, उन्हें प्रोत्साहन दिया जाए और मिल-जुलकर काम को आगे बढ़ाया जाए।

इन प्रयासों के माध्यम से हम एक अन्य दूसरे दर्जे की मनुष्य जाति उत्पन्न कर सकेंगे और उनके सहयोग से उससे कहीं अधिक लाभ उठा सकेंगे, जो आज की उपेक्षित स्थिति में लाभ उठा पाते हैं। समुचित प्रशिक्षण एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसके आधार पर अविकसित प्राणियों को भी उनकी सामर्थ्य के अंतर्गत आने वाले कार्यों के लिए दक्ष बनाया जा सकता है। कुत्ता एक सामान्य स्तर का पशु है। आमतौर से उससे चौकीदारी जैसा काम ही लिया जाता है, पर प्रशिक्षित करने पर उसे कितने ही ऐसे महत्त्वपूर्ण कार्यों के लिए सुयोग्य बनाया जाता है। जिसके लिए उसकी बिरादरी में कोई प्रचलन या परंपरा नहीं है।

अंधों का मार्गदर्शन करने में अब वे असाधारण सहायता करने योग्य बनाए जाने लगे हैं। एक नियत स्थान से दूसरे स्थान तक वे अपने मालिक को नियमित रूप से पहुँचाने और वापस लाने का काम करने लगे। प्रशिक्षित कुत्ते की गरदन में रस्सी बाँध दी जाती है और वह आगे-आगे चल पड़ता है। अंधा मालिक उस रस्सी के संकेत पर अपने पैर बढ़ाते और मोड़ते हुए आगे बढ़ता है। जहाँ कुत्ता रुके, वहाँ मालिक को रुकना पड़ता है। यह मोड़ रास्ते में आने वाले व्यवधानों के कारण आते हैं। सामने से आने वाली भीड़ या सवारी की दिशा और तेजी को देखकर वह अनुमान लगा लेता है कि सामने वाला बचेगा या नहीं। यदि लगता है कि उसके कारण अपने सफर में कोई अड़चन नहीं पड़ेगी, तो ही वह यथावत् चलता है, अन्यथा बाईं ओर बचने का ध्यान रखते हुए स्वयं भी मुड़ता है और मालिक को भी मोड़ता है। उसे ध्यान रहता है कि उसे अकेले ही नहीं चलना है, वरन् मालिक के मार्गदर्शन का उत्तरदायित्व भी ठीक तरह निभाना है।

उँगली या लाठी पकड़कर अंधों को कहीं से कहीं ले जाने की पुरानी परंपरा में एक कीमती आदमी घिरता है, वह कार्य कुत्ते के सस्ते श्रम से क्यों न पूरा करा लिया जाए। यह सोचकर उस प्रयोजन के निमित्त उन्हें सिखाने-सधाने के लिए कितनी ही संस्थाओं का सृजन हुआ है और उनने अपना काम सफलतापूर्वक आगे बढ़ाया है। पाश्चात्य देशों में चल पड़े ऐसे प्रयासों में इंगलैंड

अग्रणी है। उनकी एक संस्था है—दि गाइड डाग फार दी ब्लाइंड्स। उसकी वरसेस्टर, एसेक्स, लीमिंग्टन, बर्मिंघम आदि स्थानों में ७० शाखाएँ हैं। सरकस के लिए जानवर सधाने वालों की तरह-इन संस्थानों में भी श्वान मनोविज्ञान के ज्ञाता काम करते हैं और भिन्न-भिन्न उपायों द्वारा अपने छात्रों का कौशल निखारते हैं। नर उद्दंड होते हैं और मादा स्वभावतः सहनशील। इसलिए इस प्रयोजन के लिए मादाएँ भर्ती की जाती हैं। प्रशिक्षण करने से पूर्व उनके प्रजनन अवयव निकाल दिए जाते हैं, ताकि उस उत्तेजना के कारण अपनी ड्यूटी पूरी करने में गड़बड़ न करें।

शिक्षा का आरंभ भीड़ रहित स्थानों में होता है। बाद में उन्हें भारी भीड़ के बीच गुजरने और द्रुतगामी वाहनों से बचने के लिए भी अभ्यस्त बना दिया जाता है। जिस मालिक को उसे सुपुर्द किया जाना है, उसे तीन सप्ताह केंद्र में रहकर अपने भावी मार्गदर्शक के साथ बितानी पड़ती है। जब दोनों के बीच घनिष्ठता विकसित हो जाती है, तभी कुत्ता विद्यालय छोड़कर उस नए मित्र के साथ जाने को रजामंद होता है।

पशु-पक्षियों में से कुछ जातियाँ ऐसी हैं, जिनमें समझदारी की मात्रा काफी है और थोड़े से प्रयत्न से उनकी विशेषताओं का लाभ उठाया जा सकता है। इस संदर्भ में कबूतर मनुष्य के लिए अन्य पक्षियों की तुलना में अधिक उपयोगी सिद्ध हो रहे हैं।

मास्को के अनातोली शेरोव इंस्टीट्यूट ने पशु-पक्षियों का ऐसा विशेष परीक्षण आरंभ किया है, जिसके अनुसार यह जाना जा सकेगा कि उनकी संरचना, प्रवृत्ति एवं सूझ-बूझ को मोड-मरोडकर किसी मनुष्य के साथ सहयोग करने के उपयुक्त बनाया जा सके। इस परीक्षा में प्रायः आधे दर्जन पशु और सात पक्षी उत्तीर्ण हो गए हैं। फलतः उनके लिए कार्य निर्धारण और पाठ्यक्रम बनाने की तैयारी तत्परतापूर्वक हो रही है।

जानवरों को विशिष्ट प्रयोजनों के लिए सधाने वाले रूसी प्रशिक्षक ब्लादिमिर दुरोब ने अपने सधाए पशु-पक्षियों के विवरण

प्रकाशित किए हैं। उनने जानवरों की अतींद्रिय क्षमता को अपनी संकल्प शक्ति से प्रभावित करने और तद्नुसार विलक्षण काम कराने की सफलता का उल्लेख किया है। सामान्यतया जानवरों को लालच या प्रताड़ना के माध्यम से उनकी आदत से भिन्न प्रकार की बातें सिखाई जाती हैं। जब तब प्यार प्रदर्शन का भी प्रयोग होता है, किंतु दुरोब ने इससे भिन्न मार्ग चुना। जिन्हें संवेदनशील पाया उन जानवरों को अति निकट बुलाकर बहुत देर तक प्यार भरी नजर उनकी आँखों में डालने का अभ्यास किया। पाया कि इस प्रयोग में वे सम्मोहित एवं समर्पित जैसी मनःस्थिति में जा पहुँचते हैं। उसी समय दुरोब ने छोटे-छोटे निर्देश दिए और उन्हें पालने का आग्रह किया। आश्चर्य यह कि वे इसी मानसिक संकेत के आधार पर वैसा करने लगे जैसा कि उन्हें बिना कुछ कहे या सिखाए—चाहा गया था। इस प्रयोग में उसकी एक कुतिया बहुत सफल रही। वह मूक संदेश द्वारा बताई गई पुस्तक का नाम तो वह नहीं पढ़ सकती थी, पर रंग और डिजायन का नक्शा मस्तिष्क में उतार दिए जाने पर वह दिए गए निर्देश को ठीक प्रकार पालन करके दिखा देती थी। इसी प्रकार यह शिक्षक अपनी क्षमता का प्रयोग करके अदृश्य संकेतों के आधार पर अन्य पशु-पक्षियों से भी आश्चर्यजनक काम कर लेता था।

प्रशिक्षण मिलने पर कुत्ते मनुष्य की अनेक प्रकार की सेवाएँ करते हैं। बाणभट्ट ने लिखा है कि तत्कालीन भारतीय शासक युद्धों में कुत्तों का प्रयोग करते थे। ईसा से पूर्व १०१ सन् में ट्यूटंस ने कुत्तों की सहायता से ही रोमन सेना पर आक्रमण किया और विजय पाई। द्वितीय महायुद्ध में जर्मनी ने इस कार्य के लिए २ लाख कुत्ते प्रशिक्षित किए। नैपोलियन की अपनी विजय में कुत्तों का बड़ा योगदान रहा है। सन् १६०४ में रूस, जापान के युद्ध में भी कुत्तों ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निबाही। मलय देश के शासकों ने पिछले दिनों अफ्रीका के माऊ-माऊ के विरुद्ध तथा भारत-पाक युद्ध के समय भारतीय सेना के कुत्तों ने भारी योगदान दिया। यह कुत्ते जासूसी के लिए अत्यंत निष्णात पाए गए। अपनी गंध से अपराधी तथा दुश्मन का पता लगा लेना इनके लिए बहुत सरल होता है।

कुत्तों की तरह घोड़े व खच्चर भी सेना के बहुत महत्त्वपूर्ण अंग हैं। प्रशिक्षित घोड़ों तथा खच्चरों के कारनामे बड़े आश्चर्यजनक होते हैं। अपने स्वामी को सकुशल बचा ले जाने, दुश्मन पर प्रहार तथा छिपकर घात लगाने में वे अत्यंत कुशल होते हैं। पहाड़ी युद्ध तो लड़ा ही खच्चरों बल पर जाता है। हवाई आक्रमण के समय खच्चर मोर्टार तोपों सहित इस तरह दुबक कर छिप जाते हैं कि दुरबीन लगे जहाज भी इन्हें पहचान नहीं पाते।

हैंबर्ग चिड़ियाघर के एक चिपांजी में ऐसी आकांक्षाएँ पाई गईं कि उसमें मनुष्य की सी जिज्ञासाएँ हैं। वह मनुष्यों के क्रिया-कलाप विशेष कर साइकिल चलाने की क्रिया को बड़ी तन्मयता से देखता। चिड़ियाघर के अधिकारियों ने उसके लिए छोटे पहिए वाली एक साइकिल मँगा दी। उसे बैठना और पाइडिल मारने सिखाया गया। थोड़ी देर के अभ्यास से ही चिपांजी पाइडिल मारने लगा और अब वह गैलरी में बखूबी साइकिल चलाकर दर्शकों का मनोरंजन करता है। उसकी बुद्धि कौशल का इससे भी उन्नत उदाहरण तब देखने में आया, जब उसकी गैलरी में केलों का एक गुच्छा लटका दिया गया। चिपांजी कुछ देर तक उछल-उछल कर उसे पकड़ने का प्रयत्न करता रहा, पर जब गुच्छा हाथ न लगा, तो कोठरी में पड़े एक लकड़ी के बक्से को उठाकर गुच्छे के नीचे रखा और उसके ऊपर खड़ा होकर गुच्छे को पकड़ने का प्रयास किया। इस पर भी गुच्छे तक हाथ नहीं पहुँचा, कुछ देर सोचने के बाद उसने क्रमशः दूसरा और तीसरा बक्सा रखा और अंततः गुच्छा पाने में सफलता प्राप्त कर ली।

रूस के समीपवर्ती समुद्री क्षेत्रों में पाई जाने वाली डोलफिन मछली प्रकृतितः ऐसी है जिसे मनुष्यों के साथ दोस्ती करना बहुत सुहाता है। उसे थोड़ी-सी ट्रेनिंग देकर पालतू बनाया जा सकता है। वह हाथ से दिए हुए बिस्कुट पाने के लिए बार-बार लपककर आती है और तब तक देने वाले के इर्द-गिर्द फिरती रहती है जब तक कि वह निराश नहीं हो जाती या दूसरे द्वारा बुला नहीं ली जाती। पालतू कुत्ते या बिल्ली की तरह वह नाम लेने पर पानी से

निकलकर ऊपर आ जाती है और अपनी उपस्थिति का परिचय देती है। थोड़े दिन की शिक्षा पाकर वह हलके-फुलके आदमियों तथा बच्चों को अपनी पीठ पर बिठाकर पूरे तालाब का इस सधे हुए ढंग से चक्कर लगाती है, जिससे सवार को गिरने का खतरा न उठाना पड़े। वह कुछ शब्दों का अर्थ भी समझ लेती है और इशारों के आधार पर अपनी गतिविधियों में हेर-फेर करती है।

इंगलैंड के प्लीमथ अस्पताल में मनुष्य धावकों के स्थान पर कबूतर कर्मचारी भर्ती और प्रशिक्षित किए गए हैं। इस अस्पताल की रक्त परीक्षण प्रयोगशाला कई मील दूर है, वहाँ तक पहुँचने और रिपोर्ट लाने में काफी समय लगता है तथा खर्च पड़ता था। अब वह कार्य प्रशिक्षित कबूतर करने लगे हैं। पैर में जाँच के रक्त की छोटी थैली बाँध देने पर वे सीधे प्रयोगशाला पहुँचते हैं। डॉक्टर उस थैली की जाँच पड़ताल करके रिपोर्ट टेलीफोन से अस्पताल कार्यालय को बता देते हैं। इस योजना से समय तथा पैसे की बहुत बचत होने लगी है।

कबूतरों को वस्तुओं में से खरी-खोटी छाटने का काम बड़ी आसानी से सिखाया जा सकता है कैपसूलों, बीजों, बॉल बेयरिंग में से जो निर्धारित मापदंड में घटिया या खराब होता है, उसे वे चुन-चुनकर अलग रखते रहते हैं। अमेरिका के वाल्टर रिच ने यांत्रिक खराबियाँ तलाश कर लेने में, उनकी मौलिक क्षमताओं का उपयोग करने की सफलता में बहुत आशावान हैं।

जासूसों के कामों में उनका बहुत उपयोग है। छोटे कैमरे और टेप रिकॉर्डर उन्हीं के जैसे रंग के बनाकर इस प्रकार बाँध दिए जाते हैं कि किसी को उनके साथ इन उपकरणों के होने का संदेह तक न हो। शत्रु क्षेत्रों में जाकर आवश्यक जानकारियाँ संग्रह करके लाने में उनके द्वारा अच्छी भूमिका निभाई जाने की आशा की जा रही है। उसके लिए आवश्यक उपकरण बनाए जा रहे हैं।

मास्को का समाचार है कि सीसिया क्षेत्र के एक गड़रिए का पालतू सारस उसके भेड़ बाड़े की पूरी तरह चौकीदारी, रखवाली

करता है। जब भेड़ें बाड़े में होती हैं, तो वह दरवाजे पर पहरा लगाता है। कोई भेड़ बाहर जाना चाहती है, तो उसे पंख पसार के रोकता है और चोंच से धकेलकर भीतर खदेड़ता है। दिन भर वहीं रहता है जहाँ भेड़ें चरती हैं। कोई खतरा देखता है, तो चिल्लाकर सावधान करता है। जब उसे सोना होता है तब भेड़ों के साथ ही सोता है। इस सारस को गड़रिए ने घायल अवस्था में पहाड़ी पर पड़ा पाया था और उसे घर लाकर पाल लिया था।

मलेशिया में बंदरों द्वारा ऊँचे पेड़ों पर चढ़कर नारियल, सुपाड़ी, खजूर आदि तोड़ने का प्रशिक्षण बहुत सफल हुआ है। मनुष्य की तुलना में उनका कार्य जल्दी ही होता है और सही भी। साथ ही उनके श्रम का मूल्य मात्र मन पसंद आहार देने से ही काम चल जाता है। जबकि उन कामों के करने वाले मनुष्य का वेतन कई गुना अधिक होता है।

वानर जाति के कई वर्ग ऐसे हैं, जिनमें सूझ-बूझ और अनुशासन का अभ्यास करना सरल है। इनमें से चिपांजी, वनमानुष और बस्तियों में पले बंदर अधिक उपयोगी पाए गए हैं। डॉ० मार्केल आंद्रे चिपांजियों को इस योग्य बनाने में लगे हुए हैं कि वे होटलों में सेवा कर्मचारियों का काम कर सकें और आगंतुकों के लिए कौतूहल-मनोरंजन का माध्यम बन सकें। सामान्य दफ्तरों और कारखानों में भी हल्के-फुलके काम कर सकें और श्रमिकों जैसी ड्यूटी देते रह सकें। चौकीदारी के लिए भी उन्हें प्रयुक्त किया जा सके।

बुद्धिमानी केवल मनुष्य के ही हिस्से में नहीं आई। पशु-पक्षियों में भी वह क्षमता मौलिक रूप से विद्यमान है। बड़े भाई के नाते मनुष्य का कर्तव्य है कि वह अपने छोटे भाइयों की बुद्धिमत्ता विकसित करने का कर्तव्य निभाएँ। इससे अनेकों प्राणियों की उपयोगिता बढ़ेगी तथा मनुष्य भी अपने प्रयत्न का समुचित प्रतिफल उनकी विशेष सहायता के रूप में प्राप्त कर सकेगा।

प्रकृति के पाठशाला में कला-संकाय

मनुष्य की कोमल भावनाओं-सूक्ष्म अभिव्यक्ति के तीन साधन हैं—(१) नृत्य (२) संगीत और (३) अभिनय। इनसे आत्मा की स्वाभाविक अभिव्यक्ति होती है, साथ ही जीवन सत्ता के लालित्यपूर्ण और आह्लादकारी गुण का भी पता चलता है। इन्हें मनुष्य की बुद्धि और प्रगतिशीलता का एक मापदंड भी कहा जा सकता है, पर जीवन मनुष्य की ही विरासत नहीं, वह विराट् रूप में बिखरा पड़ा है, जिसमें जीव-जंतु भी आते हैं। विभिन्न कलाओं द्वारा पशु-पक्षी भी अपनी प्रमोदप्रियता का परिचय देते रहते हैं। कभी-कभी तो ऐसा विश्वास होने लगता है कि मनुष्य को ललित कलाएँ सिखाई ही जीवों ने हैं; क्योंकि उनमें से कई में यह कलाएँ अत्यंत प्रौढ़ किस्म की होती हैं।

नृत्य कला प्रकृति के सूक्ष्म रहस्यों तथा भावनाओं की अभिव्यक्ति का एक गूढ़ विज्ञान है। विश्व के अनेक प्रकार के नृत्य विख्यात श्रेणी में आते हैं। इनमें भारत के भरत नाट्यम, कुचिपुड़ि, कत्थक, रूस का बेले तथा यूरोप का डिस्को प्रमुख हैं, किंतु आश्चर्य तब होता है जब कि प्रकृति के परिंदों में भी न केवल उन्नत श्रेणी के अपितु विलक्षण अभिव्यक्ति और भंगिमाओं के नृत्य की परंपरा पाते हैं। मोर इस कला में बादशाह माना जाता है।

यह न केवल ऋतु-नृत्य नाचने में प्रवीण होते हैं अपितु संवादी, आक्रमण, भय आदि अवस्था में भी वे नृत्य कला का उपयोग करते हैं। ऋतु काल का नृत्य जो विशुद्ध प्रेम भावना से प्रेरित होता है, न्यूनतम पाँच मिनट से एक घंटे तक भी चलता है। अपने भोजन या प्रणय क्षेत्र में किसी सजातीय या विजातीय को पाकर वे बहुत तेजी से पंख थरथरा कर तथा सीधी चोंच से प्रहार करते हुए नृत्य करते हैं। मोरों में ईर्ष्या वश भी नृत्य होते हैं। यह किसी दूसरे मोर को नाचता देख कर तब तक किये जाते हैं जब दूसरे मोर को यह आशंका हो जाती है कि कहीं मादा उसी की

ओर आकृष्ट न हो जाए। अन्य नृत्यों को छोड़ कर प्रायः बादलों की गरज-चमक के समय प्रातः और सायंकाल मोर नृत्य करते हैं। काली घटा को देखकर मोर बहुत प्रसन्न होता है और कूहू-कूहू कर नाचने लगता है। मनुष्यों में भी अनेक प्रकार के नृत्यों की परंपरा है। भाव प्रदर्शन दोनों में समान है, फिर मनुष्य को ही उन्नत श्रेणी का क्यों माना जाए ? मार्गदर्शक इस जीव-प्रकृति को ही क्यों माना जाए ?

ध्रुवों की खोज करने वाले वैज्ञानिक बताते हैं कि पेंगुइन की सामाजिक व्यवस्था बहुत विकसित किस्म की है। नर को विवाह की इच्छा होती है, तो वह अपने मुँह में एक पत्थर लेकर इच्छित माता के पास जाता है और इस बात का संकेत देता है कि वह उसके पत्थरों का सुंदर महल बनाने को तैयार है। यदि माता वह पत्थर स्वीकार कर ले तो विवाह पक्का। फिर सभी पेंगुइन इसी खुशी में नाचते-गाते हैं। देखने वालों का तो यहाँ तक कहना है कि इस विवाह नृत्य में नर पेंगुइन मादा की विधिवत् पीठ थपथपा कर 'एक्शन सांग' का-सा दृश्य प्रस्तुत करते हैं। बहुत बार ऐसा भी होता है कि मादाएँ पत्थर लाने वाले नर से संतुष्ट नहीं होतीं, उस स्थिति में वे पत्थर स्वीकार करने की अपेक्षा मुँह फेर कर खड़ी हो जाती हैं। मनुष्य की अपेक्षा यह कितने भले हैं। मनुष्य तो अपने सामाजिक दायित्वों में भी स्वार्थपरता जोड़ने से नहीं चूकता, दहेज की माँग, जेवर-कपड़े, आतिशबाजी नशेबाजी, ऐसी ही दुष्प्रवृत्तियाँ हैं। अन्य जीव तो उनसे मुक्त ही हैं।

हम समझते हैं, कला का वरदान मात्र मनुष्य जाति को ही मिला है। बच्चे को सुलाने के लिए लोरी गाना, मेलों के लिए प्रयाण पर गाए जाने वाले गीत, धान रोपाई के गीत, सावन के मल्हार और ब्याह शादियों पर गाए जाने वाले गीत, मनुष्य की उदात्त कला संस्कृति के प्रतीक माने जाते हैं। लगता है यह उपहार केवल मनुष्य को ही उपलब्ध है। यह गीत तो आत्मा और मन के आह्वान

और प्रसन्नता के प्रदर्शन मात्र हैं और मनुष्येतर जीव भी इस कला में कम पटु नहीं। कोयल के वसंत गान से तो सब परिचित हैं, किंतु अपने घोंसलों का निर्माण करते समय 'रॉबिन' पक्षी तथा 'ओरिओल' के गीत कहीं उससे भी अधिक मनमोहक होते हैं। 'दरजी', 'बया' और 'बुनकर' पक्षी भी गायकों की श्रेणी में आते हैं। यह सब विशेष प्रकार की लय और ताल में गीत गाते हैं। स्काई लार्क के प्रभात गीत तो शेक्सपियर के लिए प्रेरणा स्रोत ही बन गए थे। शेक्सपियर इसे प्रभात दूत कहा करते थे और उसके मधुर संगीत में तन्मय हो जाने के बाद ही साधना किया करते थे। बालजाक को रात में पपीहे का स्वर सुनने को मिल जाता तो वे एक तरह साहित्य साधना में समाधि ही लगा जाते। भावनाशील व्यक्तियों ने सदैव ही जीवों से प्रेरणाएँ पाई हैं। प्रातःकाल उनका चहचहाना, सायंकाल ढलते हुए सूर्य का वंदन करना देखकर हृदय उमड़ने लगता है। यदि मनुष्य ने अपना जीवन कृत्रिम नहीं बनाया होता, उसने भी इनकी तरह अपने को बंधन मुक्त रखा होता, तो उसका जीवन भी कितना रसमय रहा होता, यह स्पष्ट अनुभव किया जा सकता है।

एक बार तो ह्वेल मछली के संगीत को टेप करने का भी प्रबंध किया गया। उसके जो परिणाम प्राप्त हुए वे और भी आश्चर्यजनक हैं। सर्वप्रथम एक ह्वेल मछली ने संगीतमय ध्वनि से नौ बार 'क्लिक-क्लिक' की ध्वनि की। इसके बाद एक दूसरी ह्वेल ने वैसी ही ध्वनि सात बार की, फिर दोनों ने नौ बार वही ध्वनि समवेत दुहराई, इसके बाद क्रमशः ५४, ६ तथा ७ बार ध्वनि टेप की गई। इस संगीत ध्वनि के समय का दृश्य इस बत का साक्षी है कि मछलियों के पास अक्षरों और शब्दों का सुविस्तृत भंडार भले ही न हो, पर उन्हें अपने विचार विनिमय में कोई दिक्कत नहीं होती। पहले दोनों ह्वेलें एक नर और एक मादा अलग-अलग स्थानों में थीं। नौ और सात की ध्वनि से उन्होंने अपने मिलने का स्थान निश्चित किया। ५४

बार क्लिक की आवाज के द्वारा उन्होंने कोई बात तय की, फिर सात और नौ क्लिक के बाद दोनों दो भिन्न दिशाओं की ओर मुड़ गईं। इनके संगीत में कुछ ऐसा आकर्षण होता है कि इनका शिकार स्वयं ही इनकी ओर चला आता है।

जापान की एक फर्म ने तो अत्यंत संवेदनशील इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की सहायता से ऐसे विशेष संगीत रिकॉर्ड तैयार किए हैं, जो कुत्तों और बिल्लियों का क्रोध शांत करने, उनको मानसिक शांति प्रदान करने में सहायक होते हैं। इन रिकॉर्डों का व्यावसायिक उत्पादन प्रारंभ भी कर दिया गया है और अमेरिका उनका सबसे बड़ा खरीददार है। संगीत आत्मा की अदम्य आकांक्षा है। ऐसा लगता है, उसका संगीत से कोई सनातन संबंध है। तभी उसे इतना रस आता है। आज जबकि भौतिक आकर्षणों की दौड़ में हर व्यक्ति बुरी तरह परेशान है, तब उसके मन और अंतःकरण को इसी तरह संगीत माध्यमों से राहत पहुँचाई जा सकती है।

दक्षिणी अफ्रीका में पाया जाने वाला एक पक्षी तो नृत्य में इतना पटु होता है कि उसका नाम ही 'दि डांसर्स' पड़ गया है। न्यूजीलैंड में पाई जाने वाली 'बर्ड आफ पैराडाइस' में तो विवाह के अवसर पर विधिवत् स्वयंवर होता है। एक विशेष ऋतु में सभी विवाह योग्य युवक पक्षी एक ओर पंक्तिबद्ध खड़े हो जाते हैं, युवतियाँ उसी तरह दूसरी ओर, बालक व वृद्ध पक्षी दर्शक के रूप में तीसरी पंक्ति में। अब कोई एक पक्षी बाहर निकलकर नाचना प्रारंभ करता है। युवतियाँ ध्यान से उसका अंग परिचालन देखती हैं; जिस युवती को वह नृत्य पसंद आ जाता है, वह बाहर आकर उसकी चोंच में चोंच डालकर अपनी सहमति व्यक्त करती है। फिर दोनों मिलकर नाचते और गाते हैं, इस तरह वे अपना जोड़ा बना लेते हैं। जबकि मनुष्य की दांपत्य बनाने की परंपरा कितनी जटिल होती है कि आए दिन गृहस्थ जीवनों में विग्रह-विद्रूप खड़े होते

रहते हैं, उनसे मुक्ति के लिए मनुष्य जाति को बहुत कुछ इन जीवों से सीखना पड़ेगा।

नृत्य कला में यों प्रवीण मोर को माना जाता है, किंतु कलापारखी मकड़े के नृत्य को अधिक उत्कृष्ट मानते हैं। भले ही अपनी नैसर्गिक सुंदरता के अभाव में वह किसी का ध्यान आकृष्ट नहीं कर पाता हो। मकड़े प्रायः अपनी मादा को प्रसन्न करने के लिए नाचते हैं, किंतु यह जोखिम बड़ा घातक होता है। यदि मकड़ी अप्रसन्न हो गई तो बेचारे को जान से भी हाथ धोना पड़ता है। मकड़े के सिर पर एक श्वेत कलगी जैसी होती है, नृत्य करते समय यदि वह मकड़ी को इसे दिखाने में सफल हो जाता है तो मकड़ी निश्चित रूप से प्रसन्न होती है। आठ, दस मकड़ों का सामूहिक नृत्य तो और भी दर्शनीय होता है।

जीव-जंतुओं के अधिकांश नृत्य मादा को रिझाने या उनके सामूहिक विवाह के अवसरों पर होते हैं। इस कला में बिच्छू भी प्रवीण होता है। बिच्छुओं में नर व मादा के साथ-साथ नृत्य करने की परंपरा है। जब तक थक कर चकनाचूर न हो जाये, तब तक इनका नृत्य चलता रहता है। यह आगे-पीछे कदम बढ़ाकर नाचते हैं, गोल चक्कर में नहीं।

नृत्य कला एक महत्त्वपूर्ण व्यायाम भी है। इससे योगासनों के लाभ भी मिलते हैं, यदि इसे विशुद्ध कला की दृष्टि से विकसित किया जाए। 'भेफ्लाई' नाम की मक्खी का नृत्य ऐसा ही होता है। वह उड़कर, उठ-बैठकर, लेटकर नाना प्रकार से नृत्य करती है, यह मक्खियाँ खा-पी नहीं सकतीं, क्योंकि इनके मुख नहीं होता। श्वास से ये आहार लेती हैं। शुतुरमुर्ग के लिए नृत्य पूरी तपश्चर्या है, वे अपनी प्रेयसी को प्रसन्न करने के लिए एक पैर से भी थिरकते हैं। इतने पर भी वे प्रसन्न न हो, तो उस टाँग को भी तोड़कर नृत्य करता है, तब कहीं देवी प्रसन्न होती है ?

वर्षा ऋतु में जब पानी बरसता है तो मोरों की तरह बत्तख भी पानी में तैरते हुए नृत्य करती हैं। मछलियाँ भी शृंगारिकता की

भावना से नृत्य करती हैं, पर इनकी मुद्राएँ और हाव-भाव उतने सूक्ष्म होते हैं जैसे भारत नाट्यम और कत्थकली। घोंघे को यों सुस्तों का बादशाह कहा जाता है। एक स्थान पर पड़े रहना ही उसका काम है। किंतु किसी ने नृत्य गीत कला को सच ही प्रकृति की नैसर्गिक चेतना कहा है। इससे मानव मन के लालित्य का पता चलता है। सदियों से इस कला का सांस्कृतिक परंपरा के रूप में विकास किया गया है और अब यह मनोरंजन का मूल साधन बन गया है। किंतु उसका उद्देश्य मात्र शृंगारिकता रहे तो मनुष्य और अन्य जीवों में अंतर ही क्या रहे ? वह तो घोंघा जैसा आलसी प्राणी भी कर लेता है। घोंघा मादा के आस-पास घूम कर गुनगुनाता हुआ नृत्य करता है, किंतु उसे कला साधना का रूप दिया जाए तो इसके माध्यम से सूक्ष्मातिसूक्ष्म भावों का भी प्रदर्शन संभव है। जैसा कि भारतीय नृत्यों की शैली से स्पष्ट है।

नृत्य-गीत ही नहीं, मनोविनोद और क्रीड़ा का स्वाभाविक जीव-गुण भी इन पक्षियों में पाया जाता है। कुत्ते और बंदरों को अपने बच्चों से खेलते कभी भी देखा जा सकता है। तोते और कनेरियाँ पेड़ पर लटक-लटक कर झूलते और विचित्र तरह से कह-कहा लगाकर अपनी प्रसन्नता व्यक्त करते हैं। पीलक, बया परस्पर एक-दूसरे से ठिठोली करते देखे जा सकते हैं। न्यूनाधिक मात्रा में यह गुण हर जीव में होता है।

अमरीका में पाई जाने वाली 'मॉकिंग बर्ड' अपनी विनोदप्रियता के लिए विख्यात है। यह न केवल मनुष्यों की अपितु दूसरे पशु-पक्षियों की आवाज की भी नकल उतारने में बड़ी पटु होती है। उसके इस स्वभाव का बूढ़े, बच्चे सभी आनंद लेते हैं। वह स्वयं भी इससे बड़ी प्रसन्न होती है।

एक बार इंगलैंड में एक पक्षी ने वहाँ के लोगों को असमंजस में डाल दिया। वे लोग जब प्रातःकाल सो रहे होते तो वृक्षों की ओर से मनुष्यों की सी खिलखिलाकर हँसने की, कभी-कभी तो अट्टहास की ध्वनि आती और उनकी नींद टूट जाती। लोग परेशान थे कि आखिर यह हँसता कौन है ? पीछे पता चला कि

यह और कोई नहीं 'कूकाबड़ा' पक्षी है, जो कुछ दिन पहले ही आस्ट्रेलिया से इंग्लैंड आ गए थे।

एक मनुष्य है जो दूसरों को समुन्नत देखकर ईर्ष्या, विद्वेष, राग-रोष और तृष्णा की कीचड़ में सड़ता रहता है। दूसरी ओर यह जीव हैं, जो कितने आनंद और उल्लास का उन्मुक्त जीवन जीते हैं। इनका जीवन समस्या रहित है, उसमें कुछ भी जटिलता नहीं। समस्याएँ तो मानवीय दुर्गुण और मनोविकार हैं, उनसे मुक्ति पाना है तो मनुष्य को भी ऐसा ही सहज और सरल जीवनक्रम अपनाना पड़ेगा।

नृत्य, गीत, मनोविनोद की भाँति अभिनय भी आत्माभिव्यक्ति का एक साधन है। यह अलग बात है कि मनुष्य अपनी इस कला में बहुत निष्णात हो गया है। पर यह भी सच है कि झूठी अभिनय बुद्धि के कारण सर्वत्र अभिनय ही अभिनय शेष रह गया है। यथार्थ से मनुष्य कोसों दूर हटता जा रहा है। पति-पत्नी के संबंधों, बच्चों के पालन-पोषण, सामाजिक दायित्वों के निर्वाह में कलाबाजी अधिक, सच्चाई और ईमानदारी कम है। यदि अभिनय का उद्देश्य सत्य की प्रतिष्ठा, मानवीय मूल्यों के प्रति संवेदना जाग्रत करना न होकर मात्र मिथ्या प्रदर्शन और दूसरों को भ्रम में डालना ही हो, तब तो यह जीव ही हमसे अच्छे। अभिनय की कला यह भली भाँति जानते हैं।

मेंटिस कीड़ा को यह ज्ञात है कि उसका रंग हरा होता है, तभी तो वह पत्तों के बीच अपनी दोनों टाँगें इस प्रकार ऊपर करे लेट जाता है, मानो किसी पौधे की जड़ से निकले दो किल्ले फूटे हों। कीड़े की शक्ल में तो ऐसा लगता है मानो किसी से प्रार्थना कर रहा हो, पर यह वास्तव में शिकार पकड़ने के लिए उसका बगुलाभक्तपना है। मृतक की सी स्थिति में पड़े इस कीड़े के समीप से यदि कोई शिकार निकला तो वह अत्यंत द्रुतगति से उठ खड़ा होता और चिमटे की शक्ल की अपनी दोनों टाँगों में उसे धर दबोचता है।

स्पाइडर केकड़े पानी के पौधों या काई को अपने शरीर में लगा लेते हैं। उनमें से कई पादप तो विधिवत् जड़ पकड़ लेते हैं। इस तरह वह एक हरी भरी पहाड़ी का लघु संस्करण प्रतीत होने लगता है और तब क्या मजाल जो कोई भी व्यक्ति या जानवर इन्हें बहुत पास से पहचान ले।

दंड कीट और अमरीकी 'वाकिंग स्टिक' के नामकरण से ही यह पता चलता है कि वे लकड़ी की टहनियों के बीच किस तरह सादृश्य बना लेते हैं कि उनके और लकड़ी के मध्य अंतर करना भी संभव नहीं रह जाता। 'मॉथ' का नन्हा बच्चा तो अपने अस्तित्व की रक्षा भी केवल इसी कारण कर पाता है। यदि वह लकड़ी की किसी टहनी में चिपक कर स्वयं भी पूर्ण विकसित होने तक वह एक नन्हीं डाली न बना रहे तो कोई भी जीव उसे विकास के प्रारंभिक चरण में ही सफाचट कर डाले।

कैमीला तितली, फ्लावर फ्लाई तथा कुछ रंगीन सर्पों में अपने रंग की प्रकृति में छुप जाने की प्रवृत्ति होती है। कुछ जीव तो इस कार्य के लिए विधिवत् मनचाहा रंग भी उत्पन्न कर शरीर की स्थिति के अनुरूप रंगीन वातावरण में डालने तक की क्षमता रखते हैं। इस विधा को कैमोफ्लेजिंग कहा जाता है, जो मिलिट्री, सिखाई जाती है।

कुछ जीवों में गोल छल्ले की आकृति में, कुछ में ढेले की शक्ल में लुढ़क जाने की प्रवृत्ति होती है, इनमें घिनहरी (गिंजाई) काँतर कंगारू वर्ग का आर्मेडिला आदि प्रमुख होते हैं। भूरे बटेर में भी छिपने की ऐसी प्रवृत्ति पाई जाती है। कई बार खोजी इनके आस-पास ही चक्कर काटते रहते हैं और यह साँस साधे मिट्टी बने पड़े रहते हैं, किंतु वहाँ से जरा हटे कि फुर्र से उड़ जाते हैं।

मनुष्य का जीवन कलाओं को समर्पित रहे तो उसे सर्वत्र आनंद-आमोद छलकता दिखाई देता रह सकता है, किंतु यदि वह

इन्हें भी स्वार्थ साधन, मिथ्या प्रदर्शन के लिए अपनाता है, तो इससे बढ़कर दुर्बुद्धि और क्या हो सकती है ?

प्रकृति का अनुपम शिक्षण प्रभाग

'मेडिसिन' के छात्रों को एम० बी० बी० एस० का कोर्स पढ़ाते समय प्रिवेंटिव एवं सोशल मेडिसिन का शिक्षण दिया जाता है। इतने चिकित्सक फिर भी रोगों से सुरक्षा कहीं होती नहीं देखी जाती। यदि इसे देखना हो तो वन्य जीवों में देखें, जो इसका परिपालन ही नहीं करते, मनुष्य को उसका शिक्षण भी देते हैं।

सृष्टि के वन्य जीवों में मनुष्य की सैकड़ों विशेषताएँ हैं। वह सफाई पसंद करते हैं, करना भी चाहिए, क्योंकि जो साफ-सुथरा रहता है, गंदगी से बचता है, वही केवल स्वस्थ व निरोग रह सकता है। स्वास्थ्य विज्ञान की लंबी जानकारियों के आधार पर यह नियम बनाया गया है। पर मधुमक्खी के पास इस तरह के नियमों का ज्ञान देने वाला कोई विद्यालय नहीं, स्वास्थ्य के नियमों का उसे पता नहीं, फिर भी मधुमक्खी के उपनिवेश में सफाई का उतना ही ध्यान रखा जाता है, जितना रानी की सुरक्षा का। कोई मधुमक्खी मर जाए, तो उसके सड़ने-गलने और बदबू फैलाने से पूर्व ही मधुमक्खियाँ उसके शव को छत्ते से १५ से २० गज की दूरी पर बाहर फेंक आती हैं। उनमें एक क्रम रहता है, प्रतिदिन नियत समय पर मक्खियाँ उड़ान करती हैं और छत्ते से बाहर टट्टी कर आती हैं। इसका अर्थ है कि यदि मकान की सफाई न रखी गई, उसमें गंदगी फैलने दी गई, तो उससे सारी कालोनी में महामारी फैल सकती है। यह ज्ञान शरीर का नहीं, उस आत्मा का है, जो मनुष्य और मक्खी दोनों में एक समान है।

श्री रक्षपाल लिखित पुस्तक 'कीटों में सामाजिक जीवन' में बताया गया है कि यदि कोई चूहा किसी दीमक के किले में घुस जाता है, तो रक्षक दीमक उस पर अपने डंकों का प्रहार करके उसे मार डालते हैं। संगठित आक्रमण और प्रकृति प्रदत्त साधनों के उपयोग से वे शत्रु पर विजय पा जाते हैं, पर बेचारे

कण जैसे कीट उतने वजन के चूहे के शव को बाहर किस तरह निकालें। जब तक वह सड़ गल कर समाप्त हो—तब तक तो उनके घर में इतनी बदबू फैल सकती है, जो उन सबका नाश कर दे, इसलिए वे दूसरी युक्ति से काम लेते हैं व मनुष्य से अधिक चतुरता का परिचय देते हैं। लोग तो जंगल या खुले मैदान में टट्टी जाते हैं और टट्टी छोड़ आते हैं, इस दृष्टि से दीमक बुद्धिमान् हैं, क्योंकि वे तुरंत एक प्रकार का द्रव्य प्रोपोलिस बनाते हैं और उसकी मोटी परतों वाली वार्निश उसके शरीर में कर देते हैं। गंदगी का एक झोंका भी बाहर नहीं जा पाता। एक बार कपूर की एक ढेली इनके महल में फेंक कर देखी गई। जितनी देर में कपूर की गंध उपनिवेश में फैले, दीमकों ने उसे इस द्रव्य से कीलित कर दिया।

मनुष्य बड़ा भारी इंजीनियर है, भाखड़ा बाँध से लेकर सेटेलाइट, कंप्यूटर आदि तक की डिजाइनिंग में उसने जो बुद्धि खर्च की है, उसे देखकर लगता है कि यह दूसरा परमात्मा है, पर यदि यही योग्यता किसी तुच्छ प्राणी में हो तो उसे भी परमात्मा का अंश ही कहा जाएगा। जीव वैज्ञानिक डॉ० बेल्ट ने हिमालय की ४००० फुट ऊँची एक चोटी पर चढ़कर एक ऐसे चींटी परिवार का अध्ययन किया, जो गृह निर्माण कर रहा था। जहाँ वे घर बना रही थीं, वह एक नदी का कगार था। बिल से निकाली हुई मिट्टी नीचे गिर जाती थी और इस कारण मकान का सहन उम्दा नहीं बन पा रहा था। अंत में इस स्थिति से निपटने का काम कुछ विशेषज्ञ चींटियों को सौंपा गया। उन्होंने उस स्थान का विधिवत् निरीक्षण कर एक योजना बनाई। उस योजना के अनुसार मजदूर चींटियों को भीतर के काम से हटाकर पहले छोटी-छोटी कंकड़ियाँ बीनकर लाने का आदेश दिया गया। वह सब कंकड़ बीनकर लाई और इस तरह पहले एक मजबूत पथ बना दिया गया, तब आगे का काम प्रारंभ हुआ। अब मिट्टी के लुढ़कने की कोई गुंजाइश नहीं रही।

बुनने के कार्य में कई तरह की चिड़ियों ने बड़ी उन्नति की है। हमारे देश में इसके लिए बया का घोंसला बड़ा प्रसिद्ध है। वह घास के तिनकों को ऐसी कारीगरी से बुनती है कि उसका घोंसला एक दर्शनीय वस्तु बन जाता है। उसके भीतर न तो पानी जाता है और न कोई शत्रु, साँप, बंदर, कौआ आदि भीतर घुस कर अंडों या बच्चों को कुछ हानि पहुँचा सकता है।

इससे मिलती-जुलती एक चिड़िया अमेरिका में भी होती है, जो अपना घोंसला बड़ा सुंदर बनाती है। कितने ही लोग इनकी कारीगरी देखने के लिए रंग-बिरंगा ऊन उनके निवास स्थान के पास रख देते हैं। चिड़ियाँ इसीं का प्रयोग अपने घोंसले बनाने में करती हैं। जब ये रंग-बिरंगे घोंसले पेड़ों में लटकते हुए दिखाई पड़ते हैं तो उनकी शोभा विचित्र दिखाई देती हैं। उनमें अनायास ही ऐसे अद्‌भुत और आकर्षक डिजाइन बन जाते हैं कि फिर स्त्रियाँ और पुरुष उनकी नकल करने लगते हैं। भारतवर्ष में एक दर्जी चिड़िया भी पाई जाती है। यह अपने घोंसले को केवल बुनती ही नहीं वरन् लटकती हुई पत्तियों को घास का प्रयोग करके इस प्रकार सी देती है, जैसे दो फीतों के बीच कोई झूला (हिंडोला) लटक रहा हो। इसी लटकते हुए कटोरे के बीच उसका घोंसला टिका रहता है।

मनुष्य ने सीखा है प्रकृति से विज्ञान

विज्ञान के क्षेत्र में मनुष्य ने जितनी प्रगति की है, उसकी जितनी प्रशंसा की जाए कम है। पनडुब्बी, राडार, हेलीकॉप्टर, ग्लाइडर्स आदि के आविष्कार बीसवीं सदी के प्रारंभ के माने जाते हैं। इसके बाद तो माइक्रोचिप्स, सेमीकंडक्टर्स आदि के आने के बाद साइबरनेटिक साइंस ने तकनीकी क्षेत्र में अद्‌भुत क्रांति ला दी है। पर विज्ञान की प्रगति के प्रारंभिक चरण में मानवी अन्वेषण बुद्धि के लिए उत्प्रेरक की, प्रेरणा की भूमिका प्रकृति ने ही निभाई। अनेकों आविष्कारों के लिए श्रेय मानवी बुद्धि को नहीं, प्रकृति के सहचर इन जीव-जंतुओं को दिया

जाना चाहिए। अभी-अभी पिछले दिनों वैज्ञानिक क्षेत्र में एक नए तकनीक का विकास हुआ है, जिसे बायोनॉमिक्स कहते हैं। इस पद्धति में हजारों शोधकर्ता प्रकृति का अध्ययन गहराई से करने में लगे हैं। बायोनॉमिक्स में प्रकृति के सभी जीव-जंतुओं का अध्ययन, उनकी शारीरिक विशेषताओं का गूढ़ पर्यवेक्षण इसलिए किया जाता है कि उनके आधार पर नए प्रयोग-परीक्षण किए जा सकें। इस क्षेत्र में लगे वैज्ञानिकों का कहना है कि जीव-जंतुओं के क्रिया-कलापों में इंजीनियरिंग के महत्त्वपूर्ण सिद्धांत छिपे हैं। उनको समझा और अपनाया जा सके तो भौतिक क्षेत्र में मानव अब की अपेक्षा कई गुना आगे बढ़ सकता है।

शोधकर्ताओं का मत है कि मनुष्य ने मौलिक रूप से कुछ नहीं किया है। प्रकृति की नकल उतार कर प्रेरणा ग्रहण कर ही वह विकास की वर्तमान अवधि तक पहुँच सका है। बायोनॉमिक्स के अध्ययन में लगे वैज्ञानिकों का कहना है कि प्रकृति संसार की सबसे कुशल प्रशिक्षक है। समय-समय पर वह मूक रूप से मनुष्य को पाठ पढ़ाती रहती है। उसकी प्रेरणा एवं प्रशिक्षण को सही रूप से जीवन में उतारा जा सके तो सर्वांगीण प्रगति का आधार बन सकता है।

अब तक की प्रगति की समीक्षा करने पर यह तथ्य और भी स्पष्ट हो जाता है कि इंजीनियरिंग क्षेत्र में जितना विकास हुआ है-वह प्रकृति के जीव-जंतुओं की नकल मात्र है। मेंढक की संरचना एवं देखने की पद्धति पर आधारित अनेकों यंत्रों का निर्माण हो चुका है। मेंढक की यह विशेषता है कि वह जीवित कीटकों का ही भक्षण करता है। जीभ की परिधि में आने वाले कीटकों को ही उसके आँखें देख सकती हैं। नीचे पड़े हुए मृत जंतुओं पर प्रायः उसकी दृष्टि नहीं पड़ती है। एक प्रयोग में जान्स हाप आप और ह्यूमर जोन नामक कीट शास्त्रियों ने मृतक मक्खियों का ढेर मेंढक के पास लगा दिया। मक्खियों में गति न होने के कारण मेंढक की आँखें उन्हें नहीं

देख सकीं। उनकी आँखों की बनावट ऐसी होती है कि वे गतिशील वस्तुओं को ही देख पाती हैं तथा उन्हीं का संदेश भी मस्तिष्क पर पहुँचाती हैं। मेंढक की आँख की संरचना एवं क्रिया-पद्धति के आधार पर मिलिट्री मेप रीडिंग के लिए आँखें बनाने में सफलता मिली है। अमेरिका की हवाई-सुरक्षा पद्धति में जिसे 'आटोमेटिक ग्राउंड इन्वाइरनमेंट' (ए० जी० ई०) कहते हैं, ऐसे ही राडार का प्रयोग किया जाता है। जिस प्रकार मेढक की आँख मात्र अपने दुश्मनों एवं आहार को ही देखती हैं, उसी प्रकार ए० जी० ई० का राडार भी कार्य करता है। सामान्यतया कई वस्तुएँ आकाश में एक साथ दिखाई पड़ने के कारण असुविधा बराबर बनी रहती थी। उड़ने वाले यान अपने हैं या दुश्मन के इस निर्धारण में पर्याप्त समय लग जाता है। इस असुविधा का हल निकल आया है—ए० जी० ई० राडार द्वारा। मेंढक की आँख के समान यह राडार मात्र दुश्मन के यानों का ही अंकन करता है। हवाई दुर्घटनाओं को रोकने एवं यानों के आवागमन पर समुचित निगरानी बनाए रखने के लिए भी मेंढक की नेत्र पद्धति पर आधारित एयर ट्रैफिक रेडारस्कोप का निर्माण हुआ है।

रेटल स्नेक एक विशेष प्रकार का सर्प होता है। वह अधिक गरम रक्त वाले जंतुओं का ही शिकार करता है। तापमान जानने के लिए उसके मस्तिष्क पर एक विशेष संवेदनशील यंत्र होता है, जो एक डिग्री के हजारवें हिस्से तक का अंतर माप सकता है। इस यंत्र द्वारा वह इन्फ्रारेड किरणों को भी ग्रहण कर सकता है। वैज्ञानिकों ने इसके अध्ययन से प्रेरणा लेकर ऐन्टी एयर साइड विंडर मिसाइल ओर रिमोट-टेंपरेचर सेंसिग जैसे उपकरणों का निर्माण किया है। इन यंत्रों से सूक्ष्मतम ताप नापने की आवश्यकता पड़ती है। आज की विकसित इन्फ्रारेड सेंसिग पद्धति भी इन्हीं सिद्धांतों के आधार पर कार्य करती है। इन्फ्रारेड सेंसिग पद्धति द्वारा संसार

के किसी भी कोने से छोड़े गए राकेट के विषय में कुछ ही क्षणों में पता लगाया जा सकता है। 'कोनिकल चेंबर विंग' के निर्माण को देखकर मानवी मस्तिष्क की सराहना करने को मन करता है, पर इसके निर्माण की प्रेरणा भी पक्षियों से मिलती है। आकाश में तेज गति से उड़ने वाले समुद्री पक्षियों के पंखों की संरचना को देखकर जहाजों में स्थिरता देने के लिए उक्त विंग का निर्माण संभव हो सका है।

बाँध कैसे बनाए जायें? यह मनुष्य ने बीवर से सीखा है—बीवर वस्तुतः खरगोश जाति का ही एक छोटा-सा जंतु है, जिसकी लंबाई पूँछ समेत चार फुट से कम ही होती है। यह अपने रहने के लिए नदी किनारे ऊँचे बाँध खड़े करता है और संरक्षित घर बनाकर सुखपूर्वक रहता है। यह बाँध लकड़ी के लट्ठों, मोटी टहनियों, पत्थरों तथा कड़ी मिट्टी के सहारे बनाए गए होते हैं। बीवर समुदाय बनाकर यह रचना करते हैं। वे जिस पेड़ को उपयुक्त समझते हैं, उसकी जड़ें दाँतों से काटने में जुट पड़ते हैं और अंततः उसे धराशायी करके ही छोड़ते हैं। इन पेड़ों के दो टुकड़े काटकर वे मिलजुलकर उन्हें घसीट लाते हैं और जमीन में गाड़कर बाँध की इतनी मजबूत नींव रखते हैं कि जिस पर पत्थर, लकड़ी आदि जमाते हुए बाँध को नदी की सतह से १२ फुट ऊँचा तक ले जाया जा सके, यह बाँध ५०० फुट तक लंबे पाए गए हैं और इतने मजबूत देखे गए हैं कि नदी का पानी टकरा कर उन्हें हिला न सके वरन् तिरछा वापस लौटने लगे। एक बाँध में दर्जनों बीवर परिवार रहते हैं। मध्य योरोप में नदी तटों पर पाया जाने वाला यह छोटा-सा जंतु अपनी श्रमशीलता और सूझ-बूझ के कारण मनुष्यों के लिए आदर्श बन गया है।

वैसे देखा जाए तो सामान्य से लेकर असामान्य भौतिक विज्ञान की सभी उपलब्धियाँ प्रकृति प्रेरणाओं द्वारा ही प्राप्त हो

सकी है। 'बायोनॉमिक्स' की सबसे महत्त्वपूर्ण उपलब्धि 'इलेक्ट्रॉनिक्स' के क्षेत्र में हुई है। अमेरिका की एअर बार्न इन्स्ट्रूमेंट लेबोरेटरी ने एक ऐसी कृत्रिम आँख बनाई है, जो सामान्य कोशिकाओं से कैंसर कोशिकाओं को पृथक् दर्शाती है। उक्त सूक्ष्म दर्शक यंत्र की प्रेरणा मानवी आँख से मिली है। लिंकन लेबोरेटरी एवं जनरल इलेक्ट्रिक कंपनी ने एक ऐसे यंत्र का निर्माण किया है जो मानवी आँख की क्रिया-पद्धति का अनुसरण करती तथा गतिशील वस्तुओं की वास्तविक दूरी का बोध करा सकती है।

कंप्यूटर के निर्माण पर वैज्ञानिकों को गर्व है, पर एक सामान्य कीड़ा कहीं उससे अधिक सक्षम एवं सक्रिय है। उड़ती हुई मक्खी को पकड़ने में एक शिकारी कीड़े को एक सेकंड का बीसवाँ भाग लगता है, जो कि किसी भी कंप्यूटर की क्रिया पद्धति से कहीं अधिक सशक्त है। डॉ० वैरन मैकुबाला इस कंप्यूटर प्रणाली के मूर्धन्य वैज्ञानिक हैं, उनका कहना है कि 'कंप्यूटर जटिल मंद बुद्धि वाले पशु कहे जा सकते हैं, उनमें सबसे पिछड़ी हुई चींटी जितना भी मानसिक क्षमता नहीं होती। जो कार्य चींटियाँ कर सकती हैं, वह शक्तिशाली कंप्यूटर द्वारा भी संभव नहीं है।'

मछली के फेफड़ों का अध्ययन किया जा रहा है कि उसमें ऐसी कौन-सी विशेषता है जिसके द्वारा पानी रहते हुए भी ऑक्सीजन ग्रहण करती तथा कार्बनडाइऑक्साइड छोड़ती है ? इससे पनडुब्बियों के परिष्कृत उपयोग में मदद मिलेगी। डाल्फिन मछली के मुँह के निकट एक विशेष प्रकार की इलास्टिक त्वचा होती है, जिससे वह ६० प्रतिशत मुँह से खिचाव को कम कर सकती है। यू० एस० रबर कंपनी जहाजों एवं पनडुब्बियों के उपयोग के लिए डाल्फिन मछली से प्रेरणा लेकर 'प्लाएबिल रबर स्किन' के निर्माण में संलग्न है।

बायोनॉक्स की शोध में विश्व के हजारों जीवशास्त्री भौतिकवादी, रसायन शास्त्री, इलेक्ट्रॉनिक्स के विशेषज्ञ, इंजीनियर, गणितज्ञ लगे हुए हैं। वे जीवों की बॉयोलॉजिकल संरचनाओं के रहस्योद्घाटन करके भौतिक क्षेत्र के नवीन प्रयोग-परीक्षणों में जुटे हैं। भौतिक प्रगति में प्रकृति प्रेरणाएँ असामान्य रूप से सहायक सिद्ध हुई हैं। मनुष्य ने जीवों से भरपूर लाभ उठाया है और आगे भी उठाएगा, इसी कारण उसे बुद्धिमान् कहा जाता रहा है।

पर प्रकृति प्रेरणाओं का एक और भी पक्ष है, जिसका अनुसरण कहीं अधिक आवश्यक है—जीव-जंतुओं का प्राकृतिक जीवन क्रम। सहजता, सरलता, उमंग, उत्साह से भरी दिनचर्या। कृत्रिमता से दूर सहजता, सरलता, उमंग, उत्साह से भरी दिनचर्या। कृत्रिमता से दूर हटकर स्वास्थ्य, प्रसन्नता एवं प्रफुल्लता से भरे जीवन के लिए मनुष्य को भी पशु-पक्षियों की प्राकृतिक दिनचर्या से प्रेरणा लेनी होगी। न केवल जीव-जंतुओं वरन् प्रकृति का प्रत्येक घटक मनुष्य को प्रेरणा देने में समर्थ है। स्वास्थ्य ही नहीं, मानवी एकता, समता, शुचिता, सहकार एवं सौहार्द्र को विकसित करने के लिए भी प्रकृति का अध्ययन करना होगा। सृष्टि की सुव्यवस्था एवं संतुलन प्रत्येक अणु, परमाणु के परस्पर सहयोग पर ही आधारित है। मानवी एकता एवं आत्मीयता का आधार भी यही है। मनुष्य ने प्रकृति की नकल द्वारा यांत्रिक प्रगति की है। शांति और संतोष से भरे स्नेह-आत्मीयता, सौहार्द्र से स्निग्धता, प्रसन्नता से ओत-प्रोत जीवन की प्राप्ति के लिए भी प्रकृति के परस्पर के सहकार-सहयोग की प्रेरणाओं को भी अपनाना होगा। बायोनॉमिक्स की उपलब्धियों का सही उपयोग वही है।

ब्रह्म विद्या का पाठ प्रकृति के आँगन में

ज्ञान प्राप्ति के लिए चिरकाल तक तप-अनुष्ठान करने के बाद भी जब दत्तात्रेय को अपनी उपलब्धियों से संतोष न हुआ, तो वे ब्रह्म के पास पहुँचे। विधिवत् अर्चन-वंदन करके दत्तात्रेय ने

कहा--'भगवन् ! मैं उपयुक्त गुरु की खोज करने के लिए अब तक कई स्थानों पर पहुँचा, परंतु मुझे कहीं भी ऐसा नहीं लगा कि जिसकी मुझे आवश्यकता थी वह मुझे प्राप्त हो गया है। कृपा कर ज्ञान का मार्ग बताइये।'

'जिससे ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है वह सद्गुरु तो प्रत्येक व्यक्ति के अंतःकरण में विद्यमान है।' ब्रह्मा ने कहा--'वत्स ! आवश्यकता केवल उस गुरु को खोजने की है--जिस व्यक्ति का अंतःकरण कषाय-कल्मषों से मुक्त हो गया है, तपश्चर्या और साधना द्वारा जिसने अपने मल-विकारों को नष्ट कर लिया है तथा अंतःकरण को पवित्र-निष्कलुष बना लिया है, वह व्यक्ति अपने चारों ओर विस्तीर्ण प्रकृति को देखकर ही धर्म और अध्यात्म का तत्त्वज्ञान सीख सकता है।'

प्रजापति ब्रह्मा से यह सूत्र प्राप्त कर दत्तात्रेय पृथ्वी पर लौट आए और उन्होंने प्रकृति में घटने वाली छोटी से छोटी घटनाओं को देखकर उनका निरीक्षण कर ब्रह्म-विद्या का अध्ययन किया और जीवन मुक्त हो गए। प्रकृति की खुली हुई पुस्तक पढ़कर अपने आस-पास घटने वाली सामान्य घटनाओं का निरीक्षण करके दत्तात्रेय ने जब अध्यात्म ज्ञान की सिद्धि प्राप्त कर ली तो वे उन्मुक्त विचरण करते हुए जन-जन को आध्यात्मिकता का संदेश सुनाने लगे। राजा से रंक तक और भोगी से योगी तक हर कोई उनकी अमृतवाणी श्रवण कर आह्लाद का अनुभव करने लगता है।

एक बार राजा यदु ने दत्तात्रेय से पूछा--'महात्मन् ! संसार के अधिकांश लोग काम और लोभ के वश होकर कष्ट पा रहे हैं। आपने यह जीवनमुक्त अवस्था कैसे प्राप्त की ? कृपा कर आप मुझे यह बताइये कि आपको आत्मा में ही परमानंद का अनुभव कैसे होता है तथा आपने यह अपने किस गुरु के चरणों में बैठकर प्राप्त की है ?

ब्रह्मवेत्ता दत्तात्रेय जी ने उत्तर दिया—'मैंने अपने अंतःकरण से अनेक गुरुओं द्वारा मूक उपदेश प्राप्त किया है।'

राजा यदु की जिज्ञासा और बढ़ी तथा उन्होंने पूछ ही लिया—अनेक गुरु ? किस प्रकार ? क्या नाम हैं उन गुरुओं के ?

एक साथ किए गए इन प्रश्नों का उत्तर देते हुए दत्तात्रेय ने कहा—'राजन् ! ज्ञान प्राप्ति के लिए अकेले गुरु से ही काम नहीं चलता, उसके लिए अंतःकरण में स्थित सद्गुरु की शरण भी जाना पड़ता है, जो कौन गुरु है और क्या शिक्षा दे रहा है ? इसका विवेचन करता व समझाता है। इस सद्गुरु ने मुझे २४ गुरुओं से शिक्षा ग्रहण कराई। उन गुरुओं में पृथ्वी, वायु, आकाश, जल, अग्नि, चंद्रमा, सूर्य, कबूतर, अजगर, समुद्र, पतंग, भौंरा, हाथी, मधुमक्खी, हरिण, मछली, पिंगला वेश्या, कुरर पक्षी, बालक, कुमारी कन्या, बाग बनाने वाला, सर्प और भृंगी कीट हैं।'

'ब्रह्मन् ! यह सब तो जड़ अथवा निर्बुद्धि हैं, इन्होंने आपको क्या शिक्षा और उपदेश दिया?' राजा यदु ने यह पूछा, तो दत्तात्रेय ने बताया—जड़ और निर्बुद्धि समझे जाने पर भी प्रकृति तो उस लीला-मय की चेतन लीला ही है। यदि हम अपने अंतःकरण को निर्मल और परिष्कृत बना सके, तो इस प्रकृति से ही बहुत कुछ सीख सकते हैं। जैसे पृथ्वी से मैंने धैर्य और क्षमा की शिक्षा ली। लोग पृथ्वी पर कितना आघात और उत्पात करते रहते हैं, पर वह न तो किसी से बदला लेती है तथा न रोती-चिल्लाती है। प्राणी जाने-अनजाने एक-दूसरे का अपकार कर ही डालते हैं। धीर पुरुष को चाहिए कि दूसरे की विवशता को समझकर वह न तो अपना धीरज खोए और न ही किसी पर क्रोध करे।

'अन्यान्य वायु, आकाश एवं मानव से जुड़े घटकों को छोड़ दें' तो पशु-पक्षियों से ही मैंने इतना सीखा, जो अत्यंत प्रेरणाप्रद

था। अजगर से मैंने यह सीखा कि साधक को हर स्थिति में संतुष्ट रहना चाहिए।'

'पतंगा दीपक के रूप पर मोहित होकर उसकी शिखा में कूदता है और जल कर मर जाता है। वैसे ही इंद्रियों को वश में न रखने वाला पुरुष नाशवान् पदार्थों में फँसा रहता है, उसकी सारी चित्तवृत्तियाँ उनके उपभोग के लिए ही लालायित रहती है। वह अपनी विवेक बुद्धि खोकर पतंगे की समान ही नष्ट हो जाता है।'

'भौंरा छोटे-बड़े अनेक पुष्पों से उनका सार मात्र ग्रहण करता है, वैसे ही हे राजन्! बुद्धिमान् पुरुष को चाहिए कि वह छोटे-बड़े सभी शास्त्रों से उनका सार मात्र ग्रहण करे। हाथी से मैंने यह सीखा कि साधक काठ की बनी पुतली से भी मोह न करे। हाथी काठ की हथिनी को देखकर ही शिकारियों द्वारा खोदे गए गड्ढे में जा गिरता है तथा उस कारण मृत्यु को प्राप्त होता है। इसी प्रकार काष्ठ मूर्ति में भी साधक की आसक्ति उसके पतन का कारण बन जाती है।'

'हे राजन! 'मधु' निकालने वाली 'मक्खी' से मैंने यह शिक्षा ली कि जिस प्रकार वह प्रयत्नपूर्वक रस का संचय करती है उसी प्रकार लोभी व्यक्ति भी धन का संचय करते हैं। लोभी मधुमक्खी का संचित रस अन्य लोग ही ले उड़ते हैं। उसी प्रकार लोभी मनुष्य का संचित धन भी कोई दूसरा ही भोगता है। हरिण वादक यंत्रों के कारण श्रवणेंद्रिय के विषयों में आसक्त होकर अपने प्राण गँवाता है उसी प्रकार साधक को श्रवणेंद्रिय के विषय की आसक्ति पतन की ओर धकेलती है। मछली काँटे में फँसे हुए मांस के टुकड़े में अपने प्राण गँवा देती है, वैसे ही स्वाद का लोभी मनुष्य भी अपनी जिह्वा के वश होकर मारा जाता है।

'कोई पक्षी अपनी चोंच में मांस का टुकड़ा लिए बैठा था। उसे छीनने के लिए दूसरे पक्षियों ने उसे अपनी चोंचों से मारना शुरू कर दिया। जब उस पक्षी ने चोंच में दबाए हुए टुकड़े को फेंक

दिया तो वह कष्ट से मुक्त हो गया। अनावश्यक संग्रह ही दूसरों के मन में ईर्ष्या को जन्म देता है और दूसरों को ईर्ष्या के कारण कष्ट पहुँचता है। उस पक्षी से मैंने यह शिक्षा ली कि अनावश्यक संग्रह नहीं करना चाहिए। इसी प्रकार साँप से मैंने यह शिक्षा ली कि संन्यासी को मठ या मंडली बनाने के चक्कर में नहीं पड़ना चाहिए।

'मकड़ी बिना किसी सहायक के अपने ही मुँह के तारों द्वारा जाला बना लेती है, उसी में विहार करती है और फिर उसे ही निगल जाती है। मकड़ी के इस कार्य से मैंने सर्वशक्तिमान् भगवान् की विश्व रचना के कार्य को समझने का प्रयत्न किया है। भगवान् बिना किसी सहायक के अपनी ही माया से इस ब्रह्मांड को रचते हैं, उसमें जीव रूप से विहार करते हैं और अपने आप को ही लीन करके अंत में अकेले ही शेष रह जाते हैं।'

'भृंगी किसी कीट को पकड़कर अपने रहने के स्थान में बंद कर देता है और कीड़ा भय से उसी का चिंतन करते-करते तद्रूप हो जाता है, उसी प्रकार साधक को भी केवल परमात्मा का ही चिंतन करके परमात्मा रूप हो जाना चाहिए। विवेक और वैराग्य की शिक्षा देने के कारण यह मेरा शरीर भी एक गुरु है, यद्यपि यह शरीर अनित्य है, तो भी इससे परम पुरुषार्थ का लाभ हो सकता है। मैंने इस प्रकार प्रकृति के चौबीस गुरुओं से शिक्षा प्राप्त की तथा जीवन मुक्त होने का मार्ग पाया।

इस प्रसंग का उल्लेख करते हुए भागवत पुराण के एकादश स्कंध में भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा है–'ज्ञान प्राप्त करने के लिए अकेले गुरु से ही काम नहीं चलता, बल्कि उसके लिए स्वयं भी सोचने-समझने और चतुर्दिक होती रहने वाली प्रकृति-जगत् की छोटी-छोटी घटनाओं से भी बहुत कुछ समझना आवश्यक है। साधक यदि अपनी दृष्टि को सूक्ष्म और ग्राह्य बनाए तो उसके चारों ओर ब्रह्मविद्या का महाविद्यालय खुला पड़ा है, प्रकृति ने अपनी प्रिय संतान के लिए अपने ही आंगन में ब्रह्मविद्या का भाग्योदय

मंदिर खोल रखा है। कोई उसमें नम्र याजक-पूजक की तरह जाए तो सही।'

जलचरों की अपनी निराली दुनिया

थलचर होने के नाते हम धरती की ऊपरी सतह पर पाए जाने वाले पदार्थों और प्राणियों के संबंध में ही थोड़ा बहुत जानते हैं। धरती की भीतरी परतों में पाई जाने वाली खनिज संपदा की भी खोजबीन की जाती है, इतने पर भी धरातल की थोड़ी नीची परतों में रहने वाले प्राणि-परिवार के संबंध में बहुत कम जानकारी मिल सकी है। सीधा संबंध जिनसे न हो उनके संबंध में उपेक्षा और अनभिज्ञता रहना स्वाभाविक भी है।

जलचरों के रूप में जीवधारियों की अपनी अनोखी दुनिया है। उसमें धरातल पर रहने वाले प्राणियों की तरह ही जलचर रहते हैं और अपने स्तर की साधन-सुविधाएँ उसी क्षेत्र से प्राप्त करते हैं। उनकी संरचना भी ऐसी है कि उस क्षेत्र में निवास करने और आवश्यक सुविधा-साधन उपलब्ध करने में किसी प्रकार की कठिनाई अनुभव न करें।

जलचरों में मछली प्रधान है। उसकी विविधता देखकर भी आश्चर्य होता है, फिर यदि अन्य जलचरों के बारे में अधिक जाना जा सके तो प्रतीत होगा कि प्राणि जगत् उससे कहीं बड़ा है जितना कि हम देखते और जानते हैं।

विश्व की समग्र संरचना और उसमें पाये जाने वाले पदार्थों और प्राणियों की विविधता देखकर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि उनका सृजनकर्ता कितना कुशल, कितना कलाकार और कितना समर्थ हो सकता है।

समुद्र में पाए जाने वाले प्राणियों में स्पंज, मूँगा बनाने वाले प्राणी, कीड़े, स्टारफिश-सीअरचीन, ऑक्टोपस, घोंघें, केंकड़े, मछलियाँ, बैक्टीरिया एवं डायटम पाए जाते हैं। इनके अतिरिक्त खतरनाक प्राणियों में ह्वेल, मैनेटी, डोलफिंस, समुद्री सर्प प्रमुख

हैं। गहरे समुद्र में रहने वाले इन प्राणियों को पैलेजिक कहते हैं।

रीढ़ वाली मछलियों की अब तक २०,००० जातियाँ खोजी जा चुकी हैं। समुद्र में रहने वाली मछलियाँ समुद्री पानी के रंग के अनुरूप रंग बदल लेती हैं। देखने में हरी या नीली दिखाई पड़ती हैं। उनके मुँह नुकीले होते हैं, जिससे वे आसानी से तैर सकें। ईश्वर ने परिस्थितियों के अनुरूप सुरक्षा की कैसी व्यवस्था बनाई है ? इसे सहज ही इन समुद्री जीवों में देखा जा सकता है।

सील मछली ५० मील प्रति घंटे की रफ्तार से चलती है। 'ट्यूना' नामक मछली ६ मील प्रति घंटे की चाल से चलकर अपने ५५ साल की उम्र में १० लाख मील की यात्रा तय करती है। गुरुत्त्वाकर्षण के प्रभाव से बचने के लिए मछलियाँ निरंतर तैरती रहती हैं। मछलियों की आँखों में पलकें नहीं होती हैं। यह एक रहस्य बना है कि मछलियाँ सोती हैं या नहीं। रात में मछलियाँ समुद्री सतह पर तैरती हैं, किंतु दिन में सूर्य की गर्मी से बचाव के लिए काफी गहराई में चली जाती हैं। 'ईल' मछली प्रत्येक वर्ष शरद ऋतु में यूरोप की नदियों को छोड़कर अटलांटिक महासागर में लाखों की संख्या में आ जाती हैं। ये मछलियाँ बरमूड़ा के निकट सारगासो सागर में एकत्रित हो जाती हैं तथा यहीं अंडे देकर मर जाती हैं। इन अंडों से निकली मछलियाँ यूरोप के समुद्री किनारे के पास तीन साल तक घूमती रही हैं, तदुपरांत नदियों में चली जाती हैं।

शार्क के शरीर में हड्डियाँ नहीं पाई जातीं। हड्डियों की पूर्ति कार्टिलेज करता है। शार्क मछली को चलती-फिरती नासिका कहा जाता है। कठिन परिस्थितियों में भी शार्क जीवित रहती है। यह सबसे अधिक खतरनाक मछली है। लैमन शार्क एक प्रकार का द्रव निकालती है। यह द्रव आदमी के चमड़े को जला सकता है। अब

तक कुल २५,००० समुद्री जातियाँ मछलियों की पहचानी जा चुकी है।

स्रष्टा ने बुद्धि, भाव-संवेदनाओं की दृष्टि से मनुष्य को सर्वश्रेष्ठ बनाया। अपनी इन विशेषताओं के कारण ही वह सृष्टि का मुकुटमणि कहलाता है, किंतु अन्य प्राणियों में भी ऐसी विशेषताएँ दी हैं, जिन्हें देखकर मनुष्य का सर्वश्रेष्ठ होने का दंभ टूट जाता है।

ह्वेल समुद्र में रहने वाला एक भीमकाय जंतु है। अथाह समुद्र में तैरते हुए यह एक छोटा द्वीप-सा प्रतीत होता है। इसकी लंबाई १०० फुट से लेकर १६५ फुट तक पाई जाती है। एक साधारण ह्वेल किसी दस मंजिली इमारत के बराबर होती है। १२ से लेकर १५ फुट तक मोटी ह्वेल का वजन सामान्यतः १२० टन से १५० टन तक होता है। इस प्रकार एक हाथी से लगभग २० गुना अधिक वजन इसका होता है।

एक व्यक्ति का हृदय हाथ की मुष्ठिका के बराबर होता है, जबकि ह्वेल का एक कार के बराबर होता है। ह्वेल का हृदय ५० से ७० लीटर तक स्वच्छ रक्त पूरे शरीर में छोड़ता है। ह्वेल के शरीर में २००० से लेकर ३५०० हजार लीटर तक तेल पाया जाता है। एक ह्वेल की औसत आयु ५०० वर्ष होता है।

जन्म के दो वर्ष बाद से ह्वेल शिशु प्रजनन के योग्य हो जाता है। एक बार में मादा एक या दो बच्चे देती है, बच्चा जन्म के पूर्व ११ माह तक माँ के गर्भ में विकसित होता है। जन्म के समय शिशु का वजन लगभग ८ टन होता है। प्रतिघंटा ८ पौंड की दर से वजन में वृद्धि होती है। नवजात ह्वेल शिशु की लंबाई २७ फुट होती है। कुछ माह के बाद इसकी लंबाई दूनी हो जाती है। एक शिशु ५०० से लेकर ६०० लीटर तक माँ का दूध पीता है।

ह्वेल का सुरक्षा यंत्र उसकी पूँछ है। एक लंबी बस की आकार की यह पूँछ नाविकों को सदा भयभीत करती रहती है। पूँछ

की फटकार चार-पाँच मील के क्षेत्र में सुनायी पड़ती है। अच्छे से अच्छे मजबूत जहाज इसकी टक्कर से बच नहीं पाते। उसका मुख एक बड़े प्रवेश द्वार के समान दिखायी पड़ता है। हर मछली ऐसी नहीं है। डाल्फिन तो मानव के मित्र के रूप में सदा से भूमिका निभाती आयी है।

न्यूजीलैंड के कई द्वीपों के बीच में कई खतरनाक खाड़ियाँ हैं जहाँ बड़ी-बड़ी नुकीली चट्टान अभागे जहाजों का शिकार करती थीं, इन चट्टानों से टकराकर कई समुद्री जहाज नष्ट हो गए। अब से कोई ८० वर्ष पूर्व एक डाल्फिन मछली ने जहाजों के पथ-प्रदर्शन का काम शुरू कर दिया। वह शीघ्र ही मल्लाहों में लोकप्रिय हो गई। मल्लाह डाल्फिन के पीछे-पीछे चलने लगे। एक बार दो समुद्री जहाज एक ही खतरनाक क्षेत्र की ओर बढ़ रहे थे। डाल्फिन के लिए समस्या पैदा हो गई कि किसे बचाए ? अपनी विवेक बुद्धि से उसने तीव्र गतिमान जहाज के पथ-प्रदर्शन का निर्णय लिया। उसे सुरक्षित क्षेत्र में पहुँचाकर डाल्फिन बिजली की तेजी से पलटी व चट्टान से कुछ ही दूर दूसरे जहाज को टकराने से बचा लिया।

डाल्फिन को मछलियों से अधिक मनुष्य से प्यार है। न्यूजीलैंड के एक तट पर एक डाल्फिन मछली की प्रतिमा स्थापित हो गई है, जो आपोजैक नामक मछली की स्मृति में निर्मित की गई है। वह तैराकों में बहुत लोकप्रिय थी। लोगों के साथ वाटरपोलो खेलती, नौसिखिए तैराकों को सहारा देकर बचाती व छोटे-छोटे बच्चों को पीठ पर सैर कराती थी। एक दिन वह एक तीव्र गतिमान नाव से टकराकर मर गई। यह प्रतिमा उसके मित्रों ने उसकी याद बनाए रखने के लिए स्थापित की है।

डाल्फिन समुद्र का अत्यंत बुद्धिमान् जीव है। इसका मस्तिष्क मानव मस्तिष्क से बड़ा है। मनुष्य में व उसमें इतना

ही फर्क है कि उसके मानव जैसे हाथ-पैर नहीं है, बोलने की विशेषता उसमें नहीं है।

होनोलूलू के अनुसंधान केंद्र के वैज्ञानिकों ने एक अन्य डाल्फिन को इस प्रकार प्रशिक्षित किया कि वह वायरलेस के संदेश समझ लेती थी। उसके शरीर के साथ एक रिसीवर बाँध दिया गया था। जब केंद्र से इसे कोई संदेश भेजा जाता तो वह तत्काल उसका पालन करती थी।

डाल्फिन तीस विभिन्न आवाजें निकाल सकती है। मनुष्यों की तरह वह कहकहे लगा सकती है, स्त्रियों की तरह चीख सकती है। वह शिकार पकड़ने में सफल होने के बाद बिल्ली की तरह म्याऊँ कर सकती है।

कौटुंबिकता एवं सामाजिकता इनका एक प्रमुख गुण है। यदि कोई मछली बीमार पड़ जाए तो बस्ती की सारी मछलियाँ उसका हाल पूछने आती हैं व शिकार लाकर देती हैं, जहाँ इसके लिए उन्हें भूखा न रहना पड़े।

जीवन में संप्रेषणशीलता का बड़ा महत्त्व है। इसी के माध्यम से पौधों से लेकर जीव तक अपनी किस्मों, मित्र या शत्रु की पहचान या उनके अस्तित्व का पता लगाते हैं। समुद्री जीवों के अनेकानेक रूपों या व्यवहारों की जानकारी होने पर हमें चकित रह जाना पड़ता है।

इन समुद्री रहस्यमय जीवों का विशद् अध्ययन करने के बाद यह पता चला है कि एक लंबी अवधि तक समुद्र में रहने के बाद प्रजनन के उद्देश्य से प्रेरित होकर ये अपनी पुरानी जगह वापस लौट आती है। विशाल समुद्र से नदी में वापस आना कठिन कार्य है, परंतु यह पता चला है कि कुछ रासायनिक तत्त्व उन्हें सही रास्ता ढूँढ़ने में काफी मदद करते हैं। यह प्रवासचर्या सहज ही हमें पक्षियों में होने वाले माइग्रेशन प्रक्रिया का स्मरण दिला देती है। वैज्ञानिकों ने प्रवास में रहने

वाले मछलियों की मानसिक लहरों का तुलनात्मक अध्ययन कर गंध के महत्त्व की जानकारी प्राप्त की है।

कुछ जाति की मछलियाँ आपस में आवश्यक सामाजिक सूचनाएँ देने के लिए रासायनिक विधि का प्रयोग करती हैं, इन मछलियाँ में अपनी जाति, मित्र तथा दुश्मन, काम भावना एवं दूसरों की स्थिति पहचानने की अजब शक्ति होती है।

जापान के लोग समुद्र की तली पर सरगैसो नामक घास की खेती करते हैं, जिससे दवाइयाँ बनाई जाती हैं। इन लोगों को आक्टोपस से सतर्क रहना पड़ता है; क्योंकि इनका निवास समुद्र की तली में होता है। मादा आक्टोपस एक बार में ४०००० से ५०००० तक अंडे देती हैं। अंडों से बच्चे जन्मते ही सूर्य प्रकाश की ओर भागते हैं।

आक्टोपस की सौ से अधिक जातियाँ पाई जाती हैं, सामान्य आक्टोपस तीन फीट के हुआ करते हैं, कुछ इतने छोटे हैं, जो उँगली के नाखून पर बैठ सकते हैं। भूमध्य सागर में पाए जाने वाले आक्टोपस के टेंटेकिल्स साठ फुट तक होते हैं; जबकि प्रशांत महासागर में पाए जाने वाले आक्टोपस के पचास फुट लंबे टेंटेकिल्स पाए गए, इससे यह अनुमान लगता है कि इसकी लंबाई ११० फुट तक होती है।

श्री मेरान स्टियर्क्स जो फ्लोरिडा के निकट पाम बीच स्थित बायोलॉजिकल लेबोरेटरी के अध्यक्ष हैं, का कहना है कि मुझे आक्टोपस में दिलचस्पी इसलिए हुई कि उसमें गिरगिट की तरह रंग बदलने की क्षमता है और आँख बिलकुल मनुष्य जैसी होती है तथा आश्चर्यजनक चतुरता होती है।

फ्रेड्रिक ड्यूमा और जे० वाई० कास्टो ने सागरजल में साहसों की कहनी 'दी साइलेंट वर्ल्ड' में लिखा है कि एक दिन मैंने एक छोटे आक्टोपस को पकड़ा, पकड़ते ही वह जेट विमान की गति से भागने लगा और लाल रंग की पिचकारी जैसी छोड़ी। इनकी एक बहुत बड़ी विशेषता यह है कि ये एक

इंच के आठवें हिस्से की जितनी कम जगह में अपने शरीर को निकाल सकता है।

एडवर्ड रिकेटस और जैक केतविन ने अपनी किताब बिटवीन पैसिफिक टाइड्स' में लिखा है कि आक्टोपस की आँखें बिलकुल आदमी जैसी विकसित होती हैं तथा बिना रीढ़ के हड्डी वाले किसी भी प्राणी से बड़ा और अधिक कार्यक्षम मस्तिष्क होता है। मनुष्य जैसी पाँच ज्ञानेंद्रियाँ शक्ति उनमें भी होती है और टेंटेकिल्स की शक्ति एवं नियंत्रण क्षमता मनुष्य जैसी होती है। मांसपेशियों की क्षमता तो बहुत बढ़ी-चढ़ी हुआ करती है।

धरती के प्राणियों के संबंध में हम कुछ जानते हैं। जलचरों की थोड़ी सी जानकारी भी मिलने लगी है। यह समझदारी हमारी जितनी ही बढ़ेगी और रहस्यों की गहराई में उतरने का जितना अवसर मिलेगा, उसी अनुपात में सृष्टि और उसके स्रष्टा की विचित्रताएँ समझते और उसके सौंदर्य को निहारकर पुलकित होते चले जायेंगे। उनसे सहयोग लेंगे, तो हम स्रष्टा के इस सूक्ष्म उद्यान को आकर्षक ही बनायेंगे।

रंगों की रंग-बिरंगी मानवेतर सृष्टि

वस्तुतः यह सृष्टि जितनी आकर्षक है उतनी ही विलक्षण भी। पेड़-पौधों, वनस्पतियों, पुष्प का आकर्षक सौंदर्य जहाँ मन को तृप्त करता है वहीं अथाह सागर, भीमकाय पर्वत एवं अनंत अंतरिक्ष के दृश्य उस सृष्टा के विराट् स्वरूप का दिग्दर्शन कराते हैं। लघु से विराट् संरचना उसकी अद्भुत कलाकृति, शक्ति एवं विलक्षण बुद्धि व्यवस्था का भान कराती है। जड़ प्रकृति के आकर्षक सौंदर्य से कम आश्चर्यजनक चेतन जगत् भी नहीं है।

चेतना के क्षेत्र में प्राणी-समूह की संरचना, उनके क्रिया-कलाप एवं क्षमताओं की विलक्षणता को देखकर बुद्धि विस्मित रह जाती है तथा श्रद्धा से उस परम शक्ति के प्रति नतमस्तक होना पड़ता है, जिसने विचित्रताओं से युक्त प्राणियों का सृजन किया। स्रष्टा ने मनुष्य को शक्ति-सामर्थ्य एवं बुद्धि प्रदान

की, किंतु अन्य छोटे जीव-जंतुओं को भी आवश्यक क्षमताओं से वंचित नहीं रखा। उनकी आवश्यकता के अनुरूप न केवल जीवन-यापन की क्षमता दी, बल्कि प्रतिकूल परिस्थितियों में सामंजस्य बिठाने एवं तद्नुरूप अपने को ढालने की बौद्धिक क्षमता भी प्रदान की।

विभिन्न प्रकार के रंगों का उपयोग सामान्यतया मनुष्य कला, चित्रकारी आदि के लिए करता है। रंगों का यह सामान्य एवं सीमित उपयोग रहा। किंतु इन्हीं रंगों के आवरण में लिपटे नन्हें वन्य प्राणी जीवन की भागदौड़ में अपने को बचाए रखते हैं। इस सुरक्षा कवच की आड़ में ये प्राणी आसानी से अपना आहार भी ढूँढ़ लेते हैं।

भारतीय उपमहाद्वीप में पाए जाने वाले पतंगों की एक जाति होती है 'मेंटीस'। ये पतंगे फूलों के रंग जैसे होते हैं। पुष्पों के डालियों पर बैठे अपना आहार प्राप्त कर लेते हैं। जब पुष्पों की पंखुड़ियों पर चिपके रहते हैं, तो लगता है जैसे पुष्प की ही कोई पंखुड़ी हो। दक्षिणी अमेरिका में भी इसी प्रकार की पारदर्शी काँच जैसी पंख वाली एक तितली पाई जाती है, जिसका रंग पेड़ की छाल जैसा होता है। डेड लीफ बटर फ्लाई तो सूखी पत्तियों जैसी दिखाई देती है। यह केवल रंग, रूप, आकार में ही वैसी नहीं होती है, वरन् उड़ती भी उसी प्रकार है जैसे हवा के झोंके से पत्तियाँ। स्टीक नामक कीड़ा पेड़ से इस प्रकार चिपका रहता है जैसे उसकी ही कोई शाखा हो। टापीकन कीड़े एक समूह में एकत्रित होकर पेड़ में उसके फूल जैसे लटके रहते हैं। अधिकांश व्यक्तियों को उनके फूल होने का भ्रम हो जाता है।

तितलियों में कुछ जातियाँ ऐसी होती हैं, जो पत्तियों का रंग धारण कर लेती हैं। गतिशील पर्ण नाक तितली तो पत्ते की शक्ल, रंग एवं आकार से मिलती-जुलती है। पौधे पर जब यह रेंगती है तो

लगता है कोई पत्ती चल रही हो। बोलिविया सीनोफ्लेविया तितली जब फुदकती है तो पहचान में आती है।

ईश्वर ने प्रत्येक प्राणी को प्राकृतिक प्रकोप एवं प्रतिकूलताओं में समायोजन कर सकने की शारीरिक एवं बौद्धिक क्षमता दी है। देखा यह जाता है कि बौद्धिक क्षेत्र का नेतृत्व करने वाला प्राणी मनुष्य ही सामान्य घटनाक्रमों, प्रतिकूलताओं से प्रभावित होकर अपना शारीरिक स्वास्थ्य एवं मानसिक संतुलन नष्ट करता रहता है; जबकि अन्य प्राणी जीवन का एक सहज क्रम मानकर परिवर्तित परिस्थितियों एवं वातावरण के अनुरूप अपने को ढाल लेते हैं। उत्तरी ध्रुव, पहाड़ों एवं बर्फीले प्रदेशों की भीषण ठंड में भी रीछ, सर्प, उल्लू अपना अस्तित्व बनाए रखते हैं।

बाह्य शत्रुओं, आक्रामकों से बचाव में जिस बुद्धिमत्ता का परिचय ये छोटे, नन्हें जीव देते हैं, उसे देखकर आश्चर्यचकित रह जाना पड़ता है। मनुष्य छोटी-मोटी कठिनाइयों, अवरोधों से विचलित होता रहता है, जबकि उसकी शारीरिक एवं बौद्धिक क्षमता इन क्षुद्र प्राणियों की तुलना में हर दृष्टि से अधिक समर्थ है। सामान्य घटनाक्रमों से प्रभावित होकर रोते-कलपते समर्थ मनुष्य को देखने पर उसकी बुद्धि पर संदेह उत्पन्न होता है तथा यह कहना पड़ता है कि इनसे अच्छे तो ये जीव-जंतु हैं, जो बाह्य परिस्थितियों को चैलेंज करते रहते हैं, किंतु घुटने नहीं टेकते। मनुष्य को इन जीवों से प्रेरणा लेनी चाहिए।

मेढकों का प्रिय आहार समझे जाने वाले टोड मिट्टी के ढेले के आकार में बने बैठे रहते हैं। इनको पहचान पाना तो मेढक से ही संभव है। टोड की चालाकी से परिचित मेढक स्वयं भी अपना रंग बदलता रहता है। पानी की सतह पर तैरते हुए काई का रंग धारण कर लेता है। मिट्टी में पहुँचकर उसी के अनुरूप बन जाता है। शत्रुओं को इस प्रकार झाँसा देता रहता है। दूसरी ओर रंग की आड़ में अपना शिकार भी करता रहता है। मछलियाँ, घोंघे तथा स्क्वीड तो अपनी त्वचा का रंग बदलने में विशेषज्ञ हैं। कुछ घोंघे तो मिनटों में अपनी काया का रंग परिवर्तित करते देखे जाते हैं।

समुद्री घास का हरा रंग तथा रंगीन काई का भूरा या बैंगनी रंग ये शीघ्र ही धारण कर लेते हैं।

कुछ प्राणियों में परिवर्तन करने की प्राकृतिक क्षमता न होते हुए भी शत्रुओं से बचाव में अपनी विलक्षण सूझ-बूझ का परिचय देते हैं। अभिनय कला में वे इतने पारंगत होते हैं कि शत्रु धोखा खा जाते हैं। वर्षा ऋतु में पाए जाने वाले कीड़े गिंजाई काँतर, कुंडलाकार रूप में इस प्रकार पड़े रहते हैं जैसे कोई मृतक हो। आक्रमणकारी जीव उन्हें मृत जानकर छोड़ देते हैं। ये सभी जीव न केवल अपनी सुरक्षा करते हैं, वरन् अपने बच्चों की देखरेख एवं बाहरी आक्रमणों से बचाव की विधि-व्यवस्था, परिवार के मुखिया के समान करते हैं। गौरैया और श्यामा अपने अंडों को घास में इस प्रकार रखती हैं कि उनके ऊपर शत्रु की दृष्टि न पड़ सके। बच्चे भी आरंभ से ही दिए गए माता-पिता के इस प्रशिक्षण का पालन पूरी मुस्तैदी के साथ करते हैं। अंडे से निकलकर आते ही जब शत्रु को देखते हैं तो मृतक की भाँति लेट जाते हैं। शत्रु भी मृतक जानकर छोड़ देते हैं।

कुछ जीव जो अपनी रक्षा करने में असमर्थ होते हैं। वे इस प्रकार की शारीरिक चेष्टाएँ प्रदर्शित करते हैं, जिन्हें देखकर अन्य प्राणी डर जाएँ तथा आक्रमण न करें। अमेरिका में पाया जाने वाला सर्प लांगलोंड इसी श्रेणी में आता है। इसमें विष नहीं पाया जाता है, इसलिए सहज ही शिकार बनने की संभावना बनी रहती है। ऐसी स्थिति में अपनी सुरक्षा के लिए यह अपना फन उठाकर फुफकारता हुआ ऐसे चलता है जैसे कोई विषधर सर्प आ रहा हो। शत्रु उसे देखकर डर जाते हैं तथा आक्रमण करने का साहस नहीं कर पाते। यदि अपने उस अभिनय में वह असफल रहा तथा कोई शत्रु आक्रमण कर दे तो वह चित्त होकर मृतक के समान लेट जाता है। आक्रमणकारी उसे प्रायः मृत जानकर आगे बढ़ जाते हैं। शत्रु के आगे बढ़ते ही वह एक ओर धीरे से खिसक जाता है। चीनी फीजेंट नामक रंगीन पंखों वाला पक्षी अपनी गर्दन के पास लाल थैलियों को फुलाकर अपना आक्रामक रूख प्रदर्शित करके

शत्रुओं को डराता रहता है। छिपकलियाँ भी इस कला में निपुण होती हैं। आक्रमण की आशंका होते ही अपना मुँह खोलकर वायु द्वारा शरीर को फुलाती हैं तथा आँखों से रक्त की पिचकारी छोड़ती हैं। शत्रु भयभीत होकर भाग जाता है। 'स्क्वीड' हमला किये जाने पर अपने ही आकार का स्याही का बादल छोड़कर भाग जाता है।

परमात्मा ने प्रत्येक प्राणी को उसकी आवश्यकतानुसार शक्ति, सामर्थ्य एवं बुद्धि दी है, जिससे वे स्वस्थ जीवनयापन करते हुए शारीरिक, मानसिक एवं नैतिक सुरक्षा कर सकें। छोटे नगण्य समझे जाने वाले प्राणी ईश्वर द्वारा दी गई क्षमता का सदुपयोग करते हैं तथा अपने छोटे से क्षेत्र में उल्लासपूर्ण जीवन व्यतीत करते हैं। मनुष्य को इनसे प्रेरणा लेनी चाहिए। मनुष्य जीवन की गरिमा एवं उद्देश्य को समझते हुए उसे प्राप्त करने के लिए सतत प्रयास करना चाहिए। इनकी कलाकारिता, सुरुचि एवं बुद्धि का पैनापन मनुष्य के लिए समग्र शिक्षण की विधा है। इनकी उपेक्षा न करके इनसे सीखने का हम प्रयास तो करके देखें।

●

क्षुद्र प्राणियों का विशाल अंतःकरण

स्वार्थ और आत्म रक्षा की प्रवृत्ति सभी प्राणियों में पाई जाती है। प्रवृत्ति जीवन को प्रेम करने के फलस्वरूप ही विकसित हुई। यह बात दूसरी है कि उन प्रवृत्तियों का विकास कितने परिष्कृत अथवा विकृत रूप में होता है, परंतु यह सच है कि प्रत्येक प्राणी में एक ऐसी चेतन सत्ता विद्यमान है जो निरंतर ऊँचा उठने की प्रेरणा देती है; स्वार्थों की पूर्ति के साथ-साथ उच्च आदर्शों को जीवन में आत्मसात् करने की प्रेरणा देने वाली इस चेतन सत्ता का नाम ही अंतरात्मा है।

मनुष्य समाज में कितने ही लोग उच्च आदर्शों की पूर्ति के लिए अपने तुच्छ स्वार्थों को बलि देते देखे जा सकते हैं। समाज भी ऐसे व्यक्तियों को महामानव, देवमानव, आदर्श पुरुष कहकर सम्मानित करता और श्रद्धा से शीश नवाता है। अंतरात्मा के रूप में संबोधित की जाने वाली यह चेतना केवल मनुष्य के पास ही नहीं है, वरन् अन्य पशु-पक्षियों में भी, जिनके पास बुद्धि का अभाव है, सोचने-समझने की क्षमता नहीं है, इन आदर्शों के प्रति अगाध प्रेम देखा गया है। अमेरिकी लेखक एच० ए० जेज ने पशु-पक्षियों के आपसी व्यवहार का लंबे समय तक अध्ययन किया, जो यह प्रमाणित करती है कि पशु-पक्षियों में भी नैतिक चेतना तथा आदर्शों के प्रति प्रेम होता है और वे इन आदर्शों को प्राण-पण से निबाहते भी हैं।

एच० ए० जेज ने अपनी पुस्तक 'विजडम ऑफ एनिमल्स' में एक पालतू बिल्ली और तोते का उल्लेख किया है, वे परस्पर एक-दूसरे को बहुत प्रेम करते थे। घर में जब कोई नहीं होता तो बिल्ली तोते को इस प्रकार खिलाती रहती थी जैसे कोई बच्चा खिला रहा हो। एक दिन उनकी मालकीन रसोई में कोई चीज पकाने के लिए चूल्हे पर रखकर ऊपर कमरे में चली गई और वहाँ किसी काम में व्यस्त हो गईं। खेलते-खेलते तोता पकने के लिए चढ़ाए गए बर्तन में गिर पड़ा। बिल्ली तुरंत ऊपर वाले कमरे में

दौड़ गई और मालिकन के कपड़े खींच कर, उछल कर व्याकुलता प्रदर्शित करने लगी। मालकिन ने झल्ला कर कहा क्या बात है ? तो बिल्ली ने उसकी ओर कातर भाव से देखा तथा रसोई की ओर चल पड़ी। पता नहीं उसकी आँखों में क्या भाव थे कि मालकिन ऊपर वाले कमरे से निकलकर रसोई की ओर बिल्ली के पीछे-पीछे चल दी। वहाँ जाकर उसने देखा कि तोता चूल्हे पर चढ़ाए गए बर्तन में गिर पड़ा है और बुरी तरह छटपटा रहा था। मालकिन ने उसे बाहर निकाला। यदि बिल्ली उस समय अपनी मालकिन को बुलाने नहीं जाती तो निश्चय था कि तोते के प्राण निकल गए होते।

पशु अपने सजातीय प्राणियों, परिवार के सदस्यों, बच्चों से तो प्रेम करते ही हैं, उन्हें साथ लिए घूमते और स्नेह का परिचय देते हैं। परंतु दूसरे पशुओं से भी प्रेम संबंध बनाने, स्नेह-सौहार्द्र बढ़ाने और मैत्री करने के उदाहरण बहुत कम देखने को मिलते हैं, लेकिन मिलते अवश्य हैं। बर्मिंघम (ब्रिटेन) में सर सैमुअल गुडबीईयर के यहाँ टट्टू था, उसकी एक खच्चर से अच्छी दोस्ती हो गई और दोनों बाड़े से निकल कर देर तक घूमा करते थे। टट्टू को एक बाड़े में रखा जाता था, बाड़े का फाटक अंदर से एक चटखनी से बंद होता था और बाहर से कुंडी द्वारा टट्टू अपना सिर फाटक के ऊपर तो कर सकता था, किंतु वह बाहरी कुंडी तक नहीं पहुँच सकता था, फिर भी वह अक्सर बाड़े के बाहर खुले में घूमता देखा जाता था। यह एक रहस्य ही था कि बाड़े का फाटक कैसे खुल जाता था ?

एक दिन सर सैमुअल ने देखा कि टट्टू पहले भीतरी चटखनी को झटके देकर खाँचे से अलग करता और फिर रेंकना शुरू कर देता। उसकी आवाज सुनकर बाहर का खच्चर अपनी नाक से धकेल कर कुंडी खोल देता फिर दोनों साथ-साथ घूमते।

वेजल नामक एक जरमन पत्रिका में एक कुत्ता और बिल्ली की मित्रता का वर्णन छपा है, कुत्ते और बिल्ली जन्मजात शत्रु होते हैं, परंतु यह कुत्ता और बिल्ली साथ-साथ खाते-पीते, उछलते-कूदते और साथ-साथ उठते-बैठते थे। इनके मालिक ने कुत्ते और बिल्ली

की मैत्री को परखना चाहा। वह केवल बिल्ली को अपने कमरे में ले गया और उसे खाना दिया, उसने बड़े मजे में खाना खाया। ऐसा लगा कि कुत्ते की अनुपस्थिति बिल्ली को जरा भी नहीं खली है, फिर एक तश्तरी में खाना रखकर वह तश्तरी अलमारी में रख दी गई। अलमारी में ताला नहीं लगाया गया और बिल्ली को खुला छोड़ दिया गया। बिल्ली तुरंत कमरे से बाहर गई और वह अपने साथी कुत्ते को वहाँ बुलाकर ले आयी। दोनों उस अलमारी तक गए, फिर बिल्ली ने धक्के से अलमारी का दरवाजा खोला तथा उछलकर कुत्ते को वह तश्तरी दिखाने लगी। कुत्ते ने तश्तरी देख ली और उसने पंजों से दबाकर तश्तरी को बाहर निकाल लिया, पहले उसने बिल्ली की ओर तश्तरी खिसकाई, परंतु बिल्ली पीछे हट गई, जैसे वह कह रही हो, मैं तो खा चुकी हूँ। कुत्ते ने भी जैसे बिल्ली का आशय समझ लिया और तश्तरी को अपने पंजे से दाबकर सारा खाना खा गया। जब तक कुत्ता खाना खाता रहा तब तक बिल्ली का आशय समझ लिया और तश्तरी को अपने पंजे में दाबकर सारा खाना खा गया। जब तक कुत्ता खाना खाता रहा तब तक बिल्ली उस स्थान पर ऐसे बैठी रही जैसे वह पास बैठकर खाना खिला रही है।

एक-दूसरे के प्रति प्रेम और कोमल भावनाओं का प्रदर्शन तो ठीक ही है किंतु पशु-पक्षी अपनी मित्रता में अवरोध उत्पन्न करने वाले कारणों को भी दूर करते हैं। दूसरों की इच्छा या अनिच्छा अथवा बहलाने बहकाने पर जुड़ने-टूटने वाली मित्रता का आधार स्वार्थ ही हो सकता है; क्योंकि मित्रता सच्चे हृदय से की जाती है और बाहरी कारणों से स्थिर बनती अथवा टूटती नहीं है। प्रसिद्ध अंग्रेजी अखबार स्टेट्स मेन में एक पिल्ले और सूअर की ऐसी ही मित्रता का वर्णन छपा था। वे दोनों साथ-साथ घूमते थे। उनके स्वामी को यह पसंद न था, इसलिए उसने पिल्ले के गले में लकड़ी का एक छोटा-सा किंतु वजनदार टुकड़ा बाँध दिया, ताकि वह भाग न सके। किंतु उसने पहले ही दिन देखा कि उस पिल्ले के गले में पड़ी रस्सी कट गई थी और वह सूअर के साथ स्वतंत्र घूम रहा

था। दूसरे दिन पिल्ले गले में चमड़े का मजबूत पट्टा डाला गया और उसमें लकड़ी का टुकड़ा जंजीर से लटकाया गया। लेकिन उस दिन भी पट्टा कट गया और लकड़ी का वह टुकड़ा कहीं गिर पड़ा। पिल्ला अपने पट्टे को स्वयं कदापि नहीं काट सकता था। फिर वह कैसे कट जाता है, यह देखने के लिए निगरानी की गई, तो पाया गया कि यह काम उसके दोस्त सूअर का ही है।

यह तो हुई सामान्य मैत्री धर्म की बातें, साथ-साथ रहने उठने-बैठने के कारण आपस में इस तरह की घनिष्ठता को स्वाभाविक भी कहा जा सकता है, परंतु पशु-पक्षी में कर्तव्य भावना, विपत्तिग्रस्तों के प्रति सहयोग-सद्भाव तथा पीड़ितजनों से सहानुभूति और आततायी के प्रति आक्रोश की भावनाएँ भी खूब पाई जाती हैं। युद्ध में घोड़ों के उपयोग की चातुरी, कुत्ते की स्वामिभक्ति और दूसरे घरेलू जानवरों का तो प्रेम आए दिन देखने को मिलता ही है। इस तरह की कई घटनाएँ इतिहास प्रसिद्ध भी हैं। ऐसा नहीं है कि ये पशु इस तरह का विशेष व्यवहार अपने मालिक के साथ ही करते हों। उनके अपने साथियों के प्रति भी उनका व्यवहार कई बार इतना सूझ-बूझ भरा होता है कि देख-सुनकर दंग रह जाना पड़ता है।

कुछ दिन पूर्व अमेरिका के प्रसिद्ध पत्र 'लाइफ' की आँखों देखी घटना का वर्णन छपा था। हुआ यह कि एक भेड़ का बच्चा किस तरह काँटेदार झाड़ी में उलझ गया था। उसने निकलने की बहुतेरी कोशिश की, परंतु बेचारा अंततः असफल रहा और थक कर निराश हो गया। पास ही उसकी माँ भेड़ भी चर रही थी। झाड़ियों में खड़खड़ाहट सुनकर उसे न जाने क्या शंका हुई कि वह वहाँ देखने आई। सामान्यतः इस प्रकार की आहट पाकर भेड़-बकरियाँ भाग जाती हैं, परंतु वह मादा भेड़ पास आई और अपने बच्चे को झाड़ियों में फँसा देखकर उसे निकालने की कोशिश करने लगी, वह भी विफल ही रही। निराश होने के बाद वह खेतों के पास चर रही दूसरी भेड़ों के पास गई। कुछ ही देर बाद वह एक नर भेड़ के साथ वापस लौटी। मेढ़े ने अपने सींगों से काँटेदार

टहनियों को खींचना शुरू किया और कुछ ही देर में मेमना झाड़ियों से मुक्त हो गया। झाड़ियों से निकलने के बाद उसकी माँ और नर मेढ़ा उस मेमना को चाट-चाट कर जिस प्रकार प्रेम प्रदर्शित कर रहे थे, लगता था कि उसे विपत्ति से छूट जाने के लिए आश्वस्त कर रहे हों और उसका भय मिटा रहे हों।

आततायियों के प्रति रोष-आक्रोश की भावना केवल मनुष्यों में ही नहीं होती, वरन् पशु-पक्षी भी अनीति का डटकर मुकाबला करते हैं। सामान्यतः कमजोर जानवर ताकतवर जानवर से डर जाते हैं और या तो भाग जाते हैं अथवा आत्मसमर्पण करते हैं। जे० जे० रीमेंस ने अपनी एक पुस्तक में लिखा है कि—डबलिन में उनके मकान की खिड़की के पास अबाबीलों के एक जोड़े ने घोंसला बनाया और उसमें रहने लगे। उन्हें रहते हुए कुछ ही दिन हुए थे कि एक गौरैया ने उनके घोंसलों पर कब्जा कर लिया। अबाबील दंपत्ति को यह देखकर बड़ा गुस्सा आया।

उन्होंने गौरैया को घोंसले से निकालने की जी तोड़ कोशिश की, परंतु गौरैया अपने शक्तिमद में आकर घोंसले पर अड्डा जमाए ही रही। अंत में अबाबील दंपत्ति अपने कुछ साथियों को ले आई, उन्होंने गौरैया को घोंसले से बाहर निकालने की अपेक्षा उसकी उद्दंडता का मजा चखाने का निश्चय कर लिया था। सभी अबाबीलें मिलकर अपनी चोंचों में कीचड़ भर कर लाने लगीं और उससे घोंसला का मुँह बंद कर दिया। गौरैया अब भीतर ही बंद हो गई थी। कुछ दिन बाद जब वहाँ से घोंसला हटाया गया, तो गौरैया मरी पाई गई। बेचारी को अपने किये की सजा जीवन से हाथ धोकर भोगना पड़ी थी।

पशु-पक्षियों द्वारा किया जाने वाला यह विशेष व्यवहार आकस्मिक ही नहीं कहा जा सकता। मानवी बुद्धि की दृष्टि से इस तरह के संबंधों की रीति-नीति नैतिक चेतना के जागरण से ही विकसित होती है। मनुष्य के भीतर भी अपने मित्रों व साथियों के प्रति निर्दोष, निःस्वार्थ त्याग भावना का उदय होता है। बुरे से बुरे और दुष्ट से दुष्ट व्यक्ति में भी कई अवसरों पर विपत्ति ग्रस्तों के

प्रति करुणा का भाव जाग उठता और कमजोर व्यक्ति भी अपने से बलवान् आततायी से भिड़ जाने का साहस जुटा लेता है। कहने का अर्थ यह कि नैतिक चेतना अथवा अंतरात्मा की प्रेरणा सभी प्राणियों में होती है, चाहे वह पशु-पक्षी हो या मनुष्य, देवता।

क्रूरता को भी जीता जा सकता है, जरा संवेदना तो जगाएँ

आक्रमण उतना हानिकारक नहीं जितना उसका आतंक। हिंसा उतनी विघातक नहीं होती, जितनी भयग्रस्तता। यदि साहस का संबल साथ लेकर चला जाए तो वह जटिल स्थिति भी सामान्य जैसी बन जाती है, जिसकी चर्चा सुनते ही डरपोक मनुष्यों के रोंगटे खड़े हो जाते हैं। आदिवासी, वनवासी, घने जंगलों में एक-एक झोंपड़ी अलग-अलग बना कर रहते हैं। जंगलों में हिंस्र व्याघ्र भरे पड़े होते हैं। किंतु इन वनवासियों पर उनका कोई आतंक नहीं होता, रात को गहरी नींद सोते हैं। दिन में आहार की तलाश के लिए उन्हीं झाड़ियों को ढूँढ़ते रहते हैं, जिनमें कि हिंस्र पशुओं के घर होते हैं। निर्भीकता का ही परिणाम है कि शेरों से आदिवासी नहीं डरते, वरन् आदिवासियों से उन्हें डरना पड़ता है। हर बनवासी अपने जीवन में ढेरों हिंस्र पशुओं को धराशायी करता है, जबकि उनके परिवार में मुद्दतों बाद ऐसी घटनाएँ घटित होती हैं, जिनमें किसी सिंह, व्याघ्र ने आदिवासी की जान ली हो।

अफ्रीका के रायल नेशनल पार्क, लकमनी आराने पार्क, क्वीन एलिजाबेथ नेशनल पार्क जैसे सुविस्तृत वन विहार बनाए गए हैं। जिन्हें देखने के लिए दुनिया भर के लोग जाते हैं, इनमें वन्य पशु स्वच्छंदता और सुविधापूर्वक घूमते और अपना प्राकृतिक जीवन जीते हैं। इनमें सिंहों की संख्या भी काफी है। वे स्वच्छंद घूमते हैं, साथ ही जहाँ वे रहते हैं, वहीं जेबरा, जिराफ, हिरन आदि भी निर्भयतापूर्वक विचरण करते हैं। वे सिंहों को देखकर सतर्क तो हो जाते हैं, पर न तो भागते हैं और न चरना छोड़ते हैं। मिल-जुलकर आक्रमण का मुकाबिला करते हैं और कोई चपेट में आ भी जाए तो

मौत और जिंदगी की मिले-जुले क्रम के बीच निर्भयतापूर्वक रहते हुए उन्हें कोई संकोच नहीं होता।

अफ्रीकी मसाई जाति के बनवासी प्रायः उन्हीं क्षेत्रों में रहते हैं, जिनमें सिंहों का बाहुल्य है। न केवल वे स्वयं रहते हैं, वरन् अपने पालतू पशुओं को भी रखते हैं। भूखे और भरे पेट सिंहों की स्थिति को वे भली प्रकार जानते हैं और तद्नुसार अपनी सुरक्षात्मक व्यवस्था को भी ठीक कर लेते हैं। मौत और जिंदगी ने जिस तरह आपस में समझौता किया हुआ है, उसी तरह बनवासी और हिंस्र पशु भी अपने ढर्रे से अपना समय गुजारते है। भय और आतंक को वे ताक पर उठाकर रख देते हैं।

सरकस के साहसी प्रशिक्षक, किस प्रकार जानवरों को सधाते और उनसे तरह-तरह के खेल कराते हैं, यह सभी को विदित है। हिंस्र पशुओं को पालने और उन्हें सामान्य पशुओं की तरह रहने के लिए अभ्यस्त करने में अधिक सफलता मिलती जा रही है। ऐसे एक नहीं अनेक प्रयोग सामने आते रहते हैं, जिनसे सिद्ध होता है कि हिंसात्मक प्रकृति को बदल कर उसे सौम्य स्तर का बनाया जा सकता है।

भेड़िए प्रकृतितः हिंस्र जंतुओं की बिरादरी में अधिक खूँखार माने जाते हैं। छोटा सो खोटा वाली उक्ति भेड़ियों पर अधिक सही रूप से लागू होती है। उसकी धूर्तता ही नहीं, दुष्टता भी अपने ढंग की अनोखी होती है। इसलिए चिड़ियाघरों के पशु-पालकों से लेकर जंगल में रहने वाले किसानों एवं शिकारियों तक को इनके बारे में बड़ी सतर्कता बरतनी पड़ती है। वे कभी भी कुछ भी कर सकते हैं। इसीलिए भेड़िया पालने की बात असंभव सी मानी जाती है।

जर्मनी के जेरम हैलयुथ को कुत्ते पालने का शौक था। उनने अलाकिन जाति के शिकारी कुत्ते पाल रखे थे। उनकी पत्नी एलन ही नहीं-बच्चे भी इन्हें पालने में रुचि लेते थे, हैलयुथ का मस्तिष्क बहुत समय यह सोचने में लगा रहा कि प्यार की जंजीर में जब इन खूंखार कुत्तों को बाँधा जा सकता है, तो लगभग उसी जाति से

मिलते-जुलते भेड़िए क्यों नहीं पल सकते ? इस प्रश्न का समाधान उनने भेड़िया पाल कर ही प्राप्त करने का निश्चय किया।

भेड़िए का बच्चा प्राप्त करने के लिए उन्होंने टकोमा चिड़िया घर से संपर्क स्थापित किया और वहाँ के अधिकारियों से मिल कर यह सफलता प्राप्त कर ली कि अगले दिनों जब मादा प्रसव करेगी, तब एक बच्चा उन्हें मिल जाएगा। नियत समय पर एक बच्चा उन्हें मिल भी ग्या। नाम रखा गया कुनू।

यह नवजात शिशु मात्र छह इंच की थी। पालना एक समस्या थी, फिर भी उसे जीवित रखने में सफलता प्राप्त कर ली गई। हैलयुथ की पत्नी और उनकी चारों बच्चियों ने इस नए अतिथि के पालन में उत्साहपूर्वक सहायता की और वह पल भी गया। कुनू नर नहीं मादा थी।

कुत्तों के साथ उसकी दोस्ती हो गई। खासतौर से डेरियन कुतिया के साथ तो उसकी घनिष्ठता हो गई, मानों वे दोनों माँ-बेटी ही हैं। वह जन्म के समय छह इंच की थी, पर एक वर्ष में बढ़कर पाँच फुट लंबी और ७५ पौंड भारी हो गई। एक वक्त में वह प्रायः डेढ़ पौंड खाना खाती।

बड़े होने पर उसमें भेड़ियों की दुष्टता के कुछ लक्षण उभरे, तो पर पालक ने पूरी सतर्कता से काम लिया और प्रकृति प्रदत्त क्रूरता भुलाने एवं अन्य कुत्तों की तरह जीने के लिए लगातार शिक्षा दी। उसे वैसा ही वातावरण दिया जैसा कि अन्य पालतू कुत्तों को उपलब्ध था। फलतः वह उन्हीं के साथ घुल गई और कुत्तों की बिरादरी में पूरी तरह सम्मिलित हो कर उन्हीं के आचरण करने लगी।

दुष्टता की किंवदंतियों को कुनू ने झुठला दिया और एक नए तथ्य का प्रतिपादन किया कि भेड़िए दूसरे हिंस्र जानवरों की तुलना में अधिक स्नेहिल होते हैं। उसे प्यार करने की प्रकृति भी जन्मजात रूप से ही मिली थी। भेड़िए एक दूसरे के मुँह में डालकर प्यार करते हैं। कुनू का वास्ता मनुष्यों से पड़ता था, सो वह उनकी

बाँहों तथा पैरों को मुँह में रखकर चूमने जैसा आचरण करती। घर की बच्चियाँ इसकी प्रतीक्षा करती रहती थीं कि कुनू उसे कब और कितनी देर चूमेगी, उन्हें इसमें बड़ा आनंद आता। कभी-कभी कुनू की चूमने की आकांक्षा इतनी तीव्र होती कि घर आने वाले आगंतुकों के साथ भी वह उसी खेल को खेलती। आगंतुक पहले तो घबराता, पर पीछे जब प्रतीत होता कि खूँखार भेड़िए भी इतने स्नेहिल हो सकते हैं, तो उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहता।

सर्पों से कैसा भय ?

दुनिया में ऐसे लोग भी हैं जिन्होंने सर्पों के न केवल विष दंत चुभोने की क्रूर प्रकृति को बदला है, वरन् उन्हें कलात्मक नृत्य सिखाकर दर्शकों को मुग्ध करने जैसे कठिन कार्य के लिए प्रशिक्षित किया है।

इंग्लैंड की सर्प सुंदरी सान्या के सर्प नृत्यों की इन दिनों यूरोप और अमेरिका में धूम है और जहाँ भी उसकी प्रदर्शन होते हैं, दर्शकों को जगह मिलना कठिन हो जाता है।

यह महिला आरंभ में साधारण नर्तकी थी, पीछे उसने सर्पों को अपना सहचर बनाने का निश्चय किया। अजगर, कोबरा तथा दूसरी विषधर जातियों के सर्प पाले। उनकी प्रकृति समझी, दोस्ती बढ़ाई और स्थिति यहाँ तक उत्पन्न कर ली कि वे उसके साथ-साथ रंगमंच पर घंटों नृत्य कर सकें। जब वह नाचती थी तो वे पालतू विषधर मात्र उपकरण नहीं बने रहते, वरन् नृत्य की ताल और मुद्रा का ध्यान रखते हुए स्वयं भी नृत्य निरत अभिनेता होने का परिचय देते हैं। दर्शक यह देखकर मुग्ध हो जाते हैं कि नृत्य में सर्प भी किस प्रकार सहभागीदार नपा-तुला पार्ट अदा करते हैं।

सर्प सुंदरी सान्या ने जहाँ अपने सर्प नृत्यों से विपुल संपत्ति एवं ख्याति अर्जित की है, वहाँ इस तथ्य का भी प्रतिपादन किया है कि क्रोधी और पुष्ट समझा जाने वाला यह विषधर स्नेह-सौजन्य की कोमल रज्जु में बँधने के लिए किस तरह स्वेच्छापूर्वक तैयार हो जाता है।

सर्प को सब लोग काल रज्जु के नाम से जानते हैं। चलती-फिरती मौत साँप को देखते ही होश उड़ जाते हैं। हक्का-बक्का हुआ आदमी भी साँप को एक प्रत्यक्ष संकट दीखता है। दोनों के बीच में भय की भयंकरता आ खड़ी होती है। इस भयंकरता के दबाव में ही कितने ही प्राण खो बैठते हैं। कुछ सर्प दंशन से मरते हैं और कुछ आशंका कुकल्पना के शिकार बनकर अपनी धड़कन बंद कर लेते हैं। हाथ-पैर सुन्न होते देर नहीं लगती।

संसार में छह इंच से लेकर १५ गज तक के चित्र-विचित्र साँप पाए जाते हैं। इनमें से सिर्फ १५ प्रतिशत जहरीले होते हैं। बाकी तो रस्सी का खिलौना जैसे कीड़े-मकोड़े जैसे प्रकृति के प्राणी मात्र होते हैं।

साँप के काटने से संसार में वर्ष प्रति पंद्रह हजार आदमी मरते हैं। किंतु आदमी एक साल में ५० हजार साँप मार डालता है। १५ हजार जहरीलों में से भी कितने काटने के लिए कसूरमंद थे, यह नहीं कहा जा सकता। साँप बेकसूरों को काटता है, यह कहना बहुत अंशों में सही है। पर यह कथन और भी अधिक सत्य है कि अधिकांश बेकसूर साँप डरे हुए आदमियों द्वारा मारे जाते हैं।

साँप शिकार को निगलता है। चबाने लायक उसके दाँत नहीं होते। छोटे साँप एक बार का निगला हुआ शिकार एक सप्ताह में पचा पाते हैं। बड़े साँप भी हिरन या बकरी जैसी बड़ी शिकार पकड़ लेते हैं, उसे पाँच महीने में पचा पाते हैं। बाकी दिन वे ऐसे ही लोट-पोट करने में गुजारते हैं। कोबरा जैसे जहरीले और क्रोधी साँप भी तब हमला बोलते हैं, जब सामने से किसी छेड़छाड़ का खतरा देखते हैं। औसत साँप एक घंटे में दो-तीन मील की चाल से दौड़ सकता है। यदि होश-हवाश दुरुस्त हो, तो कोई भी उसे दौड़ में उसे पीछे छोड़ सकता है। उसकी डरावनी सूरत अथवा काल रज्जु की मान्यता ही ऐसी है, जो डरे हुए आदमी को खड़ा कर देती है, ताकि वह मजे में काटकर भाग जाए।

बुरे साँपों की अपेक्षा भले साँप अपेक्षाकृत अनेक गुने अधिक होते हैं। दक्षिण अमेरिका के रैड इंडियनों का साल में एक दिन सर्प पर्व होता है। वे जहाँ भी साँपों का निवास समझते हैं, वहाँ चावल लेकर निमंत्रण देते जाते हैं। पत्थर की एक छोटी गद्दी उनका पूजा स्थान है। पर्व के दिन सैकड़ों सर्प उस पत्थर के आस-पास जमा हो जाते हैं। उन्हें रेड इंडियन हाथ से पकड़कर बाहर निकालते हैं और मक्का के दाने से बनी हुई खीर खिलाते हैं। दिन भर यह क्रम चलता है। इस अविश्वसनीय दृश्य को देखने के लिए उस क्षेत्र के गोरे अपने ट्रकों और मोटर गाड़ियों में बैठकर आते हैं। दिन भर दृश्य देखकर शाम को लौटते हैं। तब साँप भी विदा हो जाते हैं। दूसरे दिन ढूँढ़ने पर भी एक नहीं मिलता। यह पर्व सैकड़ों वर्षों से चला आ रहा है, पर आज तक एक भी दुर्घटना नहीं हुई।

ग्रीक द्वीप सीफालोनिया में मर्कोपोलो एवं अर्जीनिया नामक गाँव के निकट होली स्नेक गिरजे में ६ अगस्त की निश्चित तिथि को जो वर्जिन मेरी का दिन है, बिना बुलाये ही सैकड़ों सर्प मरियम के चित्र का दर्शन करने आते हैं और १५ अगस्त जो ईसा मसीह का दिन है, तक वहाँ रहते हैं। मूर्ति के चरणों में लोटते रहते हैं। दर्शकों में से कितने ही वहाँ आए, वे उनमें से किसी की ओर ध्यान नहीं देते।

इस आश्चर्य पर देश में भी अविश्वास करने वाले कम नहीं हैं। इसलिए कुछ वर्ष पूर्व इस दृश्य की एक फिल्म बनाई गई है, ताकि १० दिवसीय एक आश्चर्यजनक दृश्य को अविश्वासी लोग भी देख सकें।

भारत में नाग पंचमी सर्पों का त्यौहार है। शेष नाग के फन पर पृथ्वी रखी हुई है, ऐसी मान्यता है। उस दिन सर्प का दर्शन शुभ माना जाता है। कहते हैं कि नाग पंचमी को कोई सर्प किसी को नहीं काटता। सर्पों से भय वस्तुतः अवास्तविक है। वे भी भले जीव हैं, इस प्राणी जगत् के ही अंग हैं।

नवंबर १९७६ में सर्प-विद्या संबंधी अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन वेनेजुएला (दक्षिण अमेरिका) के कैराकास नामक स्थान पर हुआ था, जिसमें भारत, अमेरिका, जापान, यूरोप और कई अरब देशों के २०० से अधिक सर्प-विद्या विशेषज्ञ एकत्रित हुए। उसी समय विलियम हास्ट नामक व्यक्ति ने भारतीय काले नाग के मुँह में उँगली डाली और निकाल ली। उसे साँपों को पालने की विशेष रुचि है। उसके यहाँ देशी एवं विदेशी कई प्रकार के सर्प देखने को मिलते हैं। एक सौ तेईस बार उसे जहरीले सर्प काट चुके हैं, लेकिन उसके ऊपर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

पार्ट एलिजाबेथ (अफ्रीका) में जॉन नाम का व्यक्ति चिड़ियाघर में साँपों की देखभाल करता है। उसने दावा किया है कि मैं साँपों के साथ एक कोठरी में ७० घंटे निरंतर रह सकता हूँ। कोठरी में लगभग १०० साँप होते हैं। ४८ घंटे तो वह सर्पों के साथ रह चुका है, लेकिन इससे अधिक समय तक रहने का उसने दृढ़ निश्चय किया है। जॉन को कई बार विषधर सर्पों ने काटा है, लेकिन उसके शरीर पर जहर का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। एक बार तो उसे कोबरा किंग ने भी काटा, लेकिन उसकी मृत्यु न हो पाई। यह वस्तुतः आश्चर्य का ही विषय है। एक बार एक व्यक्ति को सर्प ने काटा तो वह जॉन के पास आया। जॉन ने काटे हुए हिस्से पर अपना मुँह लगा दिया और सारे जहर को खींचने में सफल रहा और उस व्यक्ति को नया जीवन दिया। वह सर्पों के साथ नेकर बनियान में रहता है अब तो उसने १०० घंटे सर्पों के साथ व्यतीत करने का निश्चय किया है।

इसी प्रकार आस्ट्रेलिया की कुमारी सैनी को साँपों को पालने की बड़ी रुचि है। जहरीले से जहरीले सर्पों को भी वह अपने गले में डाले रहती है। कमर में पेटीकोट के स्थान पर सर्प को ही लपेटे मिलेंगी। जब भी कभी उसे देखें तो छोटा-मोटा सर्प उसकी जेब में पड़ा हुआ मिलेगा। रात को वह अजगर का तकिया लगाकर सोती है। उसने निश्चय किया है कि वह आजीवन सर्पों के समाज में रहेंगी। क्योंकि सर्प भी उसे अपरिमित प्रेम करते हैं।

महाराष्ट्र-पर्यटन विकास निगम में नौकरी कर रहे २८ वर्षीय नीलम कुमार ने ७२ विषैले सर्पों के बीच ७२ घंटे रहकर एक अनूठा कीर्त्तिमान स्थापित किया। बाद में इस कीर्त्तिमान को केरल के ही एक युवक ने तोड़ा। इसके पूर्व मई, १९७१ में पीटर स्लेमैन ने दक्षिण अफ्रीका के जोहान्सबर्ग में १८ विषैले और ६ अर्ध विषैले साँपों के साथ ५० दिन गुजार कर कीर्त्तिमान स्थापित किया था। लेकिन हर २४ घंटे बाद वे आधे घंटे आराम करने के लिए बाहर निकलते थे। उनका कक्ष ३।। × २१/२४ मीटर माप का था। नीलम कुमार ने इससे ४ प्रतिशत अधिक क्षेत्रफल वाला काँच का कक्ष अपने इस प्रयोग के लिए लिया तथा ७२ घंटे में एक सेकंड के लिए भी बाहर नहीं निकले। सर्पों की संख्या में स्लेमैन से चार गुनी थी। अतः सर्प विशेषों ने स्लैमैन और नीलम कुमार को क्रमशः ६०० और १५१२ अंक दिए।

यह प्रदर्शन नीलम कुमार ने २० से २३ जनवरी १९७० की अवधि में किया। २० जनवरी को ३ बजकर ५५ मिनट पर नीलम कुमार ने जिस काँच के कक्ष में प्रवेश किया, उसमें कलकत्ता सर्प उद्यान के मालिक दीपक मित्रा ने ३६ नाग, १२ करैत तथा २४ गोनस सर्प छोड़ रखे थे। नीलम कुमार की सुरक्षा के लिए हर तरह के प्रयत्न किए थे। कक्ष के बाहर पुलिस, पत्रकारों तथा दर्शकों की भारी भीड़ रही।

२१ जनवरी को एक नाग तथा एक करैत आपस में लड़ कर मर गए। मृत सर्पों को निकालकर उन्हीं की जाति के दो साँपों को अंदर किया गया। दोपहर की गर्मी बढ़ने पर कई साँप खतरनाक मुद्रा में फन उठाकर नीलम कुमार को घूरने लगे। सर्पों के चलने में गति आ गई। गर्मी कम करने के लिए फुहारा दिया गया।

बंबई के दो सर्प विशेषज्ञ श्रीमती नीलिमा तथा जी० डीसा और दीपक मित्रा हर क्षण निगरानी करते रहे। नीलम कुमार के सीने पर उनके शरीर पर कई साँप रेंग कर चढ़े और और धीरे से उतर भी गए। २२ जनवरी को दर्शकों में से कुछ ने कहा कि साँपों को विष रहित कर दिया गया है। साँपों को विष रहित साबित करने

वाले के लिए नीलम कुमार ने १० हजार रुपये इनाम देने की घोषणा की। लेकिन यह साबित करने की किसी की हिम्मत न हुई। दीपक मित्रा ने एक नाग निकालकर अपने हाथों से उसका मुँह खोलकर पत्रकारों तथा दर्शकों को उसकी विष ग्रंथि दिखाई, २३ जनवरी को ३ बजकर ५५ मिनट में नीलम कुमार को एक करैत साँप की माला पहनाकर स्वागत किया गया और कक्ष से बाहर निकाला गया। जहाँ नीलम कुमार की माँ श्रीमती उषा ताई जो ७८ घंटे से घर में बैठकर बेटे की सुरक्षा के लिए प्रार्थना कर रही थीं, ने अपने बेटे को गले से लगा लिया।

इस समय नीलम कुमार के पास एक अजगर तथा डेढ़ सौ साँप हैं, जिन्हें उन्होंने अपने घर में सुरक्षित स्थान पर पाल रखा है। साँपों के शौक के बारे में पूछने पर वे बताते हैं कि बचपन में एक बार उनके कमरे में एक जहरीला साँप घुसा आया था, जिसे लेकर वे बड़े प्यार से आफिस में गए हुए थे, मैनेजर तो घबरा गए। नीलम के साँपों को साथी बनाने की यहीं शुरुआत थी।

'रस्सी को साँप' समझने में तो कभी-कभी ही भूल होती है, पर साँपों को मृत्यु का दूत मानने की भ्रांति तो एक प्रकार से लोक मान्यता ही बन गई है। ऐसी-ऐसी अगणित भ्रांतियों का जंजाल मनुष्य के मस्तिष्क पर चढ़ा रहता है, इससे छुटकारा पाया जा सके तो भय के स्थान पर सौंदर्य के दर्शन करने का आनंद सहज ही उठाया जा सकता है।

जीव-जंतु मनुष्य से कम संवेदनशील नहीं

विचारशीलता के क्षेत्र में मनुष्य चेतन जगत् का नेतृत्व करता है, किंतु उससे भी महत्त्वपूर्ण जो चीज है, जिसके आधार पर मानवी गरिमा एवं श्रेष्ठता का प्रतिपादन किया जाता है, वह है भाव-संवेदनाएँ। यह वह आधार है, जो मनुष्य को सृष्टि का, प्राणि-जगत् का मुकुटमणि बनाती है। संवेदनाओं से रहित व्यक्ति बौद्धिक क्षेत्र में चाहे जितना आगे बढ़ जाए, किंतु अपनी गरिमा बनाए रख पाने में असमर्थ ही सिद्ध होता है।

समझा यह जाता है कि भाव संवेदनाओं की पूँजी परमात्मा ने मात्र मनुष्य को ही दी है, किंतु यह सोचना भूल है। उसने अन्य जीवों को भी यह विशेषता प्रदान की है, जिससे वे अपने छोटे से पारिवारिक जीवन को सरस एवं उपयोगी बनाए रख सकें। न्यूनाधिक रूप में यह गुण प्रत्येक प्राणी में देखा जाता है। कभी-कभी खूँखार जीवों की संवेदना को देखकर आश्चर्य चकित रह जाना पड़ता है। दो विरोधी प्रवृत्तियाँ एक चेतना में केंद्रीभूत होते देखकर बुद्धिभ्रमित हो जाती है और श्रद्धा से उस सृजेता के समक्ष मस्तक झुक जाता है। जुलाई १९५१ लंदन में एक प्रदर्शनी आयोजित हुई। विभिन्न प्रकार के जंगली जानवर लाये गये थे। उनमें अधिकांश मांसाहारी जीव थे। एक दिन एक ऐसी घटना घटित हुई, जिसने सभी लोगों का ध्यान आकर्षित किया। एक युवा दंपत्ति अपने नन्हें कुत्ते को लिए शेर के कटघरे के सामने खड़े होकर उसकी गतिविधियों का आनंद ले रहे थे। इतने में उनका कुत्ता किसी प्रकार कटघरे के सीकचों के बीच से होकर भीतर पहुँच गया। शेर ने उसे देखकर दहाड़ लगायी तथा उसकी ओर बढ़ा। दहाड़ सुनकर कुत्ता भयभीत हो गया तथा पिंजड़े के कोने में जाकर चित्त होकर लेट गया। अपने पैरों को इस प्रकर ऊपर उठा लिया जैसे जीवन-दान की याचना कर रहा हो। उसकी आँखों से कातरता टपक रही थी। कौतूहल वर्धक एवं लोम हर्षक दृश्य को देखने के लिए बाहर भीड़ बढ़ती जा रही थी। सबको यह विश्वास हो चला था कि कुछ ही क्षणों में शेर उसको खा जाएगा।

शेर कुत्ते की ओर बढ़ा, उसके पैर पकड़कर उलट दिए। उछलकर कुत्ता अपने पिछले पैरों पर पूँछ दबा बैठ गया। शेर उसको सूँघने लगा। कुछ देर पश्चात् अपने सिर को इधर-उधर हिलाया। लगता था कुत्ते की कातर दृष्टि उसकी चेतना को प्रभावित कर रही हो, सभी देखकर विस्मित रह गए, शेर कुछ ही क्षणों के बाद कुत्ते को उसी प्रकार चाटने लगा जैसे गाय अपने बछड़े को चाटती है। शेर के मालिक ने उसे खाने के लिए मांस के टुकड़े फेंके, तो उसने उन टुकड़ों को और भी छोटा करके कुत्ते के

सामने डाल दिया। कुत्ते का भी भय जाता रहा तथा वह निर्भीक भाव से टुकड़ों को खाने लगा।

सायंकाल जब शेर लेट गया तो वह भी उसके पंजे पर अपना सिर रखकर सो गया। उस दिन के बाद शेर ने कुत्ते के ऊपर कभी आक्रमण नहीं किया। दोनों एक साथ प्रेम से खाते तथा अपने हाव-भाव द्वारा परस्पर स्नेह का आदान-प्रदान करते। प्रदर्शनी में सर्वाधिक आकर्षण एवं मर्मस्पर्शी दृश्य यह बना रहा। कुत्ते के मालिक ने शेर के मालिक से अपने जानवर की माँग की तथा पिंजड़े से निकालने के लिए अनुरोध किया, किंतु कुत्ते को बाहर निकालने के सारे प्रयास असफल सिद्ध हुए। जैसे ही कोई उसे निकालने के लिए आगे बढ़ता शेर गरजते हुए अपनी नाराजगी प्रदर्शित करता।

कहते हैं कि दोनों सालभर तक साथ-साथ घनिष्ठ मित्र के समान बने रहे। एक बार कुत्ता बीमार पड़ा तथा मर गया। शेर पर उसकी मृत्यु का इतना गहरा प्रभाव पड़ा कि खाना-पीना छोड़कर उसके शोक में सातवें दिन वह भी मर गया।

शेर जैसे हिंसक जीवों को भी स्नेह सौजन्य के बंधनों में बाँधा जा सकता है, यह कुछ असंभव सा लगता है। पर यह उतना ही सत्य है, जितना जीवधारियों में चेतना का अस्तित्व। हालैंड निवासी एक वन संरक्षक दंपत्ति जार्ज एडम्स ने जो वहाँ के नेशनल पार्क में वरिष्ठ वन्य संरक्षक के पद पर कार्यरत थे, यही कर दिखाया। दोनों पति-पत्नी अधिकांश वन्य जीवों के साथ रहते-रहते उनसे इतने प्रेम करने लगे कि श्रीमती जाय एडम्सन को वनदेवी तथा जार्ज एडम्स को वन मित्र कहा जाने लगा।

जिस संरक्षित वन में वे काम करते थे उसका नाम है सिरमनेटी। इस वन का क्षेत्रफल ४५०० वर्गमील है। वन जीवों के लिए बने इस उन्मुक्त उद्यान को देखने के लिए संसार भर से लाखों लोग लंबी यात्राएँ करके आते हैं। कुछ समय पूर्व इसमें रहने

वाले वन्य जानवरों की संख्या करीब ४ लाख आँकी गई थी। एक दिन पार्क के वन रक्षक कर्मचारी को किसी सिंह ने मार डाला।

सर्वविदित है कि मनुष्य के रक्त का चस्का लग जाने के बाद सिंह प्रायः नरभक्षी हो जाते हैं। बहुत संभावना थी कि वह शेर, जिसने वनरक्षक कर्मचारी को मारा था, वह भी नरभक्षी हो जाए। जार्ज को यह काम सौंपा गया कि वे उस नरभक्षी का अंत कर डालें और उन्होंने ऐसा कर भी दिया। वह नरभक्षी सिंह मादा शेरनी थी। उसकी माँद में तीन सिंह शावक पाए गए।

जार्ज को न जाने क्या सूझी कि वे तीनों सिंह शिशुओं को ले आए और उन्हें लाकर अपनी पत्नी को भेंट किया। जाय सिंह शावकों को देखकर पहले डरी, पीछे उसने इन बच्चों को पालने का निश्चय किया। उन्हें पालते समय ही जाय के हृदय में वात्सल्य का स्रोत उमड़ पड़ा और वह उन्हें चाव-दुलार से पालने लगी। आरंभ में उन्हें दूध पीना सिखाना तक बड़ा कठिन था। मुँह में रबड़ की नली डालकर दूध पिलाया गया। कुछ ही महीनों में बच्चे उछलने कूदने लायक हो गए।

तब तीन सिंह शिशुओं में से दो चिड़ियाघर भेज दिया और एक मादा शिशु को जाय ने अपने पास ही रख लिया। उसका नाम था ऐल्सा। जाय ने ऐल्सा को अपनी पुत्री की तरह पालना, लाड़-दुलार करना आरंभ कर दिया। वे अपने हाथों से उसे भोजन करातीं, उसी के लिए बनाई गई चारपाई पर उसे सुलातीं। मच्छरों से बचाने के लिए मसहरी लगातीं। सर्दी न लग जाए इसलिए रजाई ओढ़ातीं।

ऐल्सा भी इस प्रेम व्यवहार से प्रभावित हुए बिना न रह सकीं। वह अपनी इस नर शरीर धारी मौसी के हाथ-पैर चाटकर अपने ढंग से प्रेम प्रदर्शित करती। जाय की गोदी में जा बैठती और खुजलाए जाने का आनंद लेती। बिल्ली की तरह वह पीछे-पीछे लगी रहती। इन दोनों के प्रेम संबंध इतने सघन हो गए कि ऐल्सा जाय एडम्स की गोदी में सिर रखकर घंटों निद्रामग्न रहती। जाय

भी कभी-कभी ऐल्सा की पीठ पर सिर रखकर चुपचाप पड़ी रहती थी।

वह स्नेह-सद्भावना का ही चमत्कार था कि क्रूरता और हिंस्र स्वभाव को भूलकर वह सिंहशाविका इतनी मृदुल हो गई, उसके स्वभाव में ममता और आत्मीयता के अंकुर इतने गहरे जमते गए कि उसकी भयंकरता और आक्रामकता एकदम तिरोहित हो गई। घर में रहते ऐल्सा बहुत से शब्दों और इशारों का अर्थ भी समझने लगी। वह धीरे-धीरे बड़ी होने लगी। होते-होते प्रौढ़ हो गई और साथी की आवश्यकता अनुभव कर व्याकुलता प्रदर्शित करने लगी। जार्ज ने उसकी मनःस्थिति को समझ कर जंगल में उस क्षेत्र में छोड़ दिया जिधर सिंह रहते थे।

यौवन गंध के आकर्षण ने उसे सिंह साथी भी मिला दिया और फिर वह उधर ही रहने लगी। लेकिन वह अपने मायके को सर्वथा भुला न सकीं। जब कभी वह एडम्स दंपत्ति के निवास पर आ जाया करती और हफ्तों वहाँ रहती। लोग तो ऐल्सा को देखकर सहम से जाते, परंतु उसने कभी किसी पर आक्रमण नहीं किया और न ही कभी किसी की ओर गुर्रा कर देखा ही। उन्मुक्त वातावरण में स्नेह और प्रेम द्वारा सिंह को बोलने और उसकी क्रूरता निरस्त कर उसमें सौम्य स्वभाव उत्पन्न करने की कुशलता के लिए एडम्स दंपत्ति को सर्वत्र सराहा गया।

●

मनुष्येतर प्राणियों में पाई जाने वाली अतींद्रिय क्षमताएँ

मनुष्य सहित हर प्राणी में उससे कहीं अधिक क्षमता विद्यमान है, जितना कि वह अपने शरीर और मन के द्वारा कार्यान्वित कर पाता है। शक्तियों का स्वरूप ऐसा है, जिसमें जब जिन्हें काम में लाया जाता है तब वे उतनी मात्रा में सक्षम रहती हैं और जब उनका प्रयोग-उपयोग नहीं होता, तो वे फिर ऐसे ही निरर्थक पड़ी-पड़ी प्रसुप्त होती चली जाती हैं। बीज नाश तो नहीं होता, किंतु क्रियान्वित न किए जाने पर उनका शिथिल या विस्मृत हो जाना स्वाभाविक है। साथ ही यह भी संभव है कि यदि उन्हें प्रयत्नपूर्वक जगाया जाए तो वे सजीव-सक्रिय ही नहीं, प्रखर भी हो उठती हैं। अभ्यास इसी का नाम है। साधना भी इसी प्रयत्नशीलता को कहते हैं।

मनुष्यों की अतींद्रिय क्षमता का आभास समय-समय पर मिलता रहता है। जो कार्य प्रत्यक्ष इंद्रियों के द्वारा नहीं हो सकता उसे अतींद्रिय क्षमता जाग्रत होने पर किया जा सकता है। दूर श्रवण, दूरदर्शन, विचार संचालन, भविष्य कथन, पूर्वाभास जैसी अनेक अतींद्रिय क्षमताओं को मनुष्य में पाया गया है। उनका कारण ढूँढ़ने तथा जगाने का उपाय ढूँढ़ने में विज्ञजन संलग्न हैं। आशा की गई है कि निकट भविष्य में मनुष्य उसी प्रकार चेतनात्मक रहस्यों से भी लाभान्वित होने लगेगा, जिस प्रकार पदार्थ विज्ञान की सहायता से कुछ दिन पूर्व तक के अविज्ञात प्रकृति शक्तियों का भरपूर लाभ उठा रहा है।

अब प्रमाण मिल रहे हैं कि मनुष्य की तरह विभिन्न प्राणियों में भी अतींद्रिय क्षमता पाई जाती है और वे भावी संभावनाओं का बहुत कुछ पूर्वाभास प्राप्त कर लेते हैं। मनुष्य की तरह उन्हें भी प्रशिक्षित किया जाए तो वे इन सामर्थ्यों को विकसित कर सकते हैं और उसका लाभ मनुष्य को दे सकते हैं। इस प्रकार सिद्ध पुरुषों की श्रेणी में मनुष्येतर प्राणी भी सम्मिलित हो सकते हैं। इस

सफलता का लाभ उठा सकने में मनुष्य समाज की भी हिस्सेदारी हो सकती है। जबकि अभी इस विशेषता का लाभ वे अपनी ही आत्मरक्षा के लिए उठा पाते हैं। अन्यान्य पशु-पक्षियों में पाई जाने वाली अतींद्रिय क्षमता का आभास, प्रमाण समय-समय पर मिलता रहता है।

प्रकृतिगत दुर्घटनाओं तथा अशुभ संभावनाओं के संबंध में अब तक एक भी ऐसा माध्यम निकल कर नहीं आया है जो सही भविष्यवाणी कर सके। किंतु पशु-पक्षियों द्वारा दी गई पूर्व सूचनाओं में से एक भी अवसर ऐसा नहीं गया जो मिथ्या सिद्ध हुआ हो। चीनी विशेषज्ञों ने पिछले दिनों हुए ११ भूकंपों के विवरण प्रस्तुत करते हुए कहा है कि ऐसी भविष्यवाणियाँ जहाँ भी-जिन दिनों भी दी गईं, वे सभी सही सिद्ध हुईं। इस संबंध में पाँडा (विशेष किस्म की बिल्ली), याक (सुरागाय) जैसे जानवरों ने तो न केवल चिल्लाना आरंभ किया था, वरन् भूखे होने पर भी चारा लेने से इनकार कर दिया था। यहाँ तक कि चींटियाँ भी अपनी हलचलें बंद करके स्तब्ध हो गईं थीं।

चीन के ताँग शान क्षेत्र में सन् १६७६ में भयंकर भूकम्प आया था। जिसमें लाखों व्यक्ति मारे गए, किंतु साथ ही यह भी सच है कि मात्र पशु-पक्षियों द्वारा दी गई चेतावनी के आधार पर प्रायः १० लाख व्यक्तियों ने भाग कर अपनी जानें बचा ली थी।

स्टेन फोर्ड अनुसंधान संस्थान के अध्यक्ष डॉ० विलियम काट्स का निष्कर्ष है कि भूकंप-तूफान जैसी घटनाओं से एक-दो दिन पूर्व वायुमंडल में विद्युतीय सूक्ष्म परिवर्तन होते हैं। उन्हें मशीनें तो नहीं पकड़ पाती, पर अधिक संवेदनशील इंद्रियों वाले प्राणी पकड़ लेते हैं; क्योंकि श्रेष्ठ से श्रेष्ठ मशीन की तुलना में इन प्राणियों की संवेदन शक्ति प्रायः एक हजार गुनी अधिक पाई गई है।

सन् १६६३ में युगोस्लाविया के स्कोटजी क्षेत्र में भयानक भूकंप आया था। उस दुर्घटना में प्रायः वह सारा नगर ही नष्ट-भ्रष्ट

हो गया। इसका पूर्व अनुमान किसी को भी नहीं था, किंतु देखा गया था कि दुर्घटना से कई घंटे पूर्व उस क्षेत्र के जानवर बुरी तरह स्थान छोड़कर सुरक्षित दिशा में भाग चले थे। जो रस्सियों से बँधे थे या चिड़िया घर में कैद थे, उन्होंने कुहराम मचा रखा था और बंधन से छूटने का प्राण-प्रण से प्रयत्न कर रहे थे। उनने बुरी तरह चिल्लाना आरंभ करके सभी को हैरान कर दिया था। उस समय तो इस कुहराम का कारण न समझा जा सका, किंतु बाद में जाना गया कि प्राणियों को भूकंप की सूचना उनकी अतींद्रिय क्षमता ने बता दी थी और वे आत्मरक्षा के लिए न केवल प्रयत्नशील थे, वरन् दूसरों को भी चेतावनी दे रहे थे।

प्रायः सर्प गर्मी, बरसात के मौसम में अपने बिलों से निकलते-विचरते तथा आक्रमण करते देखे जाते हैं। पर दिसंबर १९७४ की तेज ठंड में लियाओनिंग प्रांत के उत्तरी-पूर्वी क्षेत्र में अचानक सर्प भिन्न तरह का व्यवहार करने लगे। कड़कड़ाती ठंड में उन्हें अपने बिलों से निकलकर उन्मादी रूप में बिलबिलाते देखा गया। चूहे दिन के उजाले में गली, चौराहे पर निर्भीक भागदौड़ मचाने लगे। इसके कुछ ही देर बाद उस क्षेत्र में भूकंपीय झटकों की शृंखला शुरू हुई। फरवरी, १९७५ में भी जंतुओं का ऐसा ही परिवर्तित व्यवहार देखा गया, सुअर परस्पर लड़ने-भिड़ने लगे तथा अपने बाड़े को तोड़कर निकल भागे। गाय, बैल जैसे सीधे जानवर भी रस्सियाँ तोड़कर मुक्ति का प्रयास करने लगे। कुत्ते जमीन को सूँघते तथा अकारण ही भौंकते देखे गए। इसके तुरंत बाद ही भूकंप-झटकों की दूसरी शृंखला प्रारंभ हुई। ४ फरवरी १९७५ की सुबह जंतु जगत् की यह विचित्र गतिविधियाँ जब चरमोत्कर्ष पर पहुँच गईं, तो चीनी अधिकारियों ने पूर्व अनुभवों के आधार पर आने वाले भूकंप का अनुमान लगाकर हैंचेग शहर को तुरंत खाली करने का आदेश दिया। खाली होने के कुछ ही घंटे बाद एक विनाशकारी भूकंप आया। जिसने पूरे नगर को कुछ ही क्षणों में धराशायी कर दिया।

इन घटनाओं के आधार पर जीव वैज्ञानिकों के मन में यह विश्वास सुदृढ़ होता जा रहा है कि जंतुओं में अवश्य ही कोई ऐसा ऐंटेना या संवेदी तंत्र है, जो भूकंपीय तरंगों को पकड़ने में सक्षम है। दूसरी ओर भू भौतिकी शोधों में ऐसे सूत्र संकेत मिले हैं जो बताते हैं कि भूकंप आने के पूर्व भूगर्भ में अनेकों प्रकार की सूक्ष्म हलचलें होती हैं। संभवतः उन्हीं को अपने संवेदी अंगों द्वारा ग्रहण करके जीव परिकर भूकंप का पूर्वाभास कर लेता है और भावी विनाश लीला को देखते हुए चित्र-विचित्र हरकतें करता है। भूचाल आकस्मिक नहीं होता, अपनी विनाशलीला प्रकट करने के पूर्व अनेकों चरणों में होकर गुजरता है। भूचाल से पूर्व धरती काँपती है। यह कंपन पृथ्वीगत चट्टानों के पारस्परिक टकराव के कारण होता है। इसके बाद भू-गर्भीय हलचलें तीव्रतम होती चली जाती हैं। भूकंपीय तरंगें भूगर्भीय चट्टानों से होती हुई पृथ्वी की सतह तक पहुँचती और पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्र में भारी फेर-बदल उत्पन्न करती है। ये सब घटनाएँ इतनी सूक्ष्म होती हैं कि यंत्र-उपकरणों की पकड़ में नहीं आतीं, जीव-जंतुओं के अत्यंत संवेदनशील अंग उन्हें पकड़ लेते हैं।

पृथ्वी का सूक्ष्म चुंबकीय क्षेत्र परिवर्तन एक ऐसी ही घटना है, जो सर्वोत्तम दिशा ज्ञान रखने वाले पक्षी पालतू कबूतरों के ही अनुभव में आती है। ध्रुवों पर पृथ्वी का भू चुंबकीय क्षेत्र औसतन ६० हजार गॉस (गॉस चुंबकीय माप की इकाई) तक पाया जाता है, विषुवत् रेखा पर यह लगभग ३० हजार गॉस होता है। कॉर्नवेल यूनिवर्सिटी के जीव विज्ञानी एस० लारकिंस तथा उनके दिवंगत सहयोगी विलियम कीटन के अनुसार अति सुग्राहक चुंबकीय सुई की भाँति पालतू कबूतर ३० गॉस जैसे अति सूक्ष्म चुंबकत्व को भी आसानी से पकड़ लेता है। यह विशेषता मात्र कबूतरों में ही नहीं, मधुमक्खियों, गुबरैलों, दीमकों तथा अन्य छोटे जीवों में भी पाई जाती है।

कहा जा चुका है कि जिस प्रकृति को मनुष्य शांत, स्थिर मानता है, वह ऐसी है नहीं, उसमें निरंतर स्पंदन हो रहा है।

उन स्पंदनों में भली-बुरी घटनाओं के बीज विद्यमान हैं। उसमें ऐसी ध्वनियाँ निकलती रहती हैं जो हमारी श्रवण क्षमता से परे है। अपनी अद्‌भुत श्रवण क्षमता के बल पर वे नगण्य जीव-जंतु उन्हें सुन लेते हैं तथा प्रकृति के गर्भ में पल रही आपदाओं-विभीषिकाओं से जीवन रक्षा करने की पूर्व व्यवस्था बनाते तथा तद्‌नुरूप संदेश संप्रेषित करते देखे जाते हैं। मनुष्य की श्रवण क्षमता सीमित है। कान १००० से ४००० साइकिल्स प्रति सेकंड की ध्वनियों को ही पकड़ सकते हैं। १०,००० साइकिल्स प्रति सैकंड वाली ध्वनियों के लिए हम बहरों के समान हैं, जबकि कुत्ते, बिल्ली, लोमड़ी ६० साइकिल प्रति सेकंड ध्वनि को भी आसानी से सुन सकते हैं। चूहे, चमगादड़ तथा ह्‌वेल, डालफिन जैसी मछलियाँ तो १०००,००० साइकिल प्रति सेकंड तक की ध्वनियों को न केवल सुन सकते हैं, वरन् वैसी ध्वनि तरंगें उत्पन्न करने में भी सक्षम हैं।

इस स्तर की ध्वनियों को अल्ट्रा सोनिक तरंगें कहते हैं। इनके अतिरिक्त एक अन्य प्रकार की ध्वनि तरंग भी होती है, जो भूगर्भीय गैसों के आकस्मिक प्रस्फुटन से पैदा होती है। ये ध्वनि तरंगें पूर्णतः मानवी श्रवण क्षमता से परे होती है। सिस्मोग्राफ जैसे श्रवण यंत्रों के माध्यम से भी इन्हें नहीं सुना जा सकता। पशु-पक्षियों की इंफ्रा ध्वनि तरंग ग्रहण सामर्थ्य संबंधी एक पर्यवेक्षण में जीव विज्ञानी मेलविन क्रीथेन एवं उनके सहयोगियों ने पाया कि पालतू कबूतर ३ साइकिल प्रति मिनट जैसी अत्यंत मंद ध्वनि तरंग को भी आसानी से पकड़ लेते हैं। इसी प्रकार का तरंग तंत्र कॉड मछली में भी पाया जाता है, जो भूकंप से पूर्व उन्मादियों जैसी इधर-उधर उछलती-कूदती दिखाई देती है।

प० जर्मनी के फ्रीबर्ग इंस्टीट्‌यूट के 'फैकल्टी ऑफ पैरासाइकॉलॉजी' के अध्यक्ष डॉ० हेंस बैंडर ने प्राणियों में पायी जाने वाली अतींद्रिय क्षमता के अनेकों प्रमाणों का उल्लेख किया है। उसमें दूसरे महायुद्ध काल की उस घटना को भी उद्‌धृत किया

गया है जिसमें भयानक बम-बारी से पूर्व एक बतख ने फ्रीवर्ग पार्क में गलाफाड़ कुहराम मचाया था। उसे नागरिकों ने विपत्ति के पूर्व सूचना समझा और इतनी देर में बचाव का जो उपाय संभव था वह उनने कर लिया। बतख मरते दम तक शोर मचाती रही और अंततः उसी बमबारी का शिकार हो गई। बाद में वहाँ के नागरिकों ने उसे कृतज्ञतापूर्वक स्मरण रखा और एक दर्शनीय स्मारक बनाया।

शेप्युलिन (फ्रांस) में जीन ड्यूजी नामक व्यक्ति का एक पालतू कुत्ता था—स्पेवियल। ड्यूजी पर डाकुओं ने आक्रमण किया और उसे मारकर लाश को पास की नदी में फेंक दिया। ढूँढ-खोज होती रही, पर ड्यूजी का कहीं पता न चला, पर कुत्ते ने अपने मरे हुए मालिक की लाश को खोज निकाला। उसने छह दिन और छह रात गाँव के परिचित लोगों के कपड़े खींचकर नदी तट तक ले जाने का प्रयास किया। कई दिन तक तो इस विचित्र व्यवहार का कोई कारण न समझा जा सका, पर जब लोग कुत्ते के आग्रह पर वहाँ तक गए, तो उन्होंने नदी में डूबी हुई लाश को निकाल लिया।

अपराधियों की खोज में कुत्तों की भूमिका सर्वविदित है। इस प्रयोजन के लिए पुलिस विभाग के लिए उन्हें विशेष रूप से प्रशिक्षित किया जाता है। वे जासूसी के लिए मनुष्य की तुलना में अधिक सुयोग्य पाए गए हैं। यह कठिन कार्य वे अपनी घ्राण शक्ति की विशेषता के कारण हरी कर पाते हैं। इस ढूँढ़ खोज में उनकी आँखों की सूझ-बूझ का प्रयोग नहीं होता वरन् वे अपराधी के शरीर से निकलने वाली एक विशेष गंध की दिशा का अनुसरण करते हुए पीछा करते हैं और वहाँ जा पहुँचते हैं जहाँ अभीष्ट व्यक्ति रह रहा होता है। स्मरण रहे, हर व्यक्ति की अपनी एक विशेष गंध होती है। जैसे किसी का चेहरा किसी से नहीं मिलता उसी प्रकार यह गंध भी हर किसी की अलग-अलग होती है। कुत्ते को सर्वप्रथम उस गंध से परिचित कराया जाता है जिसका कि उसे पीछा करना है। यह

कार्य अपराध हुए स्थान पर कुछ समय ठहर कर प्रशिक्षित कुत्ते भली प्रकार कर लेते हैं और अपराधी की खोज पर टेढ़े मेढ़े रास्तों को पार करते हुए निकल पड़ते हैं।

बुलंद शहर (उ० प्र०) के निकटवर्ती गाँव मनजेरपुर में दीवार ढहने के कारण एक व्यक्ति उसके नीचे दब गया। उसके पालतू कुत्ते को यह जानकारी सर्वप्रथम प्राप्त हुई और उसने वहाँ कुहराम मचाना आरंभ कर दिया। जब तक लोग पहुँचे और खोदकर तलाश निकाली तब तक कुत्ता धाड़ मारकर रोता रहा और जब देखा कि उसका मालिक मर चुका, तो उसने भी उस दृश्य को देखकर छटपटाकर प्राण त्याग दिए।

'दि साइकिक पावर ऑफ एनीमल्स' ग्रंथ के लेखक श्री विलशूल ने ऐसी घटनाएँ उद्धृत की हैं, जिनसे प्रतीत होता है कि पशुओं में बुद्धिमत्ता भले ही कम हो, पर वे अतींद्रिय क्षमताओं की दृष्टि से मनुष्य की तुलना में कहीं आगे होते हैं। पुस्तक में १६२६ की उस घटना का उल्लेख है, जिसमें सड़क पर सरपट दौड़ता हुआ घोड़ा यकायक ठिठका और बहुत धमकाने पर भी एक कदम आगे न बढ़ा, बाद में कुछ ही मिनट बाद उसी सड़क पर आकाश से बिजली गिरी और पेड़-पौधे तक जल गए। यदि घोड़ा आगे बढ़ गया होता तो उसे सवार समेत दुर्घटना का शिकार होना पड़ता।

ऐसी ही एक और घटना उस पुस्तक में उल्लेख है। सिगसिंग की जेल में एक कोठरी के सामने वहाँ रहने वाला कुत्ता बेतरह चिल्लाने लगा। गार्डरों ने आकर देखा तो पाया कि एक कैदी आत्महत्या कर रहा था। कुत्ते ने सूचना देकर उस दुर्घटना को होने से बचा लिया।

विल शूल ने चूहों में भी यह क्षमता पाई है। उन्होंने मैनहटन की एक विशालकाय पुरानी कोठी का उल्लेख करते हुए लिखा है कि उसमें से चूहे झुंड बनाकर तीन किस्तों में भागे और सैकड़ों की संख्या में अपना पुराना निवास छोड़कर एक साथ पलायन कर

गए। इसके उपरांत उस कोठी में रहने वालों पर लगातार अप्रत्याशित विपत्तियां आईं और किसी न किसी कारण बड़ी संख्या में एक-एक करके मौत के मुँह में चले गए।

जलयानों में अब से कुछ समय पहले चूहे पाले और खुले रखे जाते थे। इसलिए कि तूफान आने की पूर्व सूचना वे दे सकें। जब कभी तूफान आने को होते हैं, चूहों को उसकी पूर्ण जानकारी मिलती है और वे अन्यत्र भाग जाने का उपक्रम करते हैं। इस आधार पर जलपोतों के संचालक सावधान हो जाते थे और बचाने का प्रयत्न करते थे।

पशुओं की विशिष्ट क्षमताओं का अनुसंधान करने वाले अमेरिकी वैज्ञानिक जे० बी० राइन ने ऐसे अनेकों प्रमाण पत्र एकत्र किए हैं, जिनमें वे इन प्राणियों को अतींद्रिय क्षमता संपन्न मानते हैं। उनने अपने अनुसंधान प्रकाशन में कैलीफोर्निया के प्रिंसिपल स्टेसी वुड्स की बिल्ली का उल्लेख किया है, जो मालिक से बिछुड़ जाने पर उन्हें १४ महीने लगातार खोजती रही और एंडरसन से ओकलाहोमा के बीच की १५०० मील की दूरी को पार कर किसी प्रकार भटकते-भटकते उन तक जा पहुँचने में सफल हुई थी। मालिक को स्वप्न में भी इसकी आशा नहीं थी कि द्रुतगामी वाहनों द्वारा सफर करने पर भी बिल्ली उन्हें खोज निकालेगी और संकट भरे रास्ते पार करके सही स्थान ढूँढ़ निकालने में सफल होगी।

मेड फोर्ड में मकान की अदला-बदली के सिलसिले में मार्टिन रास की लूसी बिल्ली कहीं गायब हो गई। मालिक अपना असबाब बाँधकर घर से बहुत दूर नए मकान में चला गया। बिल्ली ने मालिक को और मालिक ने बिल्ली को खोजा, पर कोई किसी का पता न पा सका।

बिल्ली ने आखिर मालिक को खोज ही निकाला। सैकड़ों मील दूर सर्वथा अपरिचित इलाके में वह वहीं जा पहुँची जहाँ मालिक ने नया मकान लिया था। उसने किस प्रकार पता पाया और

इतना लंबा अपरिचित रास्ता कैसे तय किया, इस पर मार्टिन आश्चर्यचकित रह गया।

राइन ने ऐसी ही एक और घटना एक कबूतर की अंकित की है। बर्जीनिया के समर्सबिले नगर के एक पकिंस नामक लड़के ने एक कबूतर पाला था। पहचान के लिए उसके पैर में एक छल्ला पहना दिया, जिस पर '१७६' लिखा था। कबूतर पलता रहा। एक बार लड़का दुर्घटनाग्रस्त हुआ और उसे १२० मील दूर एक अस्पताल में आपरेशन के लिए भर्ती कराना पड़ा। कई दिन बीतने पर जिस समय बाहर घोर बर्फ पड़ रही थी, एक कबूतर अस्पताल कर्मचारियों के प्रतिरोध की परवाह न करता हुआ लड़के के बिस्तर पर जा बैठा। ऐसा वहाँ पहले कभी नहीं हुआ था, सभी स्तब्ध थे। लड़के ने हाथ बढ़ाकर देखा तो यह उसका वही कबूतर था जिसके पैर में '१७६' अंक वाला छल्ला पहन रखा था।

वर्षा आने से पूर्व काली चींटियाँ अपने अंडे लेकर ऊँचे या छाया वाले ऐसे स्थान की ओर चल पड़ती हैं जहाँ सुरक्षा संभव हो सके। मेंढकों का लगातार टर्राना भी वर्षा के आगमन की पूर्व सूचना है।

विभिन्न प्राणियों में पाई जाने वाली अतींद्रिय क्षमता को देखते हुए लगता है कि वे भी अपने क्षेत्र में अपने किस्म के सिद्ध पुरुष हैं। यह विशेषताएँ उनके लिए तो उपयोगी हैं ही, यदि मनुष्य चाहे तो वह भी उनकी इन विशेषताओं से अब की अपेक्षा भविष्य में कहीं अधिक लाभ उठा सकता है।

नियमित जीवन की प्रकृति प्रेरणा

दृश्य जगत् की समस्त गतिविधियाँ, क्रिया-कलाप और हलचलें एक नियम व्यवस्था के अंतर्गत चल रही हैं। नियमितता उनमें सर्वोपरि है। कहा जाए कि नियमितता संसार का सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य है, तो भी कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। प्रकृति की इच्छा है कि हर प्राणी अपना कार्य नियमित समय पर किया करे।

सूर्य, चंद्र, पृथ्वी, ग्रह-उपग्रह नियत-निर्धारित लक्ष्य पर घूमते हैं। वृक्ष अपने समय पर फलते-फूलते हैं। कहा भी गया है "समय पाय तरुवर फले केतिक सींचो नीर।" ऋतुएँ अपने क्रम से बदलती हैं। प्रत्येक नियत कार्य नियत समय पर करने के लिए प्रकृति ने इन नासमझ कहे जाने वाले वृक्ष-वनस्पतियाँ तथा जीव-जंतुओं को जाने कौन-सी ऐसी घड़ी दी है कि वे अपना हर काम नियत-निर्धारित समय पर कर ही लेते हैं। अपने चारों ओर जिधर भी दृष्टि पसारकर देखा जाए उधर ही समय की पाबंदी और नियमितता का बोलबाला दिखेगा।

मधुमक्खी, तिलचट्टे, केकड़े, चूहे, चींटी, मक्खी आदि की दिनचर्या उनके निर्धारित समय क्रम से ही आरंभ होती है। उनके क्रिया-कलापों में व्यवधान उत्पन्न करने के लिए चाहे जितने प्रयास किए जाएँ, वे इस भूल-भुलैया में नहीं उलझते। कृत्रिम प्रकाश या कृत्रिम अंधकार उत्पन्न करके उनकी अंतःचेतना को भुलावे में डालने के वैज्ञानिकों ने कितने ही प्रयोग किए, पर उनमें से एक भी सफल नहीं हुआ। इन कीड़ों ने अपने कार्यक्रम अपनी अभ्यस्त चेतना के आधार पर ही आरंभ किया और चतुरता के साथ रचे गए उस भुलावे में फँसने से इनकार कर दिया।

फ्रांस के वैज्ञानिकों ने इस संदर्भ में एक प्रयोग किया कि कुछ मधुमक्खियों को सवा आठ बजे शरबत का घोल चाटने के लिए दिया जाने लगा। कुछ दिनों तक यह क्रम चलने से मधुमक्खियाँ इसकी अभ्यस्त हो गईं। अब उस छत्ते को, जिसकी मधुमक्खियों को सवा आठ बजे शरबत का घोल दिया जाता था, हवाई जहाज से पेरिस भेज दिया गया। पेरिस में जब सवा आठ बजते हैं तो अमेरिका में रात के सवा तीन बजते हैं। साधारणतः मक्खियाँ उस समय विश्राम करती हैं, पर देखा गया कि रात के सवा तीन बजे उन मक्खियों के छत्ते में भिनभिनाहट शुरू हुई और वे पास में रखे शरबत के घोल पर टूट पड़ीं। तीन हजार मील की

दूरी मक्खियों के समय ज्ञान संबंधी चेतना को भुलावे में नहीं डाल सकी।

मधुमक्खियों को दिशा भुलाने का एक प्रयोग जर्मनी में किया गया। आरंभ में उन्हें नियत स्थान पर भोजन दिया जाता रहा। वे नित्य वहीं आहार पाने की अभ्यस्त हो गईं। अब उनका भोजन कुछ ही दूर पर विपरीत दिशा में रखा गया। मक्खियाँ नियत स्थान पर ही भूखी मंडराती रहीं और अन्य दिशा तलाश करने की जल्दी उन्होंने नहीं दिखाई।

समुद्र तट पर पाया जाने वाला एक विशेष प्रकार का केकड़ा दिन के उतार-चढ़ाव के साथ-साथ अपना रंग बदलता है। इन्हें पकड़ कर घोर अँधेरे में रखा गया ताकि उन पर सूर्य का प्रभाव न पड़े, तो भी उनका समय के हिसाब से रंग बदलना जारी रहा। इसके साथ-साथ उस केकड़े का रंग गहरा होने में कृष्ण पक्ष और शुक्ल पक्ष के हिसाब से ५० मिनट का अंतर आता रहता है। उस केकड़े को समुद्र से एक हजार मील दूर पहुँचाया गया और वायुयानों में अधिक ऊँचाई पर रखा गया ताकि समुद्री ज्वार-भाटे का उस पर असर न पड़े। तब भी उसकी प्रकृति नहीं बदली और अँधेरी-उजेली रातों में ५० मिनट के अंतर में जो रंग में गहरा हलकापन आया करता था, वह यथावत् जारी रहा। केकड़े के भीतर जैसे कोई घड़ी लगी हुई हो, जो बिना बाहरी परिवर्तन किये अपने ढंग और क्रम में चलती ही रही।

कई पक्षी तैरने और उड़ने में समान रूप से पारंगत होते हैं। कुछ के लिए रात भी दिन की तरह सुविधाजनक होती है। इंग्लैंड के पक्षियों में एक जाति ऐसी भी है जो लंबे पर्यटन पर चली जाती है, किंतु उनके बच्चे घोंसले में ही रह जाते हैं। वे जब बड़े होते हैं तो अपने अभिभावकों के रास्ते पर ही उड़ते हैं और वहाँ जा पहुँचते हैं जहाँ उनके जन्मदाता निवास कर रहे होते हैं। पर्यटक पक्षी जो झुंड बनाकर उड़ते हैं उनकी

यात्रा समय पर आरंभ होती है। इसी प्रकार उनके वापस लौटने का समय भी होता है।

जो पक्षी निश्चित समय पर सुदूर प्रदेशों की यात्रा पर निकलते हैं और निश्चित समय पर वापस आते हैं उनके संबंध में कई तरह के प्रयोग परीक्षण किए गए। डॉ० सवेरा ने इन परिव्राजक पक्षियों के पैरों में ऐसे छल्ले पहनाकर छोड़ा जिन पर उनके निवास आदि का वर्णन अंकित था। अन्य देशों के लिए चले जाने पर जब वे पकड़े गए, तो पता चला कि वे दो हजार से लेकर २५ हजार मील की यात्रा कर चुके हैं। वे अपना उड़न पथ ऐसा बनाते हैं, जिससे दुर्गम पर्वत से टकराना भी न पड़े और रास्ता भी सीधा बैठे। उनकी उड़ान २४ घंटे में २५० मील अर्थात् १० मील प्रति घंटा आँकी गई है। इसमें उनकी यात्रा के बीच विश्राम काल भी शामिल है।

प्रसिद्ध जंतु विज्ञानी डॉ० केनाफिग्न ने पक्षियों और छोटे जीव-जंतुओं के क्रिया-कलापों का लंबे समय तक अध्ययन करने के बाद जो विवरण प्रस्तुत किया है, वह निश्चित ही आश्चर्यजनक है, उनका कहना है कि मनुष्य घड़ी के सहारे समय और कंपास के सहारे दिशा का ज्ञान प्राप्त करता है। आकाश के सूर्य, चंद्र, तारे आदि भी दिशा का ज्ञान प्राप्त कराने में सहायक होते हैं। परंतु छोटे जंतुओं के पास इस प्रकार के कोई उपकरण नहीं होते, फिर भी वे अपनी आवश्यकता के अनुरूप दिशा और समय संबंधी ज्ञान अपनी अतींद्रिय चेतना के आधार पर प्राप्त करते हैं। इसे उन्होंने बायोलॉजिकल-क्लॉक कहा है, जो कि 'सरकेडियन रिदम' के आधार पर चलती है।

कैलीफोर्निया और ओरेगोन के निकट समुद्र तट पर पाई जाने वाली मछली बसंत ऋतु के शुक्ल पक्ष में ही अंडे देती है। सामौन द्वीप में पलोले का कीड़ा अक्टूबर, नवंबर की खास तारीखों को ही अंडे देता है। किसान खेती संबंधी सब काम छोड़कर उन

अंडों को साफ करने में लग जाते हैं और अपनी खेती की रक्षा करते हैं।

समुद्र में नियत तिथियों पर ज्वार-भाटे आते हैं और कुछ समय के अंतर से जल हमेशा ऊँचा-नीचा होता रहता है। लगता है समुद्र को भी घड़ी-घंटों और तिथियों की जानकारी किसी ने सिखा दी हो। कलियों और पुष्पों का रात में सिकुड़ना तथा दिन में फैलना, रात में कम और दिन में अधिक बढ़ना इस बात का प्रतीक है कि उन्हें समय का ज्ञान रहता है। पक्षियों का शाम होते ही घोंसले में लौटना और प्रभात होते ही उड़ जाना, प्रातः-सायं काल का चहचहाना बताता है कि मानो उन्होंने हाथ में घड़ी बाँध रखी हो। उड़ते हुए अमुक दिशा में जाना और लंबी उड़ान के बाद बिना भटके अपने घर घोंसले में आ जाना इस बात का प्रमाण है कि उनका दिशा ज्ञान असंदिग्ध होता है, जिसके आधार पर वे आकाश में भी अपना मार्ग निश्चित करते हैं। मनुष्य को समय ज्ञान के लिए घड़ी चाहिए और दिशा ज्ञान के लिए कंपास, पर इन पक्षियों की चेतना में ही मानो प्रकृति ने घड़ी और कंपास जैसी क्षमता सहज ही जोड़ दी हो।

इस संदर्भ में पक्षितीर्थ का उल्लेख करना अप्रासंगिक न होगा। महाबलिपुरम से मद्रास जाते समय कोई सात मील आगे एक छोटा सा नगर है—पक्षितीर्थम्। यहाँ पहाड़ी पर एक मंदिर स्थित है, जिसमें अनेक देवी-देवताओं की मूर्तियाँ हैं। मंदिर के पिछवाड़े लगभग १० फीट लंबी और १५ फीट चौड़ी ढलवाँ चट्टान है। इस पर ११-१२ बजे के बीच दो सफेद गिद्ध पक्षियों का जोड़ा नित्य ही मंदिर का प्रसाद ग्रहण करने आता है। प्रतिमा दर्शन से अधिक उत्सुकता दर्शकों को इन पक्षियों को देखने की होती है। इसलिए वे बड़ी संख्या में १० बजे तक इकट्ठा हो जाते हैं। दर्शकों की भारी भीड़ के बीच मंदिर का पुजारी दोनों हाथों में प्रसाद की दो कटोरियाँ लेकर खड़े हो जाते हैं। सफेद गिद्ध नियत समय पर निश्चित मुद्रा में आते हैं और चोंच में प्रसाद भर कर पुनः आकाश में उड़ जाते हैं।

इस तरह के अनेकों उदाहरण और प्रमाण हैं, जिनसे सिद्ध होता है कि काल और दिशा के संबंध में अन्य प्राणधारी अत्यंत अनुशासन प्रिय हैं। वे प्रकृति प्रेरणा की तनिक भी परवाह नहीं करते, फलस्वरूप उनकी जीवन प्रक्रिया सहज ढंग से चलती रहती है। यह मनुष्य ही है जिसने नियमित दिनचर्या की उपेक्षा करने की रीति-नीति अपना रखी है। उसका परिणाम अस्वस्थ होने, दुखी रहने, पीड़ा और व्यथा अनुभव करते रहने के रूप में वह सतत पाता रहता है। योगवासिष्ठ में ब्रह्मर्षि वशिष्ठ ने भगवान् श्री राम को समझाते हुए कहा है कि "हे श्री राम, मनुष्यमात्र से बढ़कर संपूर्ण विश्व में अधिक श्रेष्ठ और कुछ भी नहीं है।" इस कथन में किंचित् भी संदेह नहीं होना चाहिए। किंतु इस कथन का आशय गंभीर है, जिसे मनुष्य के मात्र बाह्य कायकलेवर से जोड़कर नहीं समझा जा सकता। मनुष्य भी एक जीव है, अन्य जीवधारियों की तरह। शास्त्राकारों ने प्राणिमात्र को 'पशु' शब्द से संबोधित किया है। पशु वह है जो अष्ट पाशों (बंधनों) से बँधा हुआ है। अज्ञान, अभाव, अशक्ति और विकारों के बंधन में बँधा हुआ मनुष्य भला कैसे सर्वश्रेष्ठ हो सकता है ?

वस्तुतः मनुष्य जन्म तो सहजता-सरलता से प्राप्त हो सकता है, किंतु मनुष्यता बड़ी कठिनता से प्राप्त होती है। शास्त्राकारों का कथन है कि "आहार, निद्रा, भय और मैथुन पशुओं तथा मनुष्यों में समान विशेषता वाली चीजें हैं—किंतु 'विवेक-धर्म' ही वह विभाजक रेखा है, जिसकी कमी से मनुष्य, मनुष्य न होकर पशु और मनुजाद कहलाता है।

मुद्रक : युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा